काव्य एवं व्याकरण

इकाई – 1 (कबीरदास एवं सूरदास)

बी.ए. सत्र – प्रथम

रजनी कुमारी
सहायक प्राध्यापक
राजकीय महाविद्यालय, बिलावर
मोबाइले नं. – 7889618428

काव्य

इकाई – 1 (कबीरदास एवं सूरदास)

कबीरदास

सप्रसंग व्याख्या

(साखी)

1. गुरू गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागूँ पायँ।
   बलिहारी गुरू आपने, जिन गोविन्द दियो बताय।।1।।

संदर्भ :– प्रस्तुत पंक्तियाँ काव्य सुमन में संकलित कबीर द्वारा रचित साखी में से ली गई हैं। जिसके संपादक महेन्द्र कुलश्रेष्ठ जी हैं। यह पुस्तक राजपाल प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित है।

प्रसंग :– प्रस्तुत प्रसंग गुरू की महत्ता से संबंधित है। जिसमें कबीरदास जी ने गोविन्द की तुलना में गुरू को सर्वोत्तम, सर्वोपरि एवं सर्वप्रमुख सिद्ध किया है।

व्याख्या :–प्रस्तुत साखी में कबीर जी कहते हैं कि मेरे सम्मुख गुरू और गोविन्द दोनों उपस्थित हैं। अर्थात् मुझे ज्ञान देने वाले और ईश्वर से अवगत कराने वाले गुरू और ईश्वर दोनों खडे हैं। अब मैं सर्वप्रथम किसके चरणों का स्पर्श करूँ? परन्तु अपने गुरू की महत्ता का ध्यान आते ही कबीर जी दुविधा मुक्त होकर अपने गुरू के चरणो ंपर बलिहारी जाते हैं। अर्थात् अपने गुरू की वंदना करते हुए उनके चरणों में शीश झुकाते हैं क्योंकि वह गुरू ही हैं जिन्होंने उन्हें ईश्वर को प्राप्त करने का मार्ग बताया है। अर्थात् उन्हें ज्ञान दिया।

विशेष :– i. भाषा सरल एवं सहज है।

ii. गुरू को गौरव प्रदान किया गया है।

iii. शांत रस की व्यंजना है।

2. सात समंद की मसि करौं, लेखनि सब बनराई।

धरती सब कागद करौं, तऊ हरि गुन लिख्या न जाइ।।2।।

प्रसंग :– प्रस्तुत प्रसंग में कबीर जी ने हरि अर्थात् अपने ईश्वर के गुणों का बखान करने का प्रयास किया है, जो कि असीम हैं।

व्याख्या :–प्रस्तुत साखी में कबीरदास जी कहते हैं कि यदि मैं सात समुद्रों के जल की स्याही करके उससे लेखनी अर्थात् कलम बना लूँ और पूरी धरती का कागज अर्थात लिखने योग्य पृष्ठ बना लूँ। तब भी हरि के गुणों को नहीं लिखा जा सकता। कहने का तात्पर्य यह है कि ईश्वर इतने गुणवान और व्यापक हैं कि उनके गुणों और व्यापकता को लिखकर बता पाना संभव नहीं है।

विशेष :– i. ईश्वर के गुणों की अनंतता का वर्णन।

ii. भाषा सरल एवं स्वाभाविक।

iii. माधुर्य गुण की प्रधानता।

3. पानी बाढ़े नाव में, घर में बाढ़े दाम।

दोनों हाथ उलीचिए, यहि सयानो काम।।3।।

प्रसंग :– प्रस्तुत साखी में कबीर जी ने समझदार व्यक्ति द्वारा सही निर्णय लेने की बात कही है।

व्याख्या :– कबीरदास जी कहते हैं कि जिस प्रकार कभी नदी में चलती हुई नाव में पानी भरने लगे तो डूबने का खतरा बढ़ने लगता है। उसी तरह यदि घर में प्रेम के स्थान पर दाम अर्थात मूल्य बढ़ने लगे। संबंध स्वार्थ और पैसे पर टिकने लगें तो ऐसी दोनों ही परिस्थितियों में समझदार व्यक्ति का यही काम है कि वह उसे जितना जल्दी हो सके बाहर निकालने का प्रयास करे। कहने का अर्थ यह है कि यदि नाव को डूबने से बचाना है तो उसमें से दोनों हाथों से पानी को बाहर निकालना होगा। उसी तरह यदि घर की बर्बादी से बचाना है तो मूल्य को घर से बाहर निकालना होगा।

विशेष :– i. धन और स्वार्थ पर टिके संबंधों का विरोध।

ii. समझदार व्यक्ति की पहचान।

iii. सरल भाषा का प्रयोग।

iv. संगीतात्मकता का गुण।

4. लघुता ते प्रभुता मिलै, प्रभुता ते प्रभु दूर।
चींटी शक्कर लै चली, हाथी के सिर धूर।।4।।

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियों में कबीर दास ने व्यक्ति को लघु अर्थात् विनम्र होकर रहने की प्रेरणा दी है। क्योंकि लघु रहकर ही व्यक्ति ऊँचाइयों को प्राप्त कर सकता है।

व्याख्या :– कबीरदास जी व्यक्ति को छोटा बने रहने की सलाह देते हुए कहते हैं कि विनम्रता से ही ईश्वर की प्राप्ति होती है अर्थात ज्ञान की प्राप्ति हो सकती है। लेकिन प्रभुता अर्थात बड़ापन दिखाने पर प्रभु व्यक्ति से कोसों दूर चले जाते हैं। ठीक उसी प्रकार जैसे चींटी छोटी होते हुए भी शक्कर उठाकर चलती है जबकि हाथी इतना बड़ा होते हुए भी अपने सिर पर धूल लेकर ही चलता है। अर्थात घंमडी व्यक्ति कभी ज्ञान को प्राप्त नहीं कर सकता।

विशेष :– i. व्यक्ति की लघुता का महत्व प्रतिपादित किया गया है।

ii. भाषा सरल एवं सहज।

iii. गेयता का गुण।

iv. माधुर्य गुण।

5. निदंक नियरे राखिये, आंगनि कुटी छवाय।

बिन साबुन पानी बिना, निरमल करै सुभाय।।5।।

प्रसंग :– प्रस्तुत प्रसंग निंदा करने वाले व्यक्ति के महत्व से संबंधित है। इस प्रसंग में स्पष्ट है कि निंदक के पास रहने के भी बहुत लाभ हैं।

व्याख्या :– कबीर जी कहते हैं कि निंदा करने वाले व्यक्ति को सदैव अपने समीप ही रखना चाहिए। यहाँ तक कि हो सके तो उस व्यक्ति को अपने आंगन में ही कुटिया (घर) बनाकर देनी चाहिए। क्योंकि ऐसा करने से आपके अवगुण बिना साबुन और पानी के अपने आप ही धुलते रहेंगे। अर्थात निंदा करने वाले व्यक्ति का सदैव आपके पास रहने से लाभ यह होगा कि वह बार–बार आपके अवगुणों को निंदा के रूप में बताता रहेगा जिससे आप अपनी कमियों को दूर कर सकेंगे और आपका स्वभाव बिना किसी प्रयास के स्वतः ही निर्मल होता रहेगा।

विशेष :– i. नवीन दृष्टिकोण का विकास।

ii. निंदक व्यक्ति की महता।

iii. भाषा सरल एवं सहज।

iv. गेयता का गुण।

6. कबीर यहु घर प्रेम का, खाला का घर नाहिं।

सीस उतारै भुईं धरै, सो पैठे घर माहिं ।।6।।

प्रसंग :– प्रस्तुत प्रसंग में कबीरदास ने प्रेम के लिए त्याग और सर्म्पण को अनिवार्य बताया है।

व्याख्या :– प्रस्तुत पद में कबीरदास जी कहते हैं कि यह प्रेम का घर है कोई मौसी का नहीं। अर्थात प्रेम करना सरल कार्य नहीं है। यह बहुत कठिन है, मौसी के घर के समान यहां कोई भी आसानी से आ जा नहीं सकता। प्रेम के घर में प्रवेश करने के लिए तो व्यक्ति को अपना शीश काटकर पृथ्वी पर रखना पड़ता है। अर्थात अपने अह्म को त्याग कर पूरी तरह से समर्पित होना पड़ता है तभी प्रेम किया जा सकता है या ईश्वर भक्ति की जा सकती है।

विशेष :– i. लौकिक प्रेम से अलौकिक प्रेम की व्यंजना।

ii. भावानुकूल भाषा का प्रयोग।

iii. प्रेम में समर्पण की महत्ता।

iv. गेयात्मकता।

7. पाणी केरा बुदबुदा, अस मानुस की जाति।

देखत ही छिपि जाइंगे, ज्यौं तारे परभाति ।।7।।

प्रसंग :– प्रस्तुत प्रसंग जीवन की क्षणभंगुरता, क्षणिकता से संबंधित है।

व्याख्या :– कबीर जी कहते हैं कि जिस प्रकार पानी का बुलबुला क्षणिक होता है उसी प्रकार हम मनुष्यों का जीवन भी क्षणभंगुर और अस्थायी है। आगे कबीर जी कहते हैं कि जिस प्रकार तारे प्रातःकाल होते ही छिप जाते हैं उसी प्रकार व्यक्ति का जीवन भी कुछ ही समय का है अर्थात जीवन क्षणभंगुर है और मृत्यु

निश्चित है। कबीर के कहने का तात्पर्य यह है कि इस निश्चित और क्षणिक जीवन में ही व्यक्ति को अच्छे कर्म कर लेने चाहिए।

विशेष :– i. जीवन की क्षणभंगुरता और नश्वरता का वर्णन।

ii. उपमा अलंकार का प्रयोग।

iii. भावानुकूल तथा सरल भाषा का प्रयोग।

iv. गेयता का गुण।

8. करता था तौ क्यूँ रह्य, हब करि क्यूँ पछताइ।

बोवै पेड़ बबूल का, अब कहाँ तैं खाई।।8।।

प्रसंग :– प्रस्तुत प्रसंग में व्यक्ति को बुरे कर्म त्याग कर अच्छे कर्म करने का उपेदश दिया है।

व्याख्या :– पस्तुत पंक्तियों में कबीरदास जी व्यंग्यात्मक भाषा का प्रयोग करते हुए समाज को चेताने का प्रयास किया हैं कि जब तू बुरे काम कर रहा था तो उन्हें क्यों करता ही रहा । समय रहते स्वयं को क्यों नहीं रोका। और अब जब तुमने ऐसा कर ही दिया तो पछताने का क्या लाभ। आगे कबीर जी अपनी बात को समझाने के लिए उदाहरण देते हुए कहते हैं कि जिस प्रकार बबूल का पेड़ लगाने पर आम के फल नहीं मिल पाते उसी प्रकार बुरे कर्मों का फल भी बुरा ही होता है।

विशेष :– i. व्यक्ति को बुरे कर्मों से सचेत करने का भाव।

ii. फटकारने का भाव व्यक्त हुआ है।

iii. भावानुकूल उदाहरण शैली।

iv. गेयात्मकता।

9. जब मैं था तब हरि नहिं, अब हरि हैं मैं नाँहि।

सब अँधियारा मिटि गया, जब दीपक देख्या माँहि।।9।।

प्रसंग :– प्रस्तुत प्रसंग हरि या सत्य की प्राप्ति के लिए अह्म को त्यागने से संबंधित है। भक्ति में अभिमान का कोई स्थान नहीं होता।

व्याख्या :– कबीर जी कहते हैं कि जब मुझ में मैं अर्थात स्वार्थ, अहंकार का भाव था तो मेरे समीप हरि नहीं थे यानि कि मैं हरि को प्राप्त नहीं कर पा रहा था और जब से मुझ में अह्म की समाप्ति हुई तो हर तरफ हरि हैं। अर्थात अंहकार और स्वार्थ जैसे भावों को अपने भीतर से मिटा देने से ही व्यक्ति हरि का मार्ग जान सकता है। जिस व्यक्ति में अह्म होता है ईश्वर उससे कोसों दूर रहते हैं। आगे कबीर जी कहते हैं कि ज्ञान रूपी दीपक को जलाकर देखने से उसकी रोशनी से मेरे अंतकरण का सारा अंधकार समाप्त हो गया है।

विशेष :– i. भक्ति के लिए सर्वप्रथम अंहकार की समाप्ति पर बल।

ii. प्रतीकात्मकता।

iii. गेयता का गुण।

iv. शांत रस।

10. जिन खोजा तिन पाइया, गहरे पानी पैठ।

मैं बपुरा बूड़न डरा, रहा किनारे बैठ।।10।।

प्रसंग :– प्रस्तुत प्रसंग में ईश्वर प्राप्ति के मार्ग पर प्रकाश डाला गया है। जिसके लिए समर्पण को अनिवार्य बताया गया है।

व्याख्या :– कबीरदास जी परम सत्य या ईश्वर प्राप्ति के लिए समाज का मार्गदर्शन करते हुए कहते हैं कि जिस प्रकार मोतियों की तलाश में लगे व्यक्ति को पानी में बहुत गहरे जाना पड़ता है उसी प्रकार ईश्वर भक्ति में लगे व्यक्ति को भी एकाग्रचित होकर पूरी तरह समर्पित होकर ईश्वर भक्ति में डूबना पड़ता है तभी वह सफल हो सकता है। आगे कबीर जी कहते हैं कि मैं मूर्ख और अज्ञानी डूबने के भय से किनारे पर ही बैठा रह गया। अर्थात जो व्यक्ति भक्ति में समर्पण भाव नहीं रखता वह ईश्वर प्राप्ति से वंचित ही रह जाता है।

विशेष :– i. भक्ति में समर्पण का महत्व प्रतिपादित किया गया है।

ii. गेयता का गुण।

iii. उपदेशात्मक शैली।

iv. सरल भाषा का प्रयोग।

11. ऐसी बानी बोलिये, मन का आपा खोय।
औरन को सीतल करै, आपहु सीतल होय।।11।।

प्रसंग :– प्रस्तुत प्रसंग व्यक्ति द्वारा मीठे वचन बोलने के महत्व से संबंधित है।

व्याख्या :– कबीरदास जी कहते हैं कि व्यक्ति को अपनी वाणी में मिठास रखते हुए इस प्रकार बात करनी चाहिए कि उसका स्वयं का मन भी प्रसन्न हो जाए और अन्य सुनने वालों को भी उन मधुर वचनों से सुख प्राप्त हो। कहने का भाव यह है कि मधुर वाणी से व्यक्ति के स्वयं के मन को तो शीतलता प्राप्त होती ही है साथ ही औरों को भी सुख की प्राप्ति होती है

विशेष :– i. मधुर वाणी का महत्व प्रतिपादित किया गया है।

ii. गेयता का गुण विद्यमान है।

iii. सरल, सहज एवं भावानुकूल भाषा।

12. साधु ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय।

सार–सार को गहि रहै, थोथा देई उड़ाय।।12।।

प्रसंग :– प्रस्तुत प्रसंग ज्ञानी या सज्जन व्यक्ति की अनिवार्यता से संबंधित है जो सदगुणों और अवगुणों को पहचानने में सक्षम होता है।

व्याख्या :– प्रस्तुत पंक्तियों में कबीरदास जी कहते हैं कि संत या सज्जन व्यक्ति अनाज साफ करने वाले सूप के समान होना चाहिए। जो कि अनाज को छोड़कर थोथे कूड़े को दूर उड़ा दे। कहने का अर्थ यह है कि सही अर्थों में साधु व्यक्ति वही है जो समाज में व्यक्तियों के गुणों और अवगुणों की पहचान करके उनके अवगुणों को सूप के समान दूर करने का प्रयास करे।

विशेष :– i. साधु व्यक्ति के स्वभाव की पहचान कराई गई है।

ii. उपदेशात्मक शैली।

iii. गेयात्मकता।

iv. भाषा सरल एवं भावनुकूल।

13. तेरा साईं तुज्झ में, ज्यों पुहुपन में बास।

कस्तूरी का मिरग ज्यों, फिर–फिर ढूंढै वास।।13।।

प्रसंग :– प्रस्तुत प्रसंग में कबीर जी ने ईश्वर को कहीं बाहर नहीं अपने भीतर ही ढूँढने पर बल दिया है।

व्याख्या :– कबीरदास जी कहते हैं कि जिस प्रकार फूलों में सुगंध स्वतः ही विद्यमान रहती है उसी प्रकार तुम्हारे ईश्वर भी तुम्हारे भीतर ही रहते हैं। उसे कहीं बाहर खोजने की आवश्यकता नहीं है। आगे कबीर जी

उदाहरण देते हुए कहते हैं कि जिस प्रकार कस्तूरी मृग अज्ञान के कारण पूरे वन में घूम–घूम कर कस्तूरी को ढूँढता फिरता है जबकि कस्तूरी उसकी नाभि में ही विद्यमान होती है उसी प्रकार अज्ञानी मनुष्य भी अज्ञान के चलते ईश्वर को अपने भीतर छोड़कर बाहर खोजता रहता है। अर्थात कर्मकाण्डों में फंसा रहता है, जो कि निरर्थक है।

विशेष :– i. ईश्वर की व्याप्ति का सत्य प्रकट किया गया है।

ii. बोलचाल की सहज भाषा का प्रयोग।

iii. माधुर्य गुण विद्यमान है।

iv. गेयात्मकता।

14. ऊँचे कुल क्या जनमितयाँ, जे करणी ऊँच न होइ।
सोवन कलस सुरे भर्या, साधू निंद्या सोइ।।14।।

प्रसंग :– प्रस्तुत प्रसंग में ऊँचे कुल में जन्म लेने की अपेक्षा ऊँचे कर्म करने वाले व्यक्ति को महत्व प्रदान किया गया है।

व्याख्या :– प्रस्तुत पंक्तियों में कबीर जी कहते हैं कि ऊँचे कुल या जाति में जनम लेने से कोई व्यक्ति महान नहीं बनता। उसकी महानता सिद्ध होती है ऊँचे कर्म करने से। अर्थात यदि कोई व्यक्ति ऊँचे कुल में पैदा होने से स्वयं को महान समझ लेता है तो यह उसकी मूर्खता है क्योंकि उसके द्वारा किए गए अच्छे कार्य ही उसे महान सिद्ध कर सकते हैं। कबीरदास उदाहरण देते हुए कहते हैं कि जिस प्रकार चाहे सोने का घड़ा ही क्यों न हो परन्तु उसमें मदिरा भर दी जाए तो कोई भी ज्ञानी या सज्जन व्यक्ति उसकी प्रशंसा नहीं निंदा ही करेगा। उसी प्रकार यदि कोई व्यक्ति ऊँचे कुल में जन्म लेने के बावजूद अच्छे कर्म नहीं करता तो वह निंदा योग्य ही है।

विशेष :– i. व्यक्ति की पहचान कुल या जाति के आधार पर नहीं कर्मों के आधार पर की गयी है।

ii. गेयता का गुण।

iii. उपदेशात्मक शैली।

iv. सरल एवं प्रवाहमय भाषा।

15. मनिषा जनम दुलभ है, देह न बारम्बार

तरवर थै फल झड़ि पड़्या, बहुरि न लागै डार।।15।।

प्रसंग :– प्रस्तुत प्रसंग में कम शब्दों में बड़ा संदेश देने का प्रयास किया गया है। यह प्रसंग मनुष्य जीवन की नश्वरता, महत्व और सार्थकता जैसे पहलुओं से संबंधित है।

व्याख्या :– कबीरदास जी कहते हैं कि मनुष्य का जनम प्राप्त होना बहुत दुर्लभ है। अर्थात् मनुष्य रूप में यह शरीर बार–बार नहीं मिलता। इसी कारण व्यक्ति को इसी जीवन में अच्छे कर्म करने चाहिए ताकि उसके जीवन की सार्थकता सिद्ध हो सके। व्यक्ति को इस जीवन का सम्मान करते हुए उसे सही अर्थ प्रदान करने का यत्न करना चाहिए। क्योंकि कबीर जी कहते हैं कि जिस प्रकार एक बार वृक्ष से गिरा हुआ फल पुनः वृक्ष की डाल से नहीं लग सकता उसी तरह मनुष्य का दुर्लभ जीवन भी बार–बार नहीं मिलता।

विशेष :– i. मनुष्य जीवन की सार्थकता और दुर्लभता पर विचार किया गया है।

ii. गीति शैली।

iii. भाषा सहज एवं सरल।

कबीरदास के साहित्य की विशेषताएँ

कबीरदास जी निर्गुण भक्ति धारा के सन्त कवि हैं। वह मस्तमौला स्वभाव के फक्कड़ फकीर माने जाते हैं। कबीर जनम से ही निर्भीक, विद्रोही, परम संतोषी और क्रांतिकारी समाज सुधारक थे। उन्हें न तो तत्कालीन शासकों का कोई भय था और न ही विभिन्न धर्म संप्रदायों का। कबीर निरक्षर थे। स्वयं उन्होंने स्वीकार किया है

"मसि कागद छूयौ नहीं कलम गह्यौ नहिं हाथ।"

कबीर की रचनाओं का संकलन 'बीजक' नाम से उनके शिष्य धर्मदास ने किया है। जिसके तीन भाग हैं साखी, सबद, रमैनी।

कबीर के साहित्य की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं :–

(क) भाव पक्ष

1. **निर्गुण ईश्वर में विश्वास** :– कबीर भक्तिकाल की निर्गुण धारा के अन्तर्गत आते हैं। इनका मानना है कि ईश्वर या ब्रह्म निराकार है और सृष्टि के कण–कण में व्याप्त हैं उन्हें कहीं बाहर ढूंढने की आवश्यकता नहीं है। जिस प्रकार पुष्पों में सुगंधि और मृग की नाभि में कस्तूरी छिपी रहती है वैसे ही राम भीतर ही हैं —

कस्तूरी कुण्डलि बसै, मृग ढूंढे वन माहिं।
ऐंसै घट–घट राम है, दुनियां देखे नाहिं।।

2. **गुरू का महत्व** :– कबीर जी ने गुरू को ईश्वर से भी बढ़कर स्थान प्रदान किया। क्योकि गुरू के ज्ञान और कृपा से ही व्यक्ति ईश्वर प्राप्ति का मार्ग जान पाता है —

गुरू गोविंद दोऊ खड़े, काकै लागूं पाय।

बलिहारी गुरू आपने, जिन गोविंद दियो बताय।।

3. **अंधविश्वासों एवं सामाजिक आडम्बरों का विरोध** :– कबीर भक्त और कवि बाद में थे, समाज सुधारक पहले थे। उनके काव्य में अनुभूति की सच्चाई एवं अभिव्यक्ति का खरापन है। समाज में व्याप्त रूढ़ियों, अंधविश्वासों, पाखण्ड का उन्होंने खण्डन किया। हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों को फटकारते हुए कहा —

अरे इन दोउन राह न पाई।

हिन्दू अपनी करै बढ़ाई गागर छुअन न देई।

वेश्या के पांयन तर सोवैं यह देखौ हिन्दुआई।।

मुसलमान के पीर औलिया मुर्गी–मुर्गा खाई।

खालाकेरी बेटी ब्याहै घर ही में करै सगाई।।

कबीर जी ने मूर्ति पूजा, माला, तिलक, छापा, तीर्थाटन, गंगास्नान, रोजा, हिंसा, आदि का खण्डन किया। यथा —

1. पाहन पूजै हरि मिलै तौ मैं पूजूं पहार।

   घर की चाकी क्यो नहिं पूजै पीसि खाय संसार।।

2. माला फेरत जुग गया गया न मन का फेर।

   कर का मनका डारि के मन का मनका फेर।।

4. **जाति–पाति का विरोध** :– कबीरदास जी समाज में फैले ऊँच–नीच और जाति–प्रथा के प्रबल विरोधी थे। उनका मानना था कि व्यक्ति ऊँची जाति या कुल में जन्म लेने से नहीं बल्कि अच्छे कर्म करने से महान बनता है —

1. ऊँचे कुल क्या जनमिया जे करनी ऊँच न होय।

   सुबरन कलश सुरा भरा साधू निन्दत सोय।।

2. जाति पांति पूछे नाहिं कोई ,

   हरि को भजे सो हरि का होई।

5. **गुरू की महिमा** :– कबीर ने गुरू की महिमा का पाठ नाथ पंथियों से सीखा है –

   सतगुरू की महिमा अनत अनत किया उपगार।

   लोचन अनत उघाड़िया अनत दिखावणहार।।

कबीर के काव्य में हठयोग साधना एवं कुण्डलिनी योग का जो विवरण मिलता है उसका संबंध भी नाथपंथ से है।

6. **रहस्यवाद** :– आलौकिक प्रेम की अभिव्यंजना को ही साहित्य में रहस्यवाद की संज्ञा दी जाती है। कबीर का रहस्यवाद भावात्मक कोटि का है। जहां जीवात्मा उस निर्गुण परमात्मा से से भावात्मक संबंध जोड़ती हुई विरह, मिलन, जिज्ञासा की अनुभूति करती है। कबीर ने जीवात्मा को प्रेयसी एवं परमात्मा को प्रियतम के रूप में चित्रित करते हुए उनके विरह एवं मिलन के चित्र प्रस्तुत किए हैं :–

   कै विरहिन कूं मीचु दै कै आपा दिखलाय।

   रात दिना का दाझणा मो पै सह्या न जाय।।

कुण्डलिनी साधना वाले उनके पदों में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने साधनात्मक रहस्यवाद माना है। उदाहरण के लिए –

   अवधू गगन मण्डल घर कीजै।

   अमृत झरै सदा सुख उपजै बंकनालि रस पीजै।।

7. **माया का स्वरूप** :– कबीर जी ने जीव को ब्रह्म का अंश माना है जो माया के कारण अपने स्वरूप को भूला हुआ है क्योंकि माया महाठगिनी है। जिससे सावधान रहने की आवश्यकता है। माया के नष्ट होते ही जीवात्मा एवं परमात्मा का मिलन हो जाता है –

जल में कुम्भ कुम्भ में जल है बाहर भीतर पानी।

फूटा कुम्भ जल जलहि समाना यह तत कथेहु गियानी।।

8. **नारी के प्रति दृष्टिकोण** :– कबीर ने नारी को माया का प्रतीक मानते हुए कहा –

नारी की झाई परत अन्धा होत भुजंग।

कबिरा तिनकी कौन गति नित नारी के संग।।

जहाँ एक ओर कबीर ने नारी की निंदा की है, तो दूसरी ओर पतिव्रता की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा भी की –

पतिव्रता मैली भली, काली कुचित कुरूप।

पतिव्रता के रूप पर वारों कोटि सरूप।।

9. **बहुदेववाद का विरोध** :– कबीर एकेश्वरवादी हैं, किन्तु उनका एकेश्वरवाद मुस्लिम एकेश्वरवाद से पूरी तरह भिन्न है। कबीर के अनुसार ब्रह्म अगोचर और वर्णनातीत है। सम्पूर्ण संसार इसमें रमा है और ब्रह्म स्वयं सम्पूर्ण संसार में हैं। उसे कहीं खोजने की आवश्यकता नहीं –

'हिरदै सरोवर है अविनासी।'

10. **नाम स्मरण** :– कबीर का मानना है कि ईश्वर के नाम का स्मरण दिखावे के लिए चिल्ला–चिल्ला कर करने से काई लाभ नहीं। उसे मन में ही करना चाहिए क्योंकि इस विषय में उनका कहना है कि –

पोथी पढ़ि–पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।

ढाई आखर प्रेम के, पढ़ै सो पंडित होय।।

(ख) कला पक्ष

1. **प्रतीकों का प्रयोग** :– कबीर के काव्य में प्रतीकों का भरपूर प्रयोग हुआ है। उनकी उलटबसियों में प्रतीकों को देखा जा सकता है —

समुन्दर लागी आग नदियां जलि कोइला भई।
देख कबीरा जाग मंछी रुखा चढ़ि गई।।

यहां समुद्र मूलाधार चक्र का प्रतीक है, नदियां चित्तवृतियों का प्रतीक हैं तथा मछली कुण्डलिनी के लिए प्रयुक्त है। एक अन्य उदाहरण देखिए —

काहे री नलिनी तू कुम्हिलानी।
तेरे ही नाल सरोवर पानी।।
जल में उत्पति जल में बास
जल में नलिनी तोर निवास।

इसमें 'नलिनी' जीवात्मा का तथा 'जल' परमात्मा का प्रतीक है।

2. **अलंकारों का प्रयोग** :– कबीर के काव्य में रूपक, उपमा, अतिशयोक्ति तथा अन्योक्ति आदि अलंकार प्रचुरता में प्रयोग हुए हैं। वस्तुतः काव्य रचना कबीर का लक्ष्य नहीं था। कविता तो उनके लिए मात्र साधन थी, जनता तक अपनी बात पँहुचाने का।

3. **भाषा** :– आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार कबीर की भाषा 'सधुक्कड़ी' अथवा 'पंचमेल खिचड़ी' है। उसे पंचमेल कहने का अर्थ यह है कि उनकी भाषा कई भाषाओं के मेल से बनी है। कबीर को अभिव्यक्ति के लिए भाषा का संकट नहीं झेलना पड़ा। उनका भाषा पर इतना अधिकार था कि वह स्वयं ही उनकी अनुगामिनी बनी रही। इसी कारण आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने उन्हें 'वाणी का डिक्टेटर' कहा है।

निष्कर्ष कबीर की साहित्यिक विशेषताओं पर दृष्टिपात करने के उपरान्त स्पष्ट हो जाता है कि भले ही कबीरदास ने आज से बहुत वर्ष पूर्व काव्य रचना की हो परन्तु आज भी उनकी शिक्षाएँ उतनी ही प्रासंगिक हैं।

सूरदास

सप्रसंग व्याख्या

(विनय तथा भक्ति)

1. चरन–कमल बंदौ हरि–राई।

जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै, अँधे को सब कछु दरसाई।

बहिरा सुनै, मूक पुनि बोलै, रंक चलै सिर छत्र धराइ।

सूरदास स्वामी करुनामय बार–बार बदौ तोहि पाइ।।

संदर्भ :– प्रस्तुत पंक्तियाँ पाठ्य–पुस्तक काव्य सुमन में संकलित सूरदास रचित 'विनय तथा भक्ति' खण्ड में से ली गई हैं। इस पुस्तक के संपादक महेन्द्र कुलश्रेष्ठ जी हैं। जिसका प्रकाशन 'राजपाल प्रकाशन, नई दिल्ली' से हुआ है।

प्रसंग :– प्रस्तुत प्रसंग सूरदास जी के प्रभु श्री कृष्ण की भक्ति से संबंधित है। जो बहुत ही कृपालु और अपने भक्तों के सभी प्रकार के दुखों का निवारण करने वाले हैं।

व्याख्या :– सूरदास जी कहते हैं कि उस प्रभु के कमल रूपी चरणों की वंदना करो जिसकी कृपा होने पर लंगड़ा व्यक्ति भी बड़े–बड़े पर्वतों को लांघ जाता है और आँखों में रोशनी न होने पर भी अंधे को सब कुछ दिखाई देने लगता है। यहाँ तक कि उसकी कृपा से बहरा व्यक्ति सब कुछ सुनने लगता है और मूक व्यक्ति पुनः बोलने लगता है। रंक अर्थात कंगाल अपने सिर पर राज–छत्र धारण कर लेता है। सूरदास जी कहते हैं कि ऐसे करुणा बरसाने वाले ईश्वर के चरणों की बार–बार वंदना करो। कहने का भाव यह है कि जिस पर भी श्रीहरि की कृपा हो जाती है उसके लिए असंभव भी संभव हो जाता है।

विशेष :– i. प्रभु की अनन्य कृपा का वर्णन।

ii. रूपक तथा अतिश्योक्ति अलंकार का प्रयोग।

iii. सरल एवं सहज भाषा का प्रयोग।

iv. शांत रस।

2. अब कैं राखि लेहु भगवान।

हौं अनाथ बैठ्यो द्रुम–डरिया, पारधि साधे बान।

ताकै डर मैं भाज्यौ चाहत, ऊपर ढुक्यौ सचान।

दुहुँ भाँति दुख भयो आनि यह, कौन उबारै प्रान?

सुमितरत ही अहि डरयौ पारधी, कर छूट्यो संधान।

सूरदास सर लग्यो सचानहिं, जय जय कृपानिधान।।

प्रसंग :– प्रस्तुत प्रसंग में प्रभु की असीम कृपा का वर्णन हुआ है।

व्याख्या :– सूरदास जी कहते हैं कि हे प्रभु अब की बार मेरी रक्षा करो। मैं अनाथ हूँ मेरा अपना कोई नहीं है। सभी मेरे शत्रु बने बैठे हैं और मैं इस समय एक वृक्ष की डाल पर बैठे हुए पक्षी के समान हूँ जिस पर शिकारी बान साधे हुए है। यदि मैं उनके भय से भगना चाहता हूँ तो आसमान में घूमने वाले बाज़ मुझ पर आँखें गड़ाए हुए हैं अर्थात मेरा शिकार करने को आतुर हैं। इस प्रकार दोनों तरफ से दुख ही हैं अर्थात एक ओर शिकारी है तू दूसरी ओर बाज़। यहाँ शिकारी और बाज़ सामाजिक बुराइयों या बुरी ताकतों का प्रतीक हैं। जिनसे केवल प्रभु ही प्राणों की रक्षा कर सकता है। सूरदास जी कहते हैं कि जैसे ही मैं प्रभु का नाम स्मरण करता हूँ तो शिकारी भयभीत हो जाता है और उसके हाथों से साधा हुआ निशाना छूट जाता है और सीधे बाज़ को लगता है। जिससे दोनों ही मुश्किल स्थितियों से भक्त के प्राणों की रक्षा हो जाती है। सूरदास जी कहते हैं कि अपने भक्त पर इस प्रकार कृपा करने वाले दयालु ईश्वर की जय हो।

विशेष :– i. ईश्वर की असीम दयालुता का वर्णन।

ii. गीति शैली का प्रयोग।

iii. दैन्य भाव की भक्ति।

iv. शांत रस।

v. भावानुकूल ब्रज भाषा का प्रयोग।

3. प्रभु मेरे औगुन चित न धरो।

समदरसी प्रभु नाम तिहारो अपने पनहि करो।

इक लोहा पूजा में राखत, इक घर बधिक परो।

यह दुविधा पारस नहिं जानत, कंचन करत खरो।

इक नदिया इक नार कहावत, मैलो नीर भरो।

जब मिलकै एक बरन भये सुरसरि नाम परो।

एक जीव इक ब्रह्म कहावत, सूर–स्माम झगरो।

अव की बेर मोहि पार उत्तारो, नहिं पन जात टरो।।

प्रसंग :– प्रस्तुत प्रसंग में अपने भक्त के अच्छे–बुरे, अमीर–गरीब, ऊँच–नीच होने के भेद को भुलाकर ईश्वर से समदृष्टि रखने की कामना की गई है।

व्याख्या :– सूरदास जी कहते हैं कि हे प्रभु मेरे अवगुणों को अपने ध्यान में मत लाओ। अर्थात मुझमें बहुत सारे अवगुण हैं परन्तु तुम उन्हें अपने मन में स्थान मत दो या भूल जाओ। क्योंकि तुम ईश्वर हो और सभी को समान दृष्टि से देखते हो इसलिए मुझे अपने चरणों में स्थान दो। जिस प्रकार एक लोहा पूजा में रखा जाता है और एक कसाई के घर में पड़ा रहता है। परन्तु पारस इस दुविधा में नहीं पड़ता कि कौन सा लोहा पूजा के स्थान का है और कौन सा कसाई के घर का। वह दोनों को छूकर सोना बना देता है। उसी

प्रकार एक नदी कहलाती है जिसमें स्वच्छ जल बहता है तो एक नाला कहलाता है जो मैले जल से भरा रहता है। परन्तु जब दोनों मिलकर एक साथ बहने लगते हैं तो उसका नाम गंगा पड़ जाता है, दोनों में कोई भेद नहीं रह जाता। आगे कवि कहते हैं कि एक जीव अर्थात साधारण मानव कहलाता है तो एक ब्रह्म अर्थात ईश्वर। जिस प्रकार सूरदास और श्री कृष्ण हैं। इसलिए हे प्रभु इस बार मुझ पर कृपा करो, मेरा उद्धार करो। तुम तो पतितों का उद्धार करने वाले हो, अपनी इस प्रतिज्ञा से टलो मत।

विशेष :– i. विभिन्न उदाहरणों से तर्कपूर्ण ढंग से ईश्वर से प्रार्थना की गई है।

ii. माधुर्य गुण।

iii. शांत रस।

iv. भावानुकूल सहज भाषा का प्रयोग।

(बाल लीला)

1. जसोदा हरि पालनैं झुलावै।

हलरावै, दुलराइ मल्हावै, जोइ–सोइ कछु गावै।

मेरे लाल कौं आउ निंदरिया, काहैं न आनि सुवावै।

तू काहैं नहिं बेगिहिं आवै, तोकौ कान्ह बुलावै।

कबहुं पलक हरि मूंद लेत हैं, कबुहुं अधर फरकावै।

सोवत जानि मौन ह्वै कै रहि, करि–करि सेन बतावै।

इहिं अन्तर अकुलाइ उठे हरि, जसुमति मधुरै गावै।

जो सुख सूर अमर–मुनि दुरलभ, सो नन्द भागिनी पावै।।

संदर्भ :– प्रस्तुत पंक्तियाँ पाठ्य–पुस्तक 'काव्य सुमन' में संकलित सूरदास रचित 'बाल लीला' में से ली गई हैं। इस पुस्तक के संपादक महेन्द्र कुलश्रेष्ठ जी हैं जिसका प्रकाशन 'राजपाल प्रकाशन नई दिल्ली' से हुआ है।

प्रसंग :– प्रस्तुत प्रसंग श्री कृष्ण की बाल चेष्टाओं से संबंधित है, जिसमें माता यशोदा बालक कृष्ण को सुलाने का तरह–तरह से यत्न करती है।

व्याख्या :– सूरदास जी कहते हैं कि माता यशोदा श्री कृष्ण को पालने में सुलाने के लिए झुला रही है। कभी वह उसे हिलाती है तो कभी दुलारती और पुचकारती हुई जो कुछ भी उसके मन में आ रहा है उसे गा रही है। अर्थात बालक कृष्ण को सुलाने का हर सम्भव प्रयास कर रही है। वह गाते हुए नींद को संबोधित करते हुए कह रही है कि मेरे लाल को नींद आ जाए। हे निंदिया तू आकर क्यों उसे सुला नहीं जाती। आगे वह कहती है कि अरी नींद तू क्यों नहीं वेग की तरह नींद का झोंका बनकर जल्दी से आ जाती, तुझे कान्हा श्री कृष्ण बुला रहा है। और श्री कृष्ण भी बालक की स्वाभाविक क्रियाएँ करते हुए कभी तो अपनी पलकें मूंद लेते हैं तो कभी होठों को हिलाने लगते हैं। माता यशोदा श्री कृष्ण को सोता हुआ समझकर मौन हो जाती है और आस–पास सभी को चुप रहने का इशारा करती है ताकि बालक की नींद न उचट जाए। परन्तु इतने में श्री कृष्ण पुनः अकुला कर उठ जाते हैं और यशोदा माँ फिर से मधुर गायन करने लगती है। सूरदास जी कहते हैं कि श्री कृष्ण की ऐसी लीलाएँ हैं जिनके सुख से तो अमर मुनि भी इतनी तपस्या के उपरान्त भी वंचित रह जाते हैं अर्थात उनके लिए भी ऐसा सुख प्राप्त करना दुर्लभ है। वह सुख श्री कृष्ण की माता यशोदा को प्राप्त हुआ है।

विशेष :– i. श्री कृष्ण की सहज स्वाभाविक बाल लीला का वर्णन।

ii. भगवान कृष्ण को सामान्य मानवीय बालक की तरह क्रियाएं करते हुए दिखाना सूरदास की मौलिकता है।

iii. साहित्यिक ब्रज भाषा का प्रयोग।

iv. वात्सल्य रस।

v. संगीतात्मकता के गुण।

2. मैया कवहिं बढ़ैगी चोटी।

किती बार मोहि दूध पिवत भई, यह अजहुं है छोटी।

तू जो कहति बल की बेनी, ज्यों है लांबी मोटी।

काढ़त गुहत न्हवावत ओंछति, नागिन–सी भुईं लोटी।

काचो दूध पियावत पचि पचि, देत न माखन रोटी।

सूर स्याम चिरजीव दोउ भैया, हरि–हलधर की जोटी।।

प्रसंग :– प्रस्तुत प्रसंग बालक श्री कृष्ण की बाल क्रियाओं से संबंधित है। इसमें कृष्ण ने अपनी चोटी बढ़ाने को लेकर माता यशोदा के समक्ष जिज्ञासाएँ प्रकट की हैं।

व्याख्या :– प्रस्तुत पद में सूरदास जी कहते हैं कि बालक श्री कृष्ण अपनी माता से प्रश्न करते हुए कहते हैं कि मेरी यह चोटी कब बढ़ी होगी? तुमने मुझे कितनी ही बार दूध पिला दिया है परन्तु यह चोटी तो अब भी छोटी ही है। अर्थात तुम्हारे कहेनुसार यह अभी तक क्यों नहीं बढ़ी हुई। आगे श्री कृष्ण कहते हैं कि तुम तो कहती थी कि जितनी बलराम भैया की लंबी और मोटी चोटी है वैसी ही मेरी भी हो जाएगी। तुम इसे बार–बार धोती हो, कंघी करती हो, काढ़ती हो, गूंथती हो। अब तक तो यह नागिन की तरह भूमि पर लोटने लगनी थी अर्थात भूमि तक लंबी हो जानी चाहिए थी परन्तु अभी यह उतनी ही है। माता इसके लिए तुमने मुझे कच्चा दूध पचा–पचा कर पिलाया है और माखन और रोटी भी नहीं खाने दी। फिर भी यह चोटी क्यों नहीं बढ़ रही है। श्री कृष्ण के भक्त सूरदास जी कहते हैं कि दोनों भाई श्री कृष्ण और बलराम चिरंजीव होए और उन दोनों की जोड़ी सदा बनी रहे।

विशेष :– i. श्री कृष्ण की बाल जिज्ञासाओं का मनोवैज्ञानिक वर्णन हुआ है।

ii. वात्सल्य रस।

iii. माधुर्य गुण।

iv. ब्रज भाषा का प्रयोग।

3. मैया मोहि दाऊ बहुत खिझायो।

मोसों कहत मोल को लीनो, तू जसुमति कब जायो।

कहा कहौं यहि रिस के मारे, खेलन हौं नहि जातु।

पुनि–पुनि कहत कौन है माता, को है तुम्हारो तातु।

गोरे नन्द जसोदा गोरी, तुम कत स्याम सरीर।

चुटकी दै–दै हँसत बाल सब, सिखै देत बलवीर।

तू मोही को मारन सीखी, दाऊहि कबहू न खीझै।

मोहन को मुख रिससमेत लखि, जसुमति सुनि–सुनि रीझै।।

प्रसंग :– प्रस्तुत प्रसंग श्री कृष्ण की बाल लीलाओं से संबंधित है। जिसमें श्री कृष्ण माता यशोदा से बड़े भाई बलराम की शिकायत करते हैं क्योंकि बलराम उसे बाल विनोदस्वरूप बार–बार चिढ़ाते रहते हैं।

व्याख्या :– सूरदास जी कहते हैं कि श्री कृष्ण अपनी माता से शिकायत करते हुए कहते हैं कि हे मेरी माता बलराम भैया मुझे बहुत चिढ़ाते रहते हैं। वह मुझसे कहते हैं कि तुझे खरीद कर लिया गया है। तूने कब, यशोदा के पेट से जन्म लिया? इसलिए सभी ग्वाल–बाल मेरा मजाक उड़ाते हैं। इसी लज्जा के मारे मैं खेलने भी नहीं जाता हूँ। बार–बार सभी मुझे यह पूछ–पूछ कर तंग करते रहते हैं कि तुम्हारी माता कौन है और पिता कौन हैं। क्योंकि नन्द और यशोदा दोनों गोरे हैं और तुम तो काले हो। ऐस कहकर सभी ग्वाल–बालक चुटकी बजा–बजाकर मुझे तंग करते हैं, मेरी हंसी उड़ाते हैं। हे माता तुम भी मुझे ही मारना

सीखी हो, दाऊ भैया को कभी भी नहीं डांटती हो। सूरदास जी कहते हैं कि यशोदा माँ मोहन के मुख से ऐसी क्रोधपूर्ण प्यारी–प्यारी बातें सुनकर सुख का अनुभव करती हैं और उस से प्रेम करने लगती है, उस पर रीझ जाती है।

विशेष :– i. बालक श्री कृष्ण की बाल सुलभ क्रीड़ाओं का संजीव और मनमोहक वर्णन।

ii. वात्सल्य रस।

iii. श्री कृष्ण के बालपन का सहज स्वाभाविक वर्णन।

iv. ब्रज भाषा का प्रयोग।

(भ्रमरगीत)

1. ऊधो! मन नाहीं दस बीस।
एक हुतो सो गयो श्याम सँग, को आराधै ईस?
भइँ अति सिथिल सवै माधव बिनु जथा देह बिनु सीस।
स्वासा अटकि रहे आसा लगि, जीवहिं कोटि बरीस।
तुम तौ सखा स्यामसुंदर के सकल जोग के ईस।
सूरदास रसिक की बतियाँ पुरबो मन जगदीस।।

प्रसंग :– प्रस्तुत प्रसंग श्री कृष्ण के प्रति गोपियों के अनन्य प्रेम से संबंधित है। गोपियाँ ऊधव से तर्क–वितर्क कर योग के स्थान पर प्रेम के महत्व को प्रतिपादित करती हैं।

व्याख्या :– प्रस्तुत पंक्तियों में जब ऊधव गोपियों के लिए योग ज्ञान का संदेश लेकर उन्हें समझाने के लिए गोकुल पँहुचते हैं तो गोपियाँ तर्क करते हुए उससे कहती हैं हे ऊधव हमारे पास दस–बीस मन नहीं है कि हम अब योग भक्ति में भी उसे लगा पाए। हमारे पास तो एक ही मन था जो श्याम के प्रेम में रंगकर श्याम

के साथ ही मथुरा चला गया है। अब हम और किस ईश्वर की पूजा आराधना करें? हम तो पहले ही श्री कृष्ण के बिना बहुत ही कमज़ोर और निरर्थक हो चुकी हैं, जिस प्रकार देह के बिना सिर हो। हे ऊधव हमारी तो सांसे ही इसलिए बची पड़ी हैं क्योंकि उन्हें आशा है श्री कृष्ण के दर्शन की। और ये ऐसे ही श्री कृष्ण के दर्शन की आस में करोड़ों वर्षों तक जीवित रह सकती हैं। अर्थात हमें पूरा विश्वास है कि श्री कृष्ण मिलने आँएगे, उनसे मिले बिना मरना भी संभंव नहीं है। गोपियाँ आगे कहती हैं कि हे ऊधव तुम तो श्यामसुंदर के सखा हो, मित्र हो, सर्वज्ञानी हो और योग ज्ञान के ज्ञाता हो। सूरदास जी कहते हैं कि गोपियों की ऐसी बातें सुनकर ऊधव को यह ज्ञात हो गया कि इनके मन में पूरी तरह केवल श्री कृष्ण ही बसे हैं।

विशेष :– i. निर्गुण योग भक्ति के स्थान पर सगुण प्रेम भक्ति का महत्व दृष्टव्य है।

ii. तर्कों के आधार पर गापियों का वाक चातुर्य।

iii. शृंगार रस का परिपाक है।

iv. गीति शैली।

v. साहित्यिक ब्रजभाषा का प्रयोग।

2. ऊधौ अंखियाँ अति अनुरागी।

इकटक मग जोवतिं अरु रोवति, भूलेहूँ पलक न लागी।

बिनु पावस पावस करि राखी, देखत हो बिदमान।

अब धौं कहा कियौ चाहत हौ, छाँड़ो निरगुन ज्ञान।

तुम हो सखा श्याम सुंदर के, जानत सकल सुभाई।

जैसे मिलैं सूर के स्वामी, सोई करहु उपाइ।।

प्रसंग :– प्रस्तुत प्रसंग श्री कृष्ण प्रेम में डूबी गोपियों की कारुणिक दशा से संबंधित है। योग भक्ति का ज्ञान देने आए ऊधव को गोपियाँ अपनी इस दशा से अवगत करवाती है।

व्याख्या :– सूरदास जी कहते हैं कि गोपियाँ ऊधव से कहती हैं कि हे ऊधव हमारी यह आँखें अब केवल श्री कृष्ण के दर्शन की भूखी है। अब ये केवल उसी से प्रेम करती हैं। अब यह आँखें एकटक उसी मार्ग की ओर देखती रहती हैं जिस मार्ग से श्री कृष्ण मथुरा गए थे और उसे याद करके हर पल रोती रहती हैं। यह आँखें अब भूल से भी पलक तक नहीं झपकातीं। क्योंकि इन्हें लगता है कि कहीं श्री कृष्ण आकर चले न जाएं और यह उसे देखने से वंचित न रह जाएँ। यह आँखे इतना रोती रहती हैं कि बिना वर्षा ऋतु के इन पर वर्षा ऋतु छाई रहती है। हे विद्वान ऊधव देख रहे हो न तुम कैसी हालत हो गई है इन आँखों की। अब श्री कृष्ण को छोड़ कर यह किसी और की चाहत कैसे कर सकती हैं इसलिए तुम जो निर्गुण ज्ञान की रट लगाए हो उसे छोड़ दो। क्योंकि अब वह हमारे बस की बात नहीं है। हे ऊधव तुम तो श्री कृष्ण के मित्र हो, सब कुछ जानते हो। फिर तुम कोई ऐसा उपाय करो जिससे हमें सूरदास के प्रभु श्री कृष्ण मिल जाएं।

विशेष :– i. श्री कृष्ण अनुराग में डूबी आँखों का कारुणिक चित्रण।

ii. विप्रलम्भ शृंगार या वियोग शृंगार वर्णन।

iii. संगीतात्मकता का गुण।

iv. भावानुकूल ब्रज भाषा का प्रयोग।

3. निसिदिन बरसत नैन हमारे।

सदा रहत पावस ऋतु हम पर, जब तें स्याम सिधारे।

अंजन थिर न रहत अंखियन में, कर कपोल भये कारे।

कंचुकि पट सूखत नहिं कबहूं, उर बिच बहत पनारे।

आंसू सलिल भये पग थाके, बहे जात सित तारे।

सूरदास अब डूबत है ब्रज, काहे न लेत उबारे।

प्रसंग :– प्रस्तुत प्रसंग श्री कृष्ण के मथुरा चले जाने पर गोकुल में उसके विरह में डूबी गोपियों की दशा से संबंधित है। वह ऊधव को अपनी व्यथा सुनाने का प्रयास करती हैं।

व्याख्या :– सूरदास जी कहते हैं कि गोपियाँ ऊधव को अपनी व्यथा सुनाती हुई कहती है कि हे ऊधव श्री कृष्ण के वियोग में दिन–रात हमारी आँखों से निरन्तर आँसू बहते रहते हैं। जब से श्री कृष्ण हमें छोड़कर मथुरा चले गए हैं तब से हमेशा हम पर वर्षा ऋतु छाई रहती है अर्थात तब से हमारी आँखों से वर्षा की तरह अश्रुधारा बहती रहती है। हमारी आँखों से इतने आँसू बहते हैं कि आँखों में काजल भी स्थिर नहीं रहता। जब भी हम आँखों में अंजन लगाती हैं वह भी आँसुओं की धारा में बह जाता है जिससे हमारे हाथ और कपोल (गाल) भी काले हो चुके हैं। इन आँसुओं के ही कारण हमारी चोली का वस्त्र तो कभी सूखता ही नहीं है। ह्रदय के बीच से आँसुओं के परनाले बहते रहते हैं। अब तो पूरा शरीर ही अश्रु धारा बन चुका है जिसके भार से चला भी नहीं जाता, कदम थक जाते हैं। सूरदास कहते हैं कि इन अँश्रुओं की धारा में अब पूरा ब्रज ही डूबता जा रहा है। हे प्रभु श्री कृष्ण तुम क्यों नहीं आकर इसे उभार लेते हो अर्थात डूबने से बचा लेते हो।

विशेष :– i. श्री कृष्ण के प्रति गोपियों का अनन्य प्रेम प्रकट हुआ है।

ii. विरह–वेदना की पराकाष्ठा का चित्रण।

iii. वियोग श्रृंगार।

iv. गीति शैली।

v. शुद्ध परिनिष्ठित ब्रज भाषा।

सूरदास की साहित्यिक विशेषताएँ

सूरदास (1478–1583 ई.)

भक्तिकाल की सगुण भक्ति धारा के अन्तर्गत कृष्ण भक्त कवियों की पंक्ति में सूरदास का सबसे महत्वपूर्ण स्थान है। इनकी तीन रचनाएँ प्रसिद्ध हैं — सूरसागर, सूर सारावली और साहित्य लहरी। सूरदास ब्रजभाषा के पहले सशक्त कवि हैं। इनकी रचनाएँ इतनी प्रगल्भ और काव्यपूर्ण हैं कि आगे होने वाले कवियों की शृंगार और वात्सल्य संबंधी उक्तियाँ सूरदास की झूठी सी जान पड़ती हैं। इस विषय में आचार्य शुक्ल जी का कहना है — "पहली साहित्य–रचना और इनती प्रचुर, प्रगल्भ और काव्यांग पूर्ण कि अगले कवियों की शृंगार और वात्सल्य की उक्तियां इनक झूठी जान पड़ती हैं।"

साहित्यिक विशेषताएँ

साहित्य के मुख्यतः दो पक्ष होते हैं — भाव पक्ष और कला पक्ष।

(i) भाव पक्ष

साहित्यकार की भावना या वह जो कुछ भी कहना चाहता है वह भावपक्ष के अन्तर्गत आता है। यह साहित्य का आंतरिक गुण है। इसका संबंध साहित्यकार की सहृदयता से होता है :–

1. **वस्तु वर्णन** :– वर्ण्य–विषय की दृष्टि से सूरदास के संपूर्ण काव्य को निम्न भागों में बांटकर देखा जा सकता है — (i) विनय के पद, (ii) बालक कृष्ण से संबंधित पद, (iii) कृष्ण के रूप–सौंदर्य संबंधी पद, (iv) कृष्ण और राधा के रति भाव संबंधी पद (v) मुरली संबंधी पद, (vi) प्रकृति संबंधी पद, (vii) वियोग शृंगार के भ्रमरगीत के पद।

2. **विनय एवं भक्ति भावना** :– भक्ति संबंधी पदों में सूरदास ने विनय की संपूर्ण भूमिकाओं एवं वैष्णव भक्ति संबंधी समस्त नियमों के अनुकूल विनम्रता, निष्कपटता, निरभिमानता इष्टदेव की महत्ता, भक्त की लघुता आदि का निरूपण बड़ी सजीवता के साथ किया है। यथा —

प्रभु मेरे औगुन चित न धरो।

समदरसी प्रभु नाम तिहारो अपने पनहि करो।

3. **प्रकृति चित्रण** :– सूरदास की कविता के केंद्र में ब्रज प्रदेश की रमणीय प्रकृति अपने पूरे वैभव के साथ उपस्थित है। वर्षा ऋतु समेत अन्य ऋतुओं के अनुपम सौंदर्य को भी सूर ने अपने काव्य में स्थान दिया है :—

सदा बसंत रहत जहं बास। सदा हर्ष जहं नहीं उदास।

न केवल ऋतुओं को बल्कि प्रभात, वन, द्रुम, लता, यमुना, चंद्रमा, उषा एवं संध्या आदि के भी सरस एवं मनोरम चित्र उनके काव्य में देखने को मिलते हैं।

4. **वात्सल्य वर्णन** :– वात्सल्य के क्षेत्र में जहां तक सूरदास की दृष्टि पँहुची है वहाँ किसी कवि की नहीं। इसलिए सूरदास को वात्सल्य का सम्राट कहा जाता है। बाल चेष्टाओं की ऐसी स्वाभाविक एवं मनोहारी झांकी अन्यत्र कहीं नहीं मिलती। यशोदा माता द्वारा श्री कृष्ण को सुलाने का स्वाभाविक और मनोवैज्ञानिक चित्रण देखते ही बनता है —

जसोदा हरि पालने झुलावैं।

हलरावैं, दुलराई मल्हावैं, जोइ–सोइ कछु गावैं।

बाल–मनोभावों एवं चेष्टाओं का जितना सहज और स्वाभाविक वर्णन सूरदास ने किया है , वह अन्यत्र दुर्लभ है। वात्सल्य रस के चित्रण में सूरदास विश्व साहित्य में बेजोड़ हैं। इस विषय में रामचन्द्र शुक्ल कहते हैं :–

"बाल सौंदर्य एवं स्वभाव के चित्रण में जितनी सफलता सूर को मिली, उतनी अन्य किसी को नहीं। अपनी बंद आंखों से वात्सल्य का कोना–कोना वे झांक आये।"

डॉ. नगेंद्र का कहना है –

"सूर के भाव चित्रण में वात्सल्य भाव को श्रेष्ठतम कहा जा सकता है। बाल–भाव और वात्सल्य से सने मातृहृदय के प्रेम–भावों के चित्रण में सूर अपना सानी नहीं रखते।"

5. **शृंगार वर्णन** :– सूरदास हिंदी में शृंगार के महानतम कवि माने जाते हैं। उनके काव्य में शृंगार का विस्तार तीन स्थितियों में देखा जा सकता है –

i. पूर्व राग की स्थिति में।

ii. प्रेम प्राप्ति के उपरांत संयोग–वियोग के चित्रों में।

iii. कृष्ण के मथुरा प्रस्थान के पश्चात चिर–वियोग की स्थिति में।

राधा कृष्ण के आकस्मिक मिलन का एक उदाहरण देखिए –

खेलत हरि निकसे ब्रज–खोरी
औचक ही देखी तहं राधा, नैन बिसाल भाल दिए रोरी।।
सूर स्याम देखत ही रीझे, नैन–नैन मिली परी ठगोरी।।

संयोग के समान ही वियोग शृंगार का भी सूरदास ने व्यापक वर्णन किया है। जब कृष्ण ब्रज से मथुरा के लिए प्रस्थान करते हैं तो उनका प्रेम चिर वियोग में परिणत हो जाता है –

बिछुरत ब्रजराज आजु, इन नैननि की परतति गई।

सूरसागर के भ्रमरगीत भाग में कृष्ण के विरह में डूबी गोपियों का ऊधव से हुआ संवाद विरह की प्रत्येक दशा का मार्मिक अंकन बना हुआ है –

निसिदिन बरसत नैन हमारे।

सदा रहत पावस ऋतु हम पर, जब तें स्याम सिधारे।

डॉ. नगेन्द्र लिखते हैं :–

"भक्ति के साथ शृंगार को जोड़कर उसके संयोग और वियोग पक्षों का जैसा मार्मिक वर्णन सूर ने किया है, वैसा अन्यत्र दुर्लभ है।"

6. **सगुणोपासना** :– सूरदास भक्तिकाल की सगुण भक्ति धारा के भक्त कवि माने जाते हैं। 'भ्रमरगीत' सूरसागर का सर्वाधिक मर्मस्पर्शी अंश है। जिसमें ऊधव–गोपी संवाद के माध्यम से निर्गुण का खण्डन और सगुण का मण्डन किया गया है। इसमें सगुणोपासना का निरुपण हृदय की अनुभूति के आधार पर किया गया है। यथा –

– निर्गुण कौन देस को वासी?

– अखियां हरि दरसन की भूखीं।

7. **पुष्टिमार्गी भक्ति** :– सूरदास की भक्ति पद्धति का मेरुदण्ड पुष्टिमार्ग है। इसमें भक्त ईश्वर के अनुग्रह पर भरोसा रखकर सब कुछ उसी की कृपा पर छोड़कर स्वयं को उसकी शरण में छोड़ देता है। सूरदास भी यही मानते हैं –

जा पर दीनानाथ ढरै।

सोई कुलीन बड़ो सुन्दर केई जा पर कृपा करै।

8. **दैन्यभाव की भक्ति** :– सूरदास मूलतः भक्त कवि थे। अतः उनकी कविता में भक्ति–भावना सूत्र के समान पिरोई हुई दृष्टिगत होती है। विनय के पदों में वह स्वयं को दीन हीन और ईश्वर को सर्वगुण सम्पन्न, सर्वज्ञाता और सबका उपकार करने वाला मानते हुए उनकी भक्ति करते हैं। वह कहते हैं –

अब कै राखि लेहु भगवान

हौं अनाथ बैठ्यो द्रुम–डरिया, पारधि साधे बान।

9. सख्य भाव की भक्ति :– दास्य भाव की भक्ति के साथ–साथ सूर के काव्य में सख्य भाव की भक्ति के भी दर्शन होते हैं। जहाँ भक्त स्वयं को अपने इष्ट देव का सखा मानकर उसकी भक्ति करता है वहां सख्य भाव की भक्ति होती है। सूरसागर में वर्णित कृष्ण की बाल–लीला, गोचारण लीला, सुदामा चरित्र आदि प्रसंग सख्य भाव से संबंधित हैं —

ऐसे मोहिं और कौन पहिचाने।

सुन सुंदरि दीनबंधु बिन कौन मिताई माने।।

10. नवीन प्रसंगों की उद्‌भावना :– सूर ने नवीन प्रसंगों की जो उद्‌भावना की है, वह उनकी मौलिक विशेषता है। आचार्य शुक्ल के अनुसार — "प्रसंगोद्‌भावना करने वाली ऐसी प्रतिभा हम तुलसी में नहीं पाते। बाललीला एवं प्रेमलीला के भीतर ऐसे अनेक छोटे–छोटे मनोरंजक वृतों की कल्पना सूर जैसा समर्थ कवि ही कर सकता है।"

(ii) कला पक्ष

साहित्यकार अपनी भावना को जिस ढंग से व्यक्त करता है उसे कला पक्ष कहते हैं। इसका संबंध लेखक की चतुरता और रचना कौशल से होता है। कलापक्ष काव्य का बाह्य अंग होता है। जिसके अन्तर्गत मुख्यतः काव्य शैली, भाषा, अलंकार आदि का समावेश होता है।

1. काव्य शैली :– सूरदास ने अपने काव्य में गीति शैली का आधार ग्रहण किया है। इनका सम्पूर्ण काव्य गीति–काव्य की सुंदरतम भावभूमि है। इसके साथ ही इनके काव्य में वर्णात्मकता भी पायी जाती है

परन्तु इसमें कवि का मन अधिक नहीं रम पाया। सूरदास के पदों में गीतिकाव्य के सभी प्रधान तत्व देखे जाते हैं। निर्विवाद रूप से सूरसागर गीति–शैली का एक अद्वितीय काव्य ग्रंथ है।

2. **भाषा** :– सूरदास के काव्य की भाषा 'ब्रजभाषा' है। भाषा की दृष्टि से इनका काव्य अत्यन्त समर्थ एवं सशक्त माना जाता है। सूरदास की ब्रजभाषा परिनिष्ठित एवं साहित्यिक है तथा उसमें प्रत्येक मनोभाव को सफलतापूर्वक व्यक्त करने की क्षमता है। इनकी भाषा में कोमलता, सरसता, माधुर्य एवं पदलालित्य जैसे गुण विद्यमान हैं। इसके अतिरिक्त इनके पदों में अनूठी भाव व्यंजकता, वक्रता, लाक्षणिकता के कारण शैलीगत प्रौढ़ता दिखाई देती है।

3. **नाटकीयता** :– सूरदास की भाषा का एक प्रमुख अभिलक्षण उसकी नाटकीयता भी है।

कहां रहति? काकी तू बेटी? देखि नाहिं कबहुं ब्रजखोरी।

ऐसे प्रसंगों में सूरदास की भाषा में नाटकीयता का समावेश स्वतः हो गया है।

4. **रस योजना** :– सूरदास के काव्य में वात्सल्य एवं शृंगार रस की प्रधानता है। वात्सल्य रस का तो उन्हें सम्राट कहा गया है। क्योंकि उन्होनें बाल मनोभावों का ऐसा हृदयग्राही वर्णन अपने पदों में किया है, जो अन्यत्र कहीं नहीं दिखाई पड़ता। इस विषय में हजारी प्रसाद द्विवेदी का कहना है — "बालकृष्ण की चेष्टाओं के चित्रण में कवि कमाल की होशियारी और सूक्ष्म निरीक्षण का परिचय देता है। न उसे शब्दों की कमी होती है, न अलंकार की, न भावों की और न भाषा की।" यथा —

मैया मैं नहिं माखन खायो।

5. **अलंकार योजना** :– सूरदास के अलंकार भावों के उत्कर्ष में सहायक हैं। इनके काव्य में शब्द और अर्थ संबंधी दोनों प्रकार के अलंकार आए हैं। उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, यमक, अनुप्रास, विभावना, असंगति आदि अलंकारों का सौन्दर्य इनके काव्य में यत्र–तत्र देखा जा सकता है। यथा —

उपमा — पिया बिन नागिन कारी रात।

रूपक — चरण–कमल बंदौं हरि–राई।

यमक — सारंग–सारंग धरहिं मिलावहु।

इसके अतिरिक्त इनके काव्य में संभावना, प्रतीप, व्यतिरेक, अतिश्योक्ति, उल्लेख आदि अलंकारों का प्रयोग भी किया गया है।

6. **छंद विधान** :– सूरदास ने केवल गीतों में पद रचना ही नहीं की अपितु अपने काव्य में अनेक छंद पद्धतियों का प्रयोग किया है। दोहा, रोला, चौबोला, तोमर, सार, लावनी, रूपमाला, गीतिका आदि मुख्य एवं गौण छंदो का प्रयोग हुआ है।

निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि सूरदास के काव्य में भावपक्ष एवं कलापक्ष का अद्‌भुत सामंजस्य है। ब्रजभाषा के भावमयी प्रयोग द्वारा सूरदास सरस काव्य की सृष्टि करते हैं, जिनमें अनेक भावों एवं रसों का वर्णन मिलता है। सूरदास की उत्कट काव्य–प्रतिभा के कारण ही उनकी कविता में मर्मस्पर्शी चित्रण, जीवनदायिनी संजीवनी–शक्ति, हृदयाकर्षक संगीतात्मकता, अंतःकरण को प्रभावित करने वाली उत्कृष्ट काव्य कला तथा विलक्षण उद्‌भावना शक्ति के दर्शन होते हैं।

अभ्यास के लिए प्रश्न

कविताओं पर आधारित निम्न संभावित प्रश्नों के उत्तर लिखें :–

1. पठित साखियों में कबीरदास की सामाजिक दृष्टि पर सोदाहरण टिप्पणी करें।
2. पठित साखियों का सार अपने शब्दों में लिखें।
3. कबीर ने गुरू को ईश्वर से भी अधिक महत्व दिया, क्यों, स्पष्ट करें।
4. कबीर ने अपनी साखियों के माध्यम से क्या संदेश देना चाहा है?
5. कबीर ने पठित साखियो में मानव समाज के हित की बात की है, सोदाहरण स्पष्ट करें।

6. कबीर की भक्ति पद्धति पर अपने विचार व्यक्त करें।

7. सूरदास जी का भक्ति भावना को स्पष्ट करें।

8. सूरदास की बाल लीला का आधार क्या है सोदाहरण स्पष्ट करें।

9. 'भ्रमरगीत' का सार अपने शब्दों में लिखें।

10. सूरदास का वियोग वर्णन हृदय स्पर्शी एवं मार्मिक है स्पष्ट करें।

11. कला की दृष्टि से सूरदास की पठित कविताओं का विवेचन करें।

12. बाल लीला संबंधी पदों में वात्सल्य रस की अभिव्यक्ति को अपने शब्दों में उदाहरण सहित लिखें।

बी.ए. सत्र – प्रथम

COURSE CODE : UHILTC - 101 **TITLE : काव्य एवं व्याकरण**

CREDITS - 06

इकाई– 2

काव्य

जय शंकर प्रसाद

प्रो0 सुनील कुमार
राजकीय महाविद्यालय, रियासी

इकाई की रूपरेखा

1. उद्देश्य
2. प्रस्तावना
3. जीवन परिचय
4. मुख्य कृतियाँ
5. प्रसाद साहित्य–प्रमुख साहित्यिक विशेषताएँ :

5.1 नारी सम्बन्धी दृष्टिकोण

5.2 मानवतावादी दृष्टिकोण

5.3 अनुभूति

5.4 कथा–साहित्य में काव्यपरकता

5.5 सौंदर्य भावना

5.6 इतिहास और कल्पना

5.7 प्रेम–प्रकृति प्रेम, देश प्रेम, मानव प्रेम और ईश्वर प्रेम

5.8 गीतों में राष्ट्रीय चेतना

5.9 भाशा शैली

6. निश्कर्श
7. उपयोगी पुस्तकें

1. उद्देश्य

यह इकाई जय शंकर प्रसाद जी पर आधारित है। इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आप जय शंकर प्रसाद जी के व्यक्तित्व तथा कृतित्व का परिचय दे सकेंगे तथा प्रसाद जी की साहित्यिक विशेषताओं को समझ सकेंगे।

2. प्रस्तावना

जय शंकर प्रसाद हिंदी छायावादी युग के चार स्तम्भों में से एक हैं। वे एक युग प्रवर्तक लेखक और छायावाद के संस्थापक के रूप में जाने जाते हैं। इन्होंने कहानी, उपन्यास, नाटक और कविता आदि विधाओं के क्षेत्र में अपनी असराहनीय प्रतिभा का परिचय देते हए साहित्य के क्षेत्र में अटूट योगदान दिया है। अपने आरंभिक लेखन की शुरूआत इन्होंने ब्रज भाशा से की और फिर धीरे–धीरे खड़ी बोली को अपनाकर उसे परिश्कृत, प्रवाहमयी, संस्कृतनिश्ठ भाशा के रूप में काव्य भाशा बना लिया। इनके द्वारा खड़ी बोली में रचित 'कामायनी' महाकाव्य एक महान रचना है, जोकि इनकी कीर्ति का मूलाधार भी रही है। जिसके लिए इन्हें 'मंगलप्रसाद पारितोशिक' पुरस्कार से भी नवाज़ा गया है। इस इकाई में सबसे पहले लेखक के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालेंगे और उसके बाद उनकी साहित्यिक विशेषताओं पर चर्चा की जाएगी।

3. जीवन परिचय

जन्म – जय शंकर प्रसाद जी का जन्म 30 जनवरी 1889 ई. में सुप्रसिद्ध वैश्य परिवार में वाराणसी (उत्तर प्रदेश) में हुआ। काशी में इनका परिवार सुंघनी साहू के नाम से प्रसिद्ध था।

पितामह – शिवरत्न साहू

पिता – बाबू देवी प्रसाद।

भाई – शम्भू रतन

शिक्षा – कक्षा आठ तक की शिक्षा ग्रहण करने के बाद प्रसाद जी ने घर पर रहकर ही हिंदी, संस्कृत, अंग्रेज़ी, उर्दू आदि का अध्ययन किया।

4. मुख्य कृतियाँ

काव्य रचनाएँ

वन मिलन, प्रेम राज्य, कानन कुसुम, करुणालय, महाराणा का महत्व, झरना, प्रेम पथिक, चित्राधार, उर्वशी, आँसू, लहर, कामायनी। (काव्य के क्षेत्र में खड़ी बोली के मूर्धन्य कवियों में इनकी गणना की जाती है। वे छायावाद के प्रतिष्ठापक ही नहीं अपितु छायावादी पद्धति पर सरस संगीतमय गीतों के लिखने वाले श्रेश्ठ कवि भी हैं। इन रचनाओं में अनुभूति, प्रेम और प्रकृति, करुणा, श्रद्धा, विरह, भावों तथा विचारों की पवित्रता आदि का समावेश हुआ है।)

कहानी संग्रह

छाया, प्रतिध्वनि, आकाशदीप, आंधी, और इन्दरजाल। (इन्होंने समस्यामूलक, भावना प्रधान, रहस्यवादी, प्रतीकात्मक, आदर्शोन्मुख यथार्थवाद आदि से जुड़े कथानकों पर मौलिक एवं कलात्मक कहानियाँ लिखी हैं।)

उपन्यास

कंकाल, तितली और इरावती (इनके द्वारा रचित तीन उपन्यास हैं – 'कंकाल' – यथार्थवादी उपन्यास, 'तितली' – आदर्शोन्मुख यथार्थवादी उपन्यास और 'इरावती' – ऐतिहासिक पृश्ठभूमि पर लिखा गया अधूरा उपन्यास है।)

निबंध

काव्य और कला, रहस्यवाद, यथार्थवाद और छायावाद, रस (निबंध के क्षेत्र में इन्होंने गंभीर और चिंतन प्रधान निबंध लिखे हैं। इन निबंधों के माध्यम से छायावाद की सूक्ष्म सौंदर्य–चेतना, कल्पनाप्रियता, अतीन्द्रियता, सर्वात्मवादिता आदि विशेषताओं का समर्थन भारतीय संस्कृति और दर्शन एवं साहित्य दृश्टि के आधार पर किया है।)

नाटक

सज्जन, कल्याणी, परिणय, करुणालय, प्रायश्चित, राज्यश्री, विशाख, अजातशत्रु, कामना, जनमेजय का नाग यज्ञ, स्कंदगुप्त, एक घूँट, चन्द्रगुप्त, ध्रुवस्वामिनी। (इन्होंने भावनात्मक, काल्पनिक, अर्द्धऐतिहासिक, ऐतिहासिक, पौराणिक नाटकों की सर्जना की है और उनके केंद्र में अधिकतर सांस्कृतिक तथा राश्ट्रीय चेतना को सम्मलित किया है।)

5. प्रसाद साहित्य – प्रमुख साहित्यिक विशेषताएँ :

जय शंकर प्रसाद बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। इन्होंने एक ही साथ कविता, नाटक, कहानी और उपन्यास के क्षेत्र में हिंदी को गौरवान्वित होने योग्य कृतियाँ दी हैं। आधुनिक हिंदी साहित्य में इनके कृतित्व का गौरव अक्षुण है।

जय शंकर प्रसाद जी के साहित्य के आधार पर जो विशेषताएँ सामने आती हैं, वे इस प्रकार हैं :–

5.1 नारी सम्बन्धी दृष्टिकोण – नारी के प्रति प्रसाद जी का दृष्टिकोण भारतीय संस्कृति के समरूप ही रहा है। इनकी दृश्टि में नारी दया, ममता, करुणा, प्रेम, त्याग, बलिदान, सौहार्द, शालीनता , विवेकशील, तेजस्वनी आदि गुणों से परिपूर्ण है। नारी के उदात्त रूप को चित्रित करते हुए 'कामायनी' में वे लिखते हैं –

नारी! तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास–रजत–नग पगतल में।
पीयूश–स्रोत–सी बहा करो, जीवन के सुंदर समतल में। (लज्जा सर्ग – कामायनी)

5.2 मानवतावादी दृश्टिकोण– मानवता का महत्व प्रसाद जी के साहित्य में सर्वोपरि है। मानवता ही उनके लिए सर्वोपरि धर्म है। वे सदा ही मानव का मूल्यांकन गुणों और चरित्र के आधार पर करते हैं। उनके अनुसार मनुष्य द्वारा निर्मित ऊंच–नीच, जाती–पाति जैसी संकीर्ण प्रवृतियां समाज में कोई स्थान नहीं रखती हैं। समस्त मानवता की विजयिनी होने की कामना करते हुए वे कहते हैं –

शक्ति के विद्युत्कण जो व्यस्त, विकल बिखरे हैं, हो निरूपाय।

समन्वय उसका करे समस्त, विजयिनी मानवता हो जाय। (श्रद्धा सर्ग – कामायनी)

5.3 अनुभूति– प्रसाद जी का अनुभूति पक्ष भी अत्यधिक प्रशंसनीय है। जिसकी वजह से समस्त रचनाओं में सजीवता उत्पन्न हो जाती है। इनके द्वारा रचित आँसू 'काव्य' में इस विशेषता का उत्कृश्ट उदहारण मिलता है जिसमें इनकी अनुभूति अधिक गंभीर और मार्मिक हो गई है। जो पीड़ा इन्हें विरह के रूप में मिली थी, वही आँसू में उमड़ पड़ी है –

रो–रोकर सिसक–सिसक कर, कहता मैं करुण कहानी।

तुम सुमन नोचते सुनते, करते जानी अनजानी। (आँसू)

5.4 कथा–साहित्य में काव्यपरकता– अपने कथा–साहित्य में प्रसाद जी ने काव्य के जैसी भाशा और भावों का चित्रण अंकित किया है। इनकी रचनाओं में मन व तन को स्पर्श करने वाली अभिव्यक्ति है। 'आकाशदीप' कहानी के माध्यम से कहानीकार की इस प्रतिभा का एक उदहारण देखा जा सकता है –

"शरद धवल नक्षत्र नील गगन में झलमला रहे थे। चन्द्र की उज्जवल विजय पर अंतरिक्ष में शरदलक्ष्मी ने आशीवार्द के फूलों और खीलों को बिखेर दिया।" (आकाशदीप)

5.5 सौंदर्य भावना–सौंदर्य भावना को बड़ी ही कुशलता के साथ प्रसाद जी ने अपनी काव्य रचनाओं में वर्णित किया है। वे सृश्टि के कण–कण में आलौकिक सौंदर्य के दर्शन करते हैं और सौंदर्य की परिभाशा देते हुए 'कामायनी' के 'लज्जा' सर्ग में कहते हैं –

उज्ज्वल वरदान चेतना का, सौंदर्य जिसे सब कहते हैं।

जिसमें अनंत अभिलाशा के, सपने सब जगते रहते हैं। (लज्जा सर्ग – कामायनी)

5.6 इतिहास और कल्पना– इतिहास और कल्पना का उत्कृश्ट समन्वय प्रसाद जी की रचनाओं में मिलता है। 'स्कन्दगुप्त' नाटक में स्कन्दगुप्त एक ऐतिहासिक पात्र हैं और उसका शासनकाल 5वीं सदी माना गया है। शकों और हूणों के साथ उसके द्वारा किए गए युद्ध में उनके सम्राज्य को समाप्त कर देने की घटना ऐतिहासिक है। वहीं दूसरी तरफ नाटक में पुरुश और स्त्री पात्र काल्पनिक है। स्कन्दगुप्त का लहरों

में बह जाना, देवसेना और विजया का स्कन्दगुप्त की ओर आकर्शण, श्मशान भूमि का प्रसंग आदि काल्पनिक प्रसंग हैं।

5.7 प्रेम –प्रेम के संदर्भ में विचार किया जाये तो प्रसाद जी के साहित्य में प्रेम के निम्न रूप दृश्टिगोचर होते हैं – प्रकृति प्रेम, देश प्रेम, मानव प्रेम और ईश्वर प्रेम।

(क) प्रकृति प्रेम– प्रकृति को मानवीय रूप में देखना और उससे प्रेम करना प्रसाद जी के काव्य में मुख्य रूप से अंकित हैं। इन्होंने प्रकृति के कठोर तथा कोमल दोनों ही रूपों का अंकन समान रूप से किया है। 'कामायनी' महाकाव्य के सभी सर्गों में प्रकृति सौंदर्य के व्यापक चित्र मिलते हैं –

1. हिमगिरी के उत्तुंग शिखर पर, बैठ शिला की शीतल छाँह़
   एक पुरुश, भीगे नयनों से, देख रहा था प्रलय प्रवाह। (चिंता सर्ग – कामायनी)
2. ऊशा सुनहले तीर बरसाती, जयलक्ष्मी–सी उदित हुई
   उधर पराजित काल रात्रि भी, जल में अन्तर्निहित हुई। (आशा सर्ग – कामायनी)

(ख) देश प्रेम – प्रसाद जी की रचनाओं में देश के प्रति अटूट प्रेम को उजागर किया गया है। देश प्रेम इनके साहित्य का प्राण तत्व है। वे व्यक्ति के बलिदान और त्याग के पक्षधर रहे हैं। इनकी रचनाओं में नारी और पुरुश पात्र युद्ध के बिगुल बजते ही राश्ट्रीयभावना से ओत–प्रोत हो जाते हैं। देश के प्रति अपार प्रेम को प्रकट करते हुए 'भारत महिमा' में वे लिखते हैं –

जिये ंतो सदा इसी के लिए, यही अभिमान रहे हर्श।
निछावर कर दें हम सर्वस्व, हमारा प्यारा भारतवर्श।। (भारत महिमा)

'अरुण यह मधुमय देश हमारा' रचना में प्रसाद जी ने भारत की विशालता का वर्णन किया है। इनके अनुसार भारत की संस्कृति और यहाँ के लोग बहुत विशाल ह्रदय के हैं। यहाँ पर पक्षियों को ही आश्रय नहीं दिया जाता बल्कि बाहर से आए अजनबी लोगों को भी सहारा दिया जाता है। देश की प्रशंसा करते हुए वे कहते हैं –

अरुण यह मधुमेय देश हमारा।

जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा। (अरुण यह मधुमेय देश हमारा)

(ग) मानव प्रेम – प्रसाद जी के हृदय में मानव के प्रति असीम श्रद्धा और प्रेम विद्यमान है। मानवमात्र से प्रेम इनके काव्य का गुण है। प्रेम के आदर्श रूप को इन्होंने अपनी प्रेम पथिक, आँसू और कामायनी आदि रचनाओं के माध्यम से चित्रित किया है। वे कहते हैं कि प्रेम के लिए त्याग करना पड़ता है और जो त्याग करता है, उसे ही प्रेम की प्राप्ति होती है यथा –

पथिक प्रेम की रह अनोखी भूल–भूल कर चलना है।
घनी दाँह है जो ऊपर तो नीचे कांटे बिछे हुए।
प्रेम यज्ञ में स्वार्थ और कामना का हवन करना होगा।
तब तुम प्रियतम स्वर्गबिहारी होने का फल पाओगे।। (प्रेम पथिक)

(घ) ईश्वर प्रेम –आत्मा और परमात्मा का चिंतन ही रहस्यवाद है। प्रसाद जी के काव्य में रहस्यवादी तत्व पर्याप्त मात्रा मे पाए जाते हैं। जिसमें जिज्ञासा, प्रेम, विरह तथा मिलन के सोपानों से गुज़रने वाली ईश्वर प्रेम की भावना को बड़े ही सहज रूप से प्रस्तुत किया गया है। वे ईश्वर के अस्तित्व के विशय में जिज्ञासा व्यक्त करते हुए कहते हैं –

बिजली माला पहने फिर
मुसक्याता था आँगन में
हाँ, कौन बरस जाता था
रस बूँद हमारे मन में? (आँसू)

5.8 गीतों में राश्ट्रीय चेतना – प्रसाद जी ने श्रृंगारिक, व्यक्तिवादी, नेपथ्य, नृत्य, दार्शनिक और भक्तिपरक जैसे गीतों की रचना की है। भक्तिपरक गीतों में राश्ट्र के उद्धार के लिए ईश्वर से प्रार्थना की गई है। इन गीतों के माध्यम से इन्होंने राश्ट्रीय भावना को दीप्त स्वर और संगत युगीन, प्रासंगिक स्वरूप प्रदान किया है। उदहारण स्वरूप 'चन्द्रगुप्त' नाटक में अलका द्वारा गाया गया राश्ट्रीय चेतना से ओत–प्रोत यह गीत लिया जा सकता है –

हिमाद्रि तुंग श्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती,

स्वयंप्रभा समुज्ज्वला स्वतंत्रता पुकारती।

अमर्त्य वीर पुत्र हो, दृढ़–प्रतिज्ञ सोच लो,

प्रेशस्त पुण्य पंथ हैं – बढ़े चलो बढ़े चलो।

असंख्य कीर्ति–रश्मियाँ विकीर्ण दिव्य दाह–सी।

सपूत मातृभूमि के रुको न शूर साहसी।

अराति सैन्य सिंधु में – सुबाड़वाग्नि से जलो,

प्रवीर हो जयी बनो – बढ़े चलो बढ़े चलो। (हिमाद्रि तुंग शृंग से – चन्द्रगुप्त)

5.9 भाशा–संस्कृतनिश्ठ, व्याकरण सम्मत, परिश्कृत एवं परिमार्जित खड़ी बोली का प्रयोग प्रसाद जी ने अपनी काव्य रचनाओं में किया है। अपने आरंभिक लेखन की शुरूआत इन्होंने ब्रज भाशा से की है और इसके बाद शुद्ध, साहित्यिक खड़ी बोली में समस्त काव्य रचनाओं का निरूपण किया है।

1. जेहि वंश–चरित्र को लिखे,

   कवि वाल्मीकि अजौ सुख्यात है।

   तुमही! निज तात सामुहे,

   शुचि गायो वह क्यों भुलात है। ब्रज भाशा – (चित्राधार)

2. कुसुम कानन अंचल में,

   मंद–पवन प्रेरित सौरभ साकार।

   रचित, परमाणु–पराग–शरीर,

   खड़ा हो, ले मधु का आभार। खड़ी बोली – (कामायनी)

शैली – प्रसाद जी की काव्य शैली में परम्परागत तथा नव्य अभिव्यक्ति कौशल का अद्‌भुत समन्वय है। उसमें ओज, माधुर्य और प्रसाद – तीनों गुणों की सुसंगति है। विशय और भाव के अनुकूल विविध शैलियों का प्रयोग इनके काव्य में प्राप्त होता है। वर्णनात्मक, भावात्मक, आलंकारिक, संगीतात्मक, चित्रात्मक (बिम्ब), लाक्षणिक, सूक्तिपरक, प्रतीकात्मक आदि शैली–रूप इनकी अभिव्यक्ति को पूर्णता प्रदान करते हैं। उदहारण –

1. सरल तामरस गर्भ विभा पर, नाच रही तरुशिखा मनोहर।
   छिटका जीवन हरियाली पर, मंगल कुंकुम सारा। (अरुण यह मधुमेय देश हमारा)
2. और उस मुख पर वह मुस्कान, रक्त किसलय पर ले विश्राम।
   अरुण की एक किरण अम्लान, अधिक अलसाई हो अभिराम। (श्रद्धा सर्ग – कामायनी)

बिम्ब

1. मधुप गुनगुना कर कह जाता कौन कहानी यह अपनी,
   मुरझा कर गिर रही पत्तियां देखो कितनी आज धनी। (मधुप गुनगुना कर आत्मकथ्य)
2. मधुमय–बसंत जीवन वन के वह अंतरिक्ष की लहरों में। (काम सर्ग – कामायनी)
3. झंझा झकोर गर्जन था, बिजली थी सी नीरदमाला,
   पाकर इस शून्य हृदय कोसबने आ डेरा डाला। (आँसू)

प्रतीकात्मकता

1. कोमल किसलय के अंचल में नन्हीं कलिका ज्यों छिपती–सी। (लज्जा सर्ग – कामायनी)

भवानुकूलता

1. सुनकर क्या तुम भला करोगे मेरी भोली आत्मकथा?
   अभी समय भी नहीं, थकी है मेरी मौन व्यथा। (आत्मकथ्य)

लाक्षणिकता

1. कौन गा रहा यह सुंदर संगीत, कुतूहल रह न सका फिर मौन । (श्रद्धासर्ग कामायनी)

2. किरण! तुम क्यों बिखरी हो आज, रँगी हो तुम किसके अनुराग।

स्वर्ण सरजित किंजल्क समान, उड़ाती हो परमाणु पराग। (किरण –झरना)

3. अभिलाशाओं की करवट, फिर सुप्त व्यथा का जगना।

सुख का सपना हो जाना, भीगी पलकों का लगना। (आँसू)

संगीतात्मकता

रस़

काव्य को पढ़ने या सुनने से जिस आनंद की अनुभूति होती है, उसे रस कहते हैं। प्रसाद जी ने अपने काव्य में श्रृंगार, करुण, अद्‌भुत, रौद्र आदि रस की सुंदर योजना प्रस्तुत की है। श्रृंगार रस के दोनों रूपों (संयोग श्रृंगार और वियोग श्रृंगार) का समावेश मुख्य रूप से इनकी रचनाओं में हुआ है। उदहारण –

1. अहा! वह मुख! पश्चिम के व्योम, बीच जब घीरते हो घनश्याम।

अरुण रविमंडल उनको भेद, दिखाई देता हो छवि धाम। (श्रद्धा सर्ग कामायनी)

2. जो घनीभूत पीड़ा थी, मस्तक में स्मृति–सी छायी।

दुर्दिन में आँसू बनकर, वह आज बरसने आयी। (आँसू)

अलंकरण

काव्य की सौंदर्य व शोभा बढ़ाने वाले तत्व अलंकार कहलाते हैं। अलंकारों का प्रयोग प्रसाद जी ने प्रचुर मात्रा में किया है। इन्होंने अपनी काव्य रचनाओं में रूपक, रूपकातिश्योक्ति, उपमा, श्लेश, विशेशण विपर्यय, मानवीकरण, उत्प्रेक्षा, प्रतीक आदि अलंकारों का प्रयोग बड़े ही सहज स्वाभाविक रूप से किया है। इनकी दृश्टि साम्यमूलक अलंकारों में रही है। शब्दालंकार अनायास ही आए हैं।

1. बीती विभावरी जाग री।

अम्बर पनघट में डुबो रही तारा–घाट ऊशा–नागरी। (बीती विभावरी जाग री)

मानवीकरण

2. मधुप गुनगुना कर कह जाता कौन कहानी यह अपनी (मधुप गुनगुना कर . आत्मकथ्य)

अनुप्रास

3. खिला हो ज्यों बिजली का फूल, मेघवन बीच गुलाबी रंग। (श्रद्धा सर्ग – कामायनी)

उत्प्रेक्षा

4. अभिलाषाओं की करवट फिर सुप्त व्यथा का जागना (आँसू)

विशेषण विपर्यय

गद्य–भाशा में संस्कृत और उर्दू–फारसी का प्रयोगः–

प्रसाद जी कों संस्कृत, उर्दू, फारसी आदि भाशाओं में भी गहन रूचि थी। यही कारण है कि इनकी रचनाओं में इन भाशाओं के यथासंभव उदहारण मिलते हैं –

1. अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते। ममता (आकाशदीप)

2. नाम–समेतं वृत–संकेतं वादयते मृदु–वेणुं। देवदासी (आकाशदीप)

संस्कृत

1. सच कह दूँ ऐ बिरहमन गर तू बुरा न माने।

तेरे सनमकदे के बुत हो गये पुराने। प्रतिमा (प्रतिध्वनि)

उर्दू

1. पुरजे को पढ़ा। उसमें लिखा था।

बगैर सब्जः न पोशद कसे मजार मरा।

कि कब्रपोश गरीबाँ हमीं गयाह बसस्त।। जहाँआरा (छाया)

फारसी

अन्य उदाहरण : (तत्सम्–तद्भव शब्दों का प्रयोग)

प्रसाद जी की गद्य–भाशा पर स्वयं उनकी ही कवित्व–प्रतिभा का भी प्रभाव रहा है। उनके द्वारा रचित कहानी आकाशदीप में प्रयुक्त शब्दावली से स्पश्ट है कि उन्होंने तत्सम्–तद्भव शब्दों का खुलकर

प्रयोग किया है। जैसे – दस्यु, वृति, बंदीगृह, पोत, जलयान, आलोक, शैलमाला, सिंधु, निविड़तम, तारिका आदि।

उदहारण –

1. सहसा 'पोत' से पथ – प्रदर्शक चिल्लाकर – आँधी!
2. मुझे इस 'बंदीगृह' से मुक्त करो।
3. चंपा के दूसरे भाग में एक मनोरम 'शैलमाला' थी।
4. व्यवसायी 'दस्यु' भी उसे देखकर काँप गया।
5. जैसे वेला की चोट खाकर 'सिंधु' चिल्ला उठता है।
6. आलोक की एक कोमल रेखा इस 'निविड़तम' में मुस्कराने लगी। (आकाशदीप)

6. निश्कर्श

उपर्युक्त साहित्यिक विशेषताओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि जय शंकर प्रसाद जी की प्रतिभाओं का विकास हिंदी साहित्य की दोनों विधाओं (गद्य और पद्य) के क्षेत्र में हुआ है। कविता, नाटक, उपन्यास, कहानी और निबंध आदि सभी में इनकी गति समान रही है। मूल संवेदना को पकड़कर उसके अनुकूल भाशा और अन्य तत्वों का सम्यक् सृजन करना ही इनकी मुख्य विशेषताएं रही है। मानव, समाज और राश्ट्र इनकी रचनाओं में सर्वश्रेश्ठ रहा है। अतः इनकी रचनाओं का मुख्य उद्देश्य धर्म, जातिवाद, संप्रदाय से ऊपर उठकर केवल आदर्श समाज की प्रतिश्ठा करना ही नहीं बल्कि एक गौरवशाली राष्ट्र की स्थापना करना है।

7. उपयोगी पुस्तकें

क्रमांक	रचना	लेखक
1.	लज्जा सर्ग – कामायनी	जयशंकर प्रसाद
2.	श्रद्धा सर्ग – कामायनी	वही
3.	आँसू	वही
4.	आकाशदीप	वही
5.	चिंता सर्ग – कामायनी	वही
6.	आशा सर्ग – कामायनी	वही
7.	भारत महिमा	वही
8.	अरुण यह मधुमय देश हमारा	वही
9.	प्रेम पथिक	वही
10.	हिमाद्रि तुंग शृंग से – चन्द्रगुप्त	वही
11.	चित्राधार	वही
12.	मधुप गुनगुना कर (आत्मकथ्य)	वही
13.	किरण–झरना	वही
14.	बीती विभावरी जाग री	वही
15.	चन्द्रगुप्त	वही
16.	स्कन्दगुप्त	वही
17.	काम सर्ग – कामायनी	वही
18.	ममता (आकाशदीप)	वही
19.	देवदासी (आकाशदीप)	वही
20.	प्रतिमा (प्रतिध्वनि)	वही
21.	जहाँआरा (छाया)	वही
22.	हिंदी साहित्य का इतिहास	आचार्य रामचंद्र शुक्ल
23.	कवि प्रसाद की काव्य साधना	रामनाथ सुमन
24.	प्रसाद के ऐतिहासिक नाटक	डॉ. जगदीश चंद्र
25.	आधुनिक हिंदी नाटक	डॉ. नगेंद्र

26. प्रसाद के साहित्य का कला पक्ष https://shodhganga.Inflibnet.ac.in/
27. https://hindisamay.com/writer/जयशंकर प्रसाद, cspx?id=1176&name = जयशंकर प्रसाद
28. प्रसाद के नाटकों में राश्ट्रीय चेतना का स्वरूप –https://shodhganga.Inflibnet.ac.in/
29. छायावादी युग के प्रमुख रहस्यवादी कवि –https://shodhganga.Inflibnet.ac.in/
30. https://www.hindi-kavita.com/Hindi Jaishankar Prasad.php
31. https://hi.wikipedia.org/wiki/जयशंकर प्रसाद
32. https://www.hindi kahani. Hindi-kavita.com/HK- Jaishankar Prasad.php
33. https://www.hindi vyakaran.com/2018/12/- Jay-shankar -Prasad-ka-jivan-parichay-aur-visheshtayein.html
34. https://www.hindi-kavita.com/Biography-Jaishankar-Prasad.php
35. https://www.hindi journal.com

जय शंकर प्रसाद

जीवन परिचयः

(व्यक्तित्व तथा कृतित्व)

परिचय

- जय शंकर प्रसाद हिंदी छायावादी युग के चार स्तम्भों में से एक हैं। वे एक युग प्रवर्तक लेखक और छायावाद के संस्थापक के रूप में जाने जाते हैं। इन्होंने कहानी, उपन्यास , नाटक , और कविता आदि विधाओं के क्षेत्र में अपनी असराहनीय प्रतिभा का परिचय देते हुए साहित्य के क्षेत्र में अटूट योगदान दिया है। अपने आरंभिक लेखन की शुरुआत इन्होंने ब्रज भाषा से की और फिर धीरे -धीरे खड़ी बोली को अपनाकर उसे परिष्कृत ,प्रवाहमयी , संस्कृतनिष्ठ भाषा के रूप में काव्य भाषा बना लिया । इनके द्वारा खड़ी बोली में रचित 'कामायनी' महाकाव्य एक महान रचना है, जोकि इनकी कीर्ति का मूलाधार भी रही है। जिसके लिए इन्हें 'मंगलप्रसाद पारितोषिक' पुरस्कार से भी नवाज़ा गया है ।

जीवन परिचय:

- **जन्म** – जय शंकर प्रसाद जी का जन्म 30 जनवरी 1889 ई० में सुप्रसिद्व वैश्य परिवार में वाराणसी {उत्तर प्रदेश } में हुआ। काशी में इनका परिवार सुंघनी साहू के नाम से प्रसिद्ध था।

- **पितामह** – शिवरत्न साहू

- **पिता**- बाबू देवी प्रसाद।

- **भाई**- शम्भूरतन

- **शिक्षा** - कक्षा आठ तक की शिक्षा ग्रहण करने के बाद प्रसाद जी ने घर पर रहकर ही हिंदी ,संस्कृत ,अंग्रेजी , उर्दू आदि का अध्ययन किया।

मुख्य कृतियाँ:-

- **काव्य रचनाएँ :-** वन मिलन,प्रेम राज्य, कानन कुसुम, करुणालय, महाराणा का महत्व ,झरना , प्रेम पथिक, चित्राधार, उर्वशी आँसू, लहर ,कामायनी।।(काव्य के क्षेत्र में खड़ी बोली के मूर्धन्य कवियों में इनकी गणना की जाती हैं। वे छायावाद के प्रतिष्ठापक ही नहीं अपितु छायावादी पद्धति पर सरस संगीतमय गीतों के लिखने वाले श्रेष्ठ कवि भी हैं।इन रचनाओं में अनुभूति , प्रेम और प्रक्रति ,करुणा , श्रदा , विरह , भावों तथा विचारों की पवित्रता आदि का समावेश हुआ है।)

- **कहानी संग्रह :-**छाया , प्रतिध्वनि , आकाशदीप,आंधी ,और इन्दरजाल।(इन्होंने समस्यामूलक , भावना प्रधान ,रहस्यवादी, प्रतीकात्मक, आदर्शोन्मुख यथार्थवाद आदि से जुड़े कथानकों पर मौलिक एवं कलात्मक कहानियाँ लिखी हैं।

- **उपन्यास :-** कंकाल, तितली, और इरावती । (इनके द्वारा रचित तीन उपन्यास हैं -'कंकाल' - यथार्थवादी उपन्यास, 'तितली '-आदर्शोन्मुख यथार्थवादी उपन्यास और इरावती' - ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर लिखा गया अधूरा उपन्यास है।)

- **निबंध** -

  काव्य और कला, रहस्यवाद, यथार्थवाद और छायावाद, रस (निबंध के क्षेत्र में इन्होंने गंभीर और चिंतन प्रधान निबंध लिखें हैं। इन निबंधों के माध्यम से छायावादी की सूक्षम सौंदर्य -चेतना कल्पनाप्रियता,अतीन्द्रियता, सर्वात्मवादिता आदि विशेषताओं का समर्थन भारतीय संस्कृति और दर्शन एवं साहित्य दृष्टि के आधार पर किया है।)

- **नाटक :-**

  सज्जन, कल्याणी ,परिणय, करुणालय ,प्रायश्चित ,राज्य श्री ,विशाख ,अजातशत्रु , कामना ,जनमेजय का नाग यज्ञ, स्कंदगुप्त ,एक घूँट,चन्द्रगुप्त ,ध्रुवस्वामिनी।

  (इन्होंने भावनात्मक , काल्पनिक , अर्द्धऐतिहासिक , ऐतिहासिक , पौराणिक नाटकों की सर्जना की है और उनके केंद्र में सांस्कृतिक तथा राष्ट्रीय चेतना को सम्मलित किया है।)

निष्कर्ष :-

- अंत में यह कह सकते हैं कि जय शंकर प्रसाद जी की प्रतिभाओं का विकास हिंदी साहित्त्य की दोनों विधाओं गद्य और पद्य (कविता ,नाटक, उपन्यास ,कहानी और निबंध आदि) के क्षेत्र में हुआ है।

प्र०-किरण कविता का सार लिखें ?

प्रस्तुत कविता के माध्यम से प्रकृति का मनोहर चित्रण किया गया है। एक किरण को प्रकृति - प्रागण में अतीव प्रसन्नता के साथ विचरते देख कवि अत्यधिक उत्सुक हो रहे हैं और उसके इस हर्षोन्माद का कारण जानने की चाह कर रहे हैं। वे कहते हैं कि सूर्य नवजात शिशु की भांति दमक रहा है और किरण अभिवादन करते हुए उसके मस्तक को चूमती हुई ऐसे दीप्तिमान हो रही है जैसे बालक के घुंघराले बाल हो तथा वह धरती से स्वर्ग को अदृश्य सूत्रों के माध्यम से जोड़ने की कड़ी बन रही है। कवि किरण को विश्राम करने को कहते हैं और उसे फूलों के मन्दिरम् के द्वार खोलने की प्राथना करते हैं,ताकि बसंत का आगमन हो सके।

प्र० प्रसाद जी किरण से किस विषय में जानना चाहते हैं ?

प्रसाद जी किरण से उस अज्ञात -सत्ता के विषय में जानना चाहते हैं -जिसका प्रतिनिधित्व वह वेदना दुति-सी ,अनुराग की पराग धुली उड़ाती हुई -सी , स्वर्णमय पुष्प गुच्छों के समान बिखरी हुई –सी मूक मुरली के समान कर रही है। उसका मौन प्रार्थना स्वरूप पृथ्वी पर झुके होने की वजह से ऐसा प्रतीत हो रहा है मानो वह किसी ऐसे लोक से आई है , जहां शोक, संताप, बियाधि, अवसाद, कसक आदि का साम्राज्य स्थापित है। इसीलिए उन्हें यह अनुभव हो रहा है कि यह वेदना उसके किसी अनुराग के कारण ही है।अत : प्रसाद जी उस अज्ञात सत्ता के बारे में जानना चाहते हैं, जिसके कारण किरण स्वर्ण किंजल्का होकर भी बिखर कर अपने प्रेम को व्यक्त कर रही है।

कवि ने किरण कविता में प्रकृति के माध्यम से किस और संकेत किया है?

किरण के साथ - साथ प्रकृति के अन्य उपादानों को भी कवि ने अपनी अभिव्यक्ति का साधन बनाया है। प्रातः कालीन किरण और अरुण का गहन सम्बन्ध है। किरण प्रातः कालीन सूर्य के आगमन पर नृत्य करते हुए उसका अभिवादन करती हैं और यह नृत्य घुंघराले केशों वाली इस उषा सुंदरी के आँचल में घूंघराली लट के समान होता है। कवि का कहना है कि किरण भोले - भाले बालारुण के मुख को छोड़कर अन्य किसी के मस्तक को नहीं चूमेगी और किसी में इतना महत्व भी नहीं हैं। इसी कारण उनके हृदय में किरण के प्रति विभिन्न जिज्ञासाएँ उतपन्न हो रही है , जैसे –किरण का नृत्य, किरण के अस्तित्व का रहस्य इत्यादि ।इस प्रकार कवि ने स्थूल प्रत्यक्ष का आधार ग्रहण कर परोक्ष सूक्षम की ओर संकेत किया है। बाल सूर्य और घुंघराले लट वाली उषा तो मंत्र अभिव्यक्ति के उपादान हैं। अत: वास्तविक संकेत अज्ञात सत्ता की ओर है, जिसका रहस्य कवि जानना चाहते हैं और किरण के अनुराग के आधार पर उसके रजक स्वरूप की ओर संकेत कर रहे हैं।

प्र०-पुकार कविता का सार लिखें।

जय शंकर प्रसाद जी द्वारा रचित कविता पुकार में प्रेम से वंचित प्रेमी की भावनाओं को व्यक्त किया गया है। कविता में ऐसे प्रेमी का चित्रण हुआ है जिसने अपनी प्रेमिका से अथाह प्रेम किया था, लेकिन उस प्रेमिका द्वारा प्रेमी के प्रेम को ठुकरा दिया जाता है। प्रेम में ठुकराय जाने के बाद वह प्रेमी अपने प्रेम को वापिस पाने के लिए तड़फ रहा है। उसकी स्थिति भिखारी -सी हो गई हैऔर बार -बार कह उठता है कि उसे कभी प्यार नहीं मिला। जिस तरह सागर से उठती लहरें आकाश को आलिंगन कर लेना चाहती है, परन्तु ऐसा कुछ नहीं कर पाती है। ठीक ऐसी ही स्थिति प्रेमी की है, जो प्रेमिका की मधुर मुस्कान के लिए भी तरस रहा है। उषाकाल में उसकी बेचैनी और भी अधिक उग्र हो जाती है। पीड़ा , घृणा ,और ममता उसकी चेतना को जड़ बना देती है। वायुमंडल में सौरभ से पूर्ण कलियाँ महक फैला रही हैं। परन्तु वह अपने विषाद रूपी विष से मूर्छित होकर काँटों पर ही गिर रहा है। उसे अपनी जीवन रूपी रात्रि में हमराह रूपी चन्द्रमा के प्राप्त न होने का बहुत दुःख है। इसे स्वाति नक्षत्र की एक बूँद भी नहीं मिली ,जिससे उसकी हृदय रूपी सीप में मोती बन जाता है।अंत में वह प्रेम के उज्जवल पक्ष को पहचान कर अपने को समझाता है कि प्रिय कब प्राप्त होता है , उसे तो आत्मदान ही करना होता है। उसके आँसुओं का कण कण पाकर विश्व उसका ऋणी हो जायेगा। इसीलिए उसे यह नहीं कहना चाहिये कि मुझे प्रेम प्राप्त नहीं हुआ। वास्तव में आत्मदान ही सच्चा प्रेम होता है।

प्र०-पुकार कविता में अतृप्त प्रेमी की दशा का वर्णन कीजिये।

पुकार कविता का शीर्षक सार्थक है।कविता में अतृप्त प्रेमी बार -बार पुकार रहा है कि उसे प्रेम नहीं मिला है।अपूर्ण कामना ने उसकी मनोस्थिति को हिला दिया है। कवि ने अन्य माध्यमों से प्रेमी की मनोस्थिति दिखाने की कोशिश की है,जैसे सागर की लहरें आकाश को आलिंगन नहीं कर पाती है। ऐसी ही स्थिति प्रेमी की है, वह प्रेमिका का आलिंगन पाकर समस्त उज्ज्वल कर्म करना चाहता है। पर यह संसार ऐसा होने नहीं देता है और इसी कारण उसकी स्थिति पागलों- सी हो गई है। जब सुबह की किरणे समस्त नव चेतना का संचार करती है। उस समय प्रेमी के हृदय में उदासीनता छा जाती है। हरे -भरे सुगन्धित वृक्ष पेड़-पौधे भी प्रेमी का दुःख दूर नहीं कर पाते है। अत: प्रेमी वियोग में आहत है और काँटों की तरह चुभने वाली स्मृतियों ने उसकी चेतना को घायल कर दिया है।

प्र०-प्रेम का शांतिमय सुखद ढंग क्या है।

प्रेम का शांतिमय सुखद ढंग है कि प्रेमी प्रेम को लुभावनी रूप न देकर उसे निष्ठा भाव से पूर्ण समर्पित होकर निभाए। प्रेमी जो सच्चा प्रेम करता है ,उसका प्रेम एक तरफ का ही होता है और यदि प्रेम मिल जाये तो भाग्य उत्तमकहलाता है।

जो प्रेमी प्रेम करता है वह सम्पूर्ण जगत से प्रेम करता है। फिर चाहे जड़ हो या फिर चेतन वह सभी से प्रेम करता है और ऐसा प्रेमी सदा -सदा के लिए अमर हो जाता है। प्रेम में खोई वस्तु मिले या न मिले प्रेमी को कोई फरक नहीं पड़ता है। वह तो प्रेम निभाने में ही आनंद-सा सुख पाता है। ऐसा प्रेम अति दुर्लभ है पर ऐसा प्रेम दोष रहित है।

काव्य एवं व्याकरण

इकाई – 3

1. सप्रसंग व्याख्या
2. मुक्तिबोध की साहित्यिक विशेषताएँ एवं पठित कविताओं पर आधारित प्रश्न
3. अनामिका की साहित्यिक विशेषताएँ एवं पठित कविताओं पर आधारित प्रश्न

For B.A. Semester I

Dr. Vijay Kumar
Asstt. Professor in Hindi
Govt. Degree College
Thathri

गजानन माधव मुक्तिबोध

नयी कविता के महत्त्वपूर्ण कवि गजानन माधव मुक्तिबोध का जन्म 13 नवम्बर 1917 ई. को श्योपुर, जिला मुरैना, ग्वालियर, मध्यप्रदेश में हुआ। उनके पिता का नाम माधव मुक्तिबोध और माता का नाम पार्वती बाई था। उनका विवाह उनक माता–पिता की इच्छा के विरुद्ध शांता नामक युवती से हुआ।

मुक्तिबोध की प्रारंभिक शिक्षा उज्जैन में हुई। 1938 ई. में बी.ए. पास करने के पश्चात्, वह उज्जैन के एक विद्यालय में अध्यापक नियुक्त हुए। अनेक स्थानों पर अध्यापन कार्य करने के पश्चात् 1953 ई. में इन्होंने नागपुर विश्वविद्यालय से एम.ए. की परीक्षा पास की। वह 1954 ई. में दिग्विजय कॉलेज में प्राध्यापक पद पर नियुक्त हुए।

अध्ययनशील व्यक्तित्व वाले मुक्तिबोध मार्क्सवाद से प्रभावित थे। उन्होंने रूसी, अंग्रेज़ी तथा फेंच के उपन्यासों के अध्ययन के साथ–साथ विभिन्न देशों के इतिहास तथा विज्ञान विषयक साहित्य का गहन अध्ययन किया। मुक्तिबोध जी ने 'हंस' तथा 'शारदा' जैसी अनेक पत्रिकाओं का सम्पादन भी किया। अन्त में वह बीमार रहने लगे। 'मैनिनजाइटस' नामक बीमारी ने उनके शरीर को जकड़ लिया। उनका उपचार भी कराया गया, परन्तु वह स्वस्थ नहीं हुए। अन्ततः 11 सितंबर 1964 ई. को उनका देहान्त हो गया।

साहित्यिक जीवन

मुक्तिबोध तार सप्तक के पहले कवि थे। उनकी पहली कविता तार सप्तक के माध्यम से ही सामने आई। बहुमुखी प्रतिभा से ओतप्रोत मुक्तिबोध जी की रचनाओं का विवरण निम्नलिखित है :–

1. काव्य संग्रह – चाँद का मुँह टेढा (1964)

भूरी–भूरी खाक धूल (1980)

2. कहानी संग्रह – काठ का सपना (1967)

सतह से उठता आदमी (1971)

3. उपन्यास – विपात्र (1970)

4. निबंध संग्रह – नई कविता का आत्मसंघर्ष तथा अन्य निबन्ध (1964)

5. अन्य समीक्षात्मक ग्रंथ – कामायनी – एक पुनर्विचार (1973)

नए साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र (1971)

एक साहित्यिक की डायरी (1964)

समीक्षा की समस्याएँ (1982)

भारत : इतिहास और संस्कृति

मुक्तिबोध रचनावली (नेमिचन्द जैन द्वारा सम्पादित)

मुक्तिबोध के साहित्य का भाव पक्ष

मुक्तिबोध जी के साहित्य में सामाजिक चेतना, लोकमंगल की भावना तथा जीवन के प्रति व्यापक दृष्टिकोण का भाव विद्यमान है। उनके साहित्य में प्रगतिवादी तथा प्रयोगवादी संवेदनाओं का मिश्रित चित्रांकन हुआ हे। उनके साहित्य के भाव पक्ष की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं :–

1. **प्रगतिवादी स्वर** – मुक्तिबोध मूलतः मार्क्सवादी चिंतन से प्रभावित थे। इसलिए उनके साहित्य में प्रगतिवादी चेतना की सफल अभिव्यक्ति हुई है। उन्होंने मज़दूरों का शोषण करने वाले पूंजीपति वर्ग का विरोध करते हुए प्रगतिवादी स्वर का परिचय दिया है। वह अपनी कविताओं में उस व्यवस्था के प्रति गहन आक्रोश व्यक्त करते हैं जिसके कारण मज़दूर, किसान तथा निर्धन लोग शोषितों का जीवन जीने के लिए विवश हुए हैं। वह ऐसी पूंजीवादी व्यवस्था पर कटाक्ष करते हुए कहते हैं :–

"त है मरण, तू है रिक्त, तू है व्यर्थ

तेरा ध्वंस केवल एक तेरा अर्थ"

2. **शोषित वर्ग के प्रति सहानुभूति** – मुक्तिबोध जी के साहित्य में शोषकों के प्रति घृणा तथा शोषितों के प्रति सहानुभूति अभिव्यक्त हुई है। वह समाज के दीन–हीन लोगों को आर्थिक शोषण से मुक्त कराना चाहते थे। उन्होंने अपनी अनेक कविताओं में शोषित वर्ग का मार्मिक चित्र अंकित किया है। वह शोषित समाज के प्रति संवेदना व्यक्त करते हुए कहते हैं :–

"गिरस्ति मौन माँ बहने

उदासी से रंगे गंभीर मुरझाये हुए प्यारे

गऊ चेहरे

निरखकर

पिघल उठता मन"

3. **समाज का यथार्थ चित्रण** – मुक्तिबोध मूलरूप से एक यथार्थवादी साहित्यकार थे। उन्होंने समाज को बहुत नज़दीक से देखा तथा परखा था। इसलिए उनके काव्य में समाज का यथार्थ चित्र अंकित हुआ है। वह समाज में फैली कुरीतियों, विसंगतियों तथा अमानवीय मूल्यों की यथार्थ अभिव्यक्ति करते हुए कहते हैं :–

"आज के अभाव के और कल के उपवास के

व परसों की मृत्यु के

दैन्य के महा अपमान के व क्षोभपूर्ण

भयंकर चिंता के उस पागल यथार्थ का

दिखता पहाड स्याह"

4. **निराशा वेदना एवं कुंठा का चित्रण** – मुक्तिबोध का जीवन संघर्षशील रहा है। उन्होंने जीवन के प्रत्येक पग पर ठोकरें खाई हैं। इसी के कारण उनके साहित्य में निराशा, वेदना एवं कुंठा की मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है। कवि के शब्दों में –

"दुख तुम्हें भी है,
दुख मुझे भी है
हम एक ढहे हुए मकान के नीचे
दबे हैं
चीख निकलना भी मुश्किल है
असंभव
हिलना भी"

5. **आत्माभिव्यक्ति** – छायावादी कवियों की भान्ति मुक्तिबोध के साहित्य में भी वैयक्तिकता का भाव मिलता है। परन्तु इनकी वैयक्तिकता, व्यक्तिगत होते हुए भी समाजोन्मुख है। इनके काव्य में अकेलेपन की प्रवृत्ति मिलती है परन्तु वह भी समाज के प्रति उन्मुख होती है। कवि 'चाँद का मुँह टेढा' में कहते हैं :–

"याद रखो
कभी अकेले में मुक्ति नहीं मिलती
यदि वह है तो सबके साथ ही"

6. **वर्गहीन समाज की परिकल्पना** – मुक्तिबोध एक ऐसे समाज की कल्पना करते थे जहाँ कोई छोटा–बड़ा शोषक–शोषित तथा गरीब–अमीर न हो। यह भावना उनकी अनेक कविताओं में प्रकट हुई है। वह वर्तमान समाज के प्रति चिंता व्यक्त करते हुए कहते हैं :–

"कविता में कहने की आदत नहीं, पर कह दूं

वर्तमान समाज चल नहीं सकता"

मुक्तिबोध के साहित्य का कला पक्ष

मुक्तिबोध के साहित्य के भावपक्ष के समान कला पक्ष भी विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उनके साहित्य के कलापक्ष को निम्नांकित बिन्दुओं में प्रस्तुत किया जा सकता है। :–

1. **शब्दावली** – मुक्तिबोध ने सामान्य जन जीवन में प्रचलित शब्दावली का प्रयोग किया है। उनकी भाषा में संस्कृत की तत्सम शब्दावली का प्रयोग तो है ही साथ ही अंग्रेज़ी, उर्दू, अरबी, फ़ारसी आदि भाषाओं के शब्दों का प्रयोग किया है।

2. **बिंब योजना** – मुक्तिबोध का बिंम्ब विधान श्रेष्ठ कोटि का है। उनकी कविताएँ बिम्बमयी हैं। वह जीवन का यथार्थ के निरूपण इस प्रकार करते हैं कि पाठक के समक्ष साक्षात चित्र उभर आता है। उन्होंने अपने काव्य में दृश्य, ध्वनि, स्पर्श, स्थिर, गत्यात्मक, प्राकृतिक, वैज्ञानिक आदि बिम्बों का प्रयोग किया है। स्पर्श बिम्ब का उदाहरण इस प्रकार है :–

"बालक लिपटा है मेरे गले से चुपचाप

छाती से, कंधे से चिपका है नन्हा–सा आकाश

स्पर्श है सुकुमार प्यार–भरा कोमल

किन्तु है भार का गंभीर अनुभव"

3. **व्यंग्य योजना** – व्यंग्य के माध्यम से समाज की विसंगतियों तथा करूपताओं पर चोट की जाती है। मुक्तिबोध ने भी अपने काव्य में समाज की विद्रूपताओं पर चोट करने के लिए व्यंग्य का प्रयोग किया है। उन्होंने 'मुझे कदम कदम पर' कविता में जन सामान्य की विवशता पर गहरा व्यंग्य किया है। यथा :–

"अजीब जिन्दगी है

वेवकूफ बनने के खातिर ही

सब तरफ अपने को लिए फिरता हूँ

और यह देख–देख बड़ा मज़ा आता

कि मैं ठगा जाता हूँ।"

4. **प्रतीक योजना** – मुक्तिबोध जी के साहित्य में प्रतीकों का सुन्दर प्रयोग मिलता है। उनके काव्य में प्राकृतिक प्रतीक, आध्यात्मिक प्रतीक, वैज्ञानिक प्रतीक आदि का सफल प्रयोग मिलता है। इनके काव्य में प्रतीकों का एक उदाहरण इस प्रकार है :–

"शिलाओं से बनी हुई

भीतों और अहातों के, काँच–टुकड़े– जमे हुए

ऊँचे–ऊँचे कंधो पर

चाँदनी की फैली हुई सँवलायी झालरें।।

5. **फैंटसी** – फैंटसी का सम्बन्ध कल्पना से है। मुक्ति बोध ने विशेषतः अपनी लम्बी कविता 'अंधेरे में' फैंटसी का प्रयोग जीवन के यथार्थ को अभिव्यक्त करने के लिए किया है।

6. **अलंकार योजना** – अलंकारों का प्रयोग काव्य को और अधिक प्रभावशाली तथा सुन्दर बनाने के लिए किया जाता है। मुक्त्बिोध ने अपने अपने काव्य को और अधिक समृद्ध तथा गंभीर बनाने के लिए अलंकारों का सहारा लिया है। उन्होंने मानवीकण, उपमा, रूपक उत्प्रेक्षा अनुप्रास आदि अलंकारों का प्रयोग किया है। उत्प्रेक्षा अलंकार का उदाहरण इस प्रकार है :–

"मकान मकान घुस

लोहे के गजों की जाली के झरोखें पार कर

लिपे हुए कमरों में

जेल के कपड़ों सी फैली है चाँदनी"

7. **छन्द योजना** – काव्य के संगीतात्मकता तथा गेयता लाने के लिए छन्दों का प्रयोग किया जाता है। मुक्तिबोध ने अपने काव्य में परम्परागत छन्दों के स्थान पर मुक्त छन्द का प्रयोग किया है।

अन्ततः कहा जा सकता है कि मुक्तिबोध का साहित्य भाव एवं कला पक्ष दोनों दृष्टियों से समृद्ध तथा उल्लेखनीय है।

'जन–जन का चेहरा एक' कविता का सार

गजानन माधव मुक्तिबोध कृत 'जन–जन का चेहरा एक' कविता साम्यवादी भावना से ओतप्रोत है जो विश्वबन्धुत्व का सन्देश देती है। कवि के अनुसार जन चाहे किसी भी देश, प्रांत अथवा गांव का हो वह मूलतः एक दूसरे से भिन्न नहीं होता प्रकृति भी इस संसार के प्रत्येक प्राणी के प्रति समान रूप से व्यवहार करती है। इसी के फलस्वरूप एशिया, यूरोप और अमेरिका जैसे द्वीपों पर पड़ने वाली सूर्य की किरणें समान रूप से प्रकाश तथा गर्मी डालती हैं। संसार के सभी प्राणी भी समान रूप से कष्ट सहन करते हैं। उनकी पीड़ा में कोई अन्तर नहीं होता। यदि कोई प्राकृतिक आपदा आती है तो सबको समान रूप से प्रभावित करती है यदि कोई इन्सान अत्याचारी बनकर अपने अत्याचारों का पहाड़ रूपी दुर्ग बना लेता है तो उसे मिटा देने के लिए कोई न कोई आशा रूपी लाल किरण शक्ति के रूप में प्रकट होती है।। अर्थात् शोषण का अन्त करने के लिए किसी न किसी का जन्म अवश्य होता है। इन्सान चाहे किसी भी गाँव, देश, प्रांत या द्वीप का हो उसका चेहरा, उसकी भावनाएं, उसके कष्ट तथा सुख एक समान होते हैं। जीवन के कष्ट व दुख सभी को प्रताड़ित करते हैं। कोई व्यक्ति चाहे एशिया से हो या यूरोप या अमेरिका से हो या व भौगोलिक और ऐतिहासिक बन्धन के कारण अलग–अलग ही क्यों न हो, वह समान रूप से शोषण की तलवार का वार सहता है। उस शोषण के विरोध में जन–जन के हृदय में आक्रोश की आग समान रूप से जगती रहती है। वह अक्रोश की आग ही क्रान्ति का रूप लेकर शोषकों का दमन करके सन्तोष प्रदान

करती है। पूरे संसार के जन क्रान्ति का स्वरूप एक सा होता है। क्रान्ति से प्राप्त विजय ही निर्माण व विकास का पथ प्रशस्त करती है। चाहे विश्व क किसी भी कोने में जन की बात की जाए, वह एक समान ही होते हैं।

'जन जन का चेहरा एक' की सप्रसंग व्याख्या

1. चाहे जिस देश, प्रांत पुर का हों
   जन जन का चेहरा एक
   एशिया की, यूरोप की, अमेरिका की
   गलियों की धूप एक।
   कष्ट–दुख सन्ताप की,
   चेहरों पर पड़ी हुई झुर्रियों का रूप एक!
   जोश में यों ताकत से बंधी हुई
   मुट्ठियों का एक लक्ष्य
   पृथ्वी के गोल चारों ओर के धरातल पर
   है जनता का दल एक, एक पक्ष।

शब्दार्थ – प्रान्त = प्रदेश, पुर = गाँव या बड़ी बस्ती, सन्ताप = पीड़ा, दल = समूह, लक्ष्य = उद्देश्य, पक्ष = तरफ, ओर ।

सन्दर्भ – प्रस्तुत पंक्तियाँ गजानन माधव मुक्तिबोध कृत 'जन–जन का चेहरा एक' से अवतरित की गई हैं।

प्रसंग – कवि की मान्यता यह है कि प्रकृति संसार के किसी भी प्राणी से भेदभाव नहीं करती चाहे वह व्यक्ति विश्व के किसी भी द्वीप का क्यों न हो। प्रस्तुत पद्यांश इसी ओर संकेत करता है।

व्याख्या – कोई व्यक्ति चाहे किसी भी देश, राज्य या गांव का हो वह एक ही है अर्थात् उनमें समानताएँ होती हैं। सूर्य अपनी किरणें समान रूप से पूरे संसार में बिखेरता है चाहे एशिया हो, यूरोप हो या अमेरिका हो सूर्य किसी से भेद–भाव नहीं करता। विश्व भर में इन्सान के जीवन में समान रूप से कष्ट एवं वेदना आती है। उस वेदना के सन्ताप से इन्सान के चेहरे पर जो झुर्रियां आती हैं वह भी एक सी ही होती हैं। भावार्थ यह है कि संसार के प्रत्येक व्यक्ति के शरीर पर दुःख समान रूप से प्रभाव डालता है। जब कोई व्यक्ति जोश से भर उठता है तो उसका एक मात्र लक्ष्य यही होता है कि वह अपने कष्टों एवं विरोधियों को मिटा दे। यह भाव संसार के सभी प्राणियों पर समान रूप से आता है। इस गोल पृथ्वी पर भले ही अलग अलग जन समूह है परन्तु उनकी भावनाएँ, उनकी विचारधारा, उनके कष्ट, दुख–सुख सब समान हैं।

विशेष :

1. साम्यवादी विचारधारा
2. मुक्त छन्द का प्रयोग
3. अनुप्रास अलंकार का प्रयोग
4. सामान्य बोल चाल की भाषा

2. जलता हुआ लाल कि भयानक सितारा एक
उद्दीपित उसका विकराल–सा इशारा एक
गंगा में, इरावती में, मिनाम में
अपार अकुलाती हुई।
भील–नदी, आमेज़न, मिसौरी में वेदना से
बहती–बहाती हुई जिंन्दगी की धारा एक,
प्यारा का इशारा एक, क्रोध का दुधारा एक
पृथ्वी का प्रसार
अपनी सेनाओं से किये हुए गिरफ्तार

गहरी काली छायाएं पसारकर

खड़े हुए शत्रु काले से पहाड़ पर

काला– काला दुर्ग एक,

जन शोषक शत्रु एक।

शब्दार्थ – उद्दीप्त = उगना, विकराल = डरावना, अकुलाती = बेचैन, वेदना = पीड़ा, दुधारा = दोहरी धार वाला, शत्रु = दुश्मन

सन्दर्भ – प्रस्तुत अवतरण मुक्तिबोध कृत 'जन–जन का चेहरा एक' नामक कविता में से लिया गया हैं।

प्रसंग – प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने जनसामान्य के प्रति प्रक1ति के विविध रूपों के योगदान के साथ–साथ जन शोषकों की करूपता की ओर संकेत किया है।

व्याख्या – प्रस्तुत पंक्तियों में कवि कहना चाहता है कि सूर्य जो पूरे संसार भर में ग्रह के रूप में एक भयानक सितारा माना जाता है। वह समान रूप से संसार भर में जला देने वाली गर्मी देता है। संसार में बहने वाली नदियों का पानी भी एक ही है। गंगा नदी, इरावती नदी, मिनाम नदी भील, आमेजन अथवा मिसौरी नदी की जलधारा समान है। अर्थात यह नदियाँ यदि लोगों को जीवन देती हैं, साथ ही बाढ़ के रूप में सब नष्ट करके वेदना भी देती हैं। इन सभी नदियों की प्रवृत्ति समान है। इस धरती पर एक तरफ तो आपसी भाईचारे और आत्मीयता के भाव हैं जो प्रेम और सुख की ओर संकेत करते हैं तो दूसरी तरफ शोषकों द्वारा किए जाने वाले शोषण और अत्याचार की दुधारी मार है जो संसार को दुख से भर देती है। संसार में शोषकों ने अपने–अपने शोषण का विस्तार कर लिया है और वे जन सामान्य को शोषण की चक्की में गिरफ्तार कर पीस रहे हैं। इन जन शोषकों ने अपने शोषण के दुर्ग बना लिए हैं जहाँ समान रूप से जन सामान्य का शोषण किया जा रहा है।

विशेष –

1. साम्यवादी विचारधारा का अंकन
2. मुक्त छन्द का प्रयोग
3. उपमा अनुप्रास अलंकार का प्रयोग

3. आशामयी लाल–लाल किरणों से अंधकार

चीरता–सा मित्र का स्वर्ग एक,

जन–जन का मित्र एक

विराट प्रकाश एक, क्रांति की ज्वालाा एक,

धड़कते वक्षों में है सत्य का उजाला एक,

लाख–लाख पैरों की मोच में है वेदना का तार

हिये में हिम्मत का सितारा एक।

चाहे जिस देश, प्रांत , पुर का हो

जन–जन का चेहरा एक।

शब्दार्थ – अन्धकार = अन्धेरा, विराट = बहुत बड़ा, क्रान्ति = विद्रोह , ज्वाला = आग की लपट, वक्षों = छातियों, हिये = हृदय

सन्दर्भ – प्रस्तुत अवतरण मुक्तिबोध कृत 'जन–जन का चेहरा एक' नामक कविता में से लिया गया है।

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण में कवि सूर्य तथा सत्य के पक्षधर व्यक्ति को क्रान्ति का दूत मानते हैं और साथ ही पूरे संसार के जनसामान्य की पीड़ा को एक ही कहते हैं।

व्याख्या – कवि के अनुसार जिस प्रकार सूर्य अपनी लाल लाल किरणों से अन्धकार मिटा सकता है उसी प्रकार एक क्रान्तिकारी व्यक्ति भी जन जन के मित्र के रूप में लोगों के कष्टों को दूर कर एक स्वर्ग रूपी संसार का सृजन कर सकता हे। ऐसा व्यक्ति संसार के जन सामान्य का मित्र कहलाता है। उनके हृदय में सत्य का उजाला भी एक सा ही होता है। संसार के सभी लोगों के पैरों में मोच आने के कारण जो दर्द होता है वह एक जैसा ही होता है। उनके हृदय में उस वेदना से लड़ने की हिम्मत भी एक जैसी ही होती है। जन सामान्य चाहे जिस भी गांव शहर प्रांत या देश का हो उनका चेहरा एक जैसा ही होता है।

विशेष – 1. विश्वबन्धुत्व की भावना

2. मुक्त छन्द का प्रयोग

3. तत्सम तद्भव शब्दों का प्रयोग

4. एशिया के, यूरोप के अमेरिका के

भिन्न–भिन्न वास–स्थान,

भौगोलिक, ऐतिहासिक बन्धनों के बावजूद,

सभी ओर हिन्दुस्तान, सभी ओर हिन्दुस्तानी।

सभी ओर बहनें हैं, सभी ओर भाई हैं।

सभी और कन्हैया ने गाये चरायी हैं।

जिन्दगी की मस्ती का अकुलाता भोर एक,

बंसी की धुन सभी भोर एक।

शब्दार्थ – भिन्न–भिन्न = अलग–अलग, वास = रहने का स्थान, कन्हैयाा = श्री कृष्ण, भारे = सुबह, अकुलाता = बेचैन

सन्दर्भ – प्रस्तुत पद्यांश मुक्तिबोध की साम्यवादी कविता 'जन–जन का चेहरा एक' में से लिया गया है।

प्रसंग – साम्यवादी विचारधारा से युक्त मुक्तिबोध प्रस्तुत कविता में विश्वबन्धुत्व की भावना का सन्देश देते हैं। प्रस्तुत अवतरण इसी ओर संकेत करता है।

व्याख्या – कवि के अनुसार एशिया, यूरोप, अमेरिका भी भिन्न–भिन्न वास स्थान है। इन स्थानों का रहन–सहन, खान–पान, संस्कृति आदि सब भिन्न–भिन्न हैं। इन स्थानों के भौगोलिक तथा ऐतिहासिक परिवेश में भी भिन्नताएँ हैं। इसके बावजूद भी सभी ओर भारत और भारतवासी है। अर्थात् सभी द्वीपों में भारतीय विचारधारा पाई जाती है। कवि के अनुसार पूरा संसार उन्हें भारतमयी दृष्टिगोचर होता है। पूरे संसार के लोग एक दूसरे के भाई–बहन हैं। सभी ओर कृष्ण ने अपने गायें चराई हैं। अर्थात् कृष्ण की विचारधारा 'गीता' के रूप में पूरे संसार में पाई जाती है। पूरे विश्व भर में जीवन की खुशी और सुबह की बेचैनी एक जैसी ही हे। बंसी की धुन सभी ओर एक समान सुनाई देती है।

विशेष – 1. खड़ी बोली का प्रयोग

2. छन्दमुक्त रचना

3. संसार की एकरूपता

5. दानव दुरात्मा एक

मानव की आत्म एक

शोषक और खूनी और चोर एक

जन–जन के शीर्ष पर,

शोषण का खड्ग अति घोर एक।

दुनिया के हिस्सों में चारों ओर

जन–जन का युद्ध एक।

शब्दार्थ – दानव = राक्षस, दुरात्मा = बुरी आत्मा, शीर्ष = सिर, खड़ग तलवार

सन्दर्भ – प्रस्तुत पंक्तियां गजानन माधव मुक्तिबोध द्वाा रचित कविता 'जन–जन का चेहरा एक' में से ली गई हैं।

प्रसंग – प्रस्तुत पद्यांश में लेखक शोषकों की दुर्नीति के साथ साथ जन–जन के आन्दोलन की ओर संकेत करते हैं।

व्याख्या – प्रस्तुत पंक्तियों में मुक्तिबोध कहते हैं कि विश्वभर में मानवता के विरोध में काम करने वाली दुरात्माएँ तथा राक्षसी प्रवृत्ति वाले लोग एक से ही हैं। मानवता का धर्म निभाने वाली पवित्र आत्माओं वाले लोग भी एक समान ही होते हैं। संसार में शोषण करने वाले, लोगों का खून करने वाले चोरी करने वाले लोग एक जैसे ही होते हैं औ हर जगह पाए जाते हैं। जन सामान्य का शोषण करने वाली तलवार भी एक जैसी ही है अर्थात् हर जगह शोषण की प्रक्रिया एक जैसी ही होती है। शोषण के विरोध में जन–जन का युद्ध भी हर जगह एक जैसा ही होता है।

विशेष – 1. सभी शोषकों का एक ही चरित्र

2. सामान्य भाषा का प्रयोग

3. छन्द मुक्त रचना

6. मस्तक की महिमा

व अन्तर की ऊष्मा

से उठती है ज्वाला अति क्रुद्ध एक।

संग्राम का घोष एक।

जीवन सन्तोष एक।

क्रान्ति का निर्माण का, विजय का सेहरा एक,

चाहे जिस देश, प्रान्त, पंर का हो

जन जन का चेहरा एक।

शब्दार्थ – ऊष्मा = गर्मी, ज्वाला = आग की लपट, संग्राम = युद्ध, विजय = जीत

सन्दर्भ – प्रस्तुत अवतरण मुक्तिबोध कृत 'जन जन का चेहरा एक' में से लिया गया है।

प्रसंग – मुक्तिबोध साम्यवाद से काफी प्रभावित थे। वह समाज में क्रान्ति के माध्यम से समता एवं सन्तोष लाने का सन्देश देते थे। इसी भाव की अभिव्यक्ति प्रस्तुत पद्यांश करता है।

व्याख्या – कवि के अनुसार संसार भर में जन सामान्य के मस्तिष्क व उनके हृदय में व्याप्त आक्रोश से क्रान्ति की ज्वाला उठती हे। पूरे विश्व में संग्राम की ध्वनि भी एक जैसी ही होती है और साथ ही शान्ति का भाव भी एक जैसा होता है। पूरे विश्व में क्रान्ति का भाव एक जैसा ही होता है। क्रान्ति से प्राप्त विजय और विजय जनित निर्माण की प्रक्रिया भी पूरे संसार में एक सी ही होती है। जन सामान्य चाहे जिस भी देश, प्रदेश या गांव का हो उसका चेहरा एक सा ही होता है अर्थात् संसार के सभी लोग एक समान ही होते हैं।

विशेष – 1. तत्सम, तद्भव शब्दों का प्रयोग

2. छन्द मुक्त रचना

3. गेयता का अभाव

'जन–जन का चेहरा एक' कविता का केन्द्रीय भाव/प्रतिपाद्य/उद्देश्य/सन्देश

गजानन मुक्तिबोध कृत 'जन–जन का चेहरा एक' नामक कविता अपने में एक विशिष्ट, अर्थ, भाव तथा सन्देश को समेटे हुए हैं। प्रस्तुत कविता में कवि संसार भर की जनता की एकरूपता तथा समान चिन्तनशीलता की ओर संकेत करते हुए विश्वबन्धुत्व का सन्देश देते हुए प्रतीत होते हैं। कवि की संवेदना विश्व के सभी देशों में संघर्षरत शोषित वर्ग के प्रति मुखरित हुई है, जो अपने मानवोचित अधिकारों के लिए संघर्षरत है। कवि इस कविता में यही बताना चाहता है कि व्यक्ति चाहे यूरोप एशिया या अमेरिका का क्यों न हो उसकी भावनाएँ दुख–दर्द, तथा उनके शोषण की प्रक्रिया एक समान है। संसार भर में निवास करने वाले समस्त जन सामान्य के शोषण तथा उत्पीड़न के प्रतिकार का स्वरूप भी एक जैसा है।

संसार भर में भाषा, संस्कृति तथा नवीन जीवन शैली के आधार पर लोगों में भिन्नता पाई जाती है। पूरे विश्व में भले ही ऐतिहासिक तथा भौगोलिक दृष्टि से अन्तर हो परन्तु लोगों के चेहरों पर हर्ष, विषाद, आशा तथा निराशा की प्रतिक्रिया एक जैसी होती है, उनकी समस्याओं से संघर्ष करने की पद्धति भी समान है। कहने का तात्पर्य यह है कि दुनिया भर का सामान्य जन अपने अधिकारों के लिए समान रूप से संघर्षरत है। और वह क्रान्ति के भाव तथा विश्वबन्धुत्व की भावना के साथ ही संसार में समता तथा समरसता आ सकती है। यह समानता तथा विश्वबन्धुत्व की भावना का सन्देश देना ही इस कविता का उद्देश्य है।

'जन जन का चेहरा एक' की भाषा शैली /कला पक्ष/शिल्प विधान

मुक्तिबोध के काव्य की कला आधुनिक हिन्दी साहित्य में अनूठी है। उन्होंने अपनी कविता 'जनजन का चेहरा एक' में भी इस अनूठेपन का परिचय दिया है। इस कविता के कला पक्ष को निम्नलिखित ढंग से देखा जा सकता है।

1. **भाषा** – इस कविता में कवि ने मुख्यतः खड़ी बोली का प्रयोग किया है। उनका प्रयास यही रहा है कि उसे आम बोलचाल की भाषा के निकट ही रखे। इसलिए यह कवितााा सरलतााा से समझ आ जाती है।

2. **शब्द चयन** – इस कविता में कवि ने तत्सम, तदभव के साथ–साथ ऊर्दू भाषा के शब्दों का प्रयोग किया है।

3. **मुक्त छन्द** – मुक्तिबोध की यह कविता परम्परागत छन्द के बन्धनों से मुक्त है। अर्थात् कवि ने मुक्त छन्द को ही प्रयोग में लाया है।

4. **अलंकार योजना** – अलंकारों की दृष्टि से भी यह कविता उल्लेखनीय है। कवि ने मुख्य रूप से उपमा, अनुप्रास तथा पुनरुक्ति अलंकारों का प्रयोग किया है।

अतः कहा जा सकता है कि उक्त कविता की भाषा शैली उत्कृष्ट कोटि की है।

अनामिका

समकालीन हिन्दी रचना की सशक्त कवयित्री अनामिका का जन्म 17 अगस्त 1961 ई. बिहार राज्य के मुजफ्फरपुर जिला में हुआ। इनके पिता श्री श्याम नंदन किशोर हिन्दी के विख्यात कवि थे। अनामिका का बचपन मुजफ्फरपुर में ही बीता। उनका विवाह डॉ. बिन्दु अमिताभ से हुआ।

विद्यालय की शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात इन्होंने पटना, लखनऊ और दिल्ली विश्वविद्यालयों से उच्च शिक्षा प्राप्त की। इन्होंने अंग्रेजी भाषा में शोध कार्य कर पी–एची.डी. की उपाधि प्राप्त की। वर्तमान में डॉ. अनामिका दिल्ली विश्वविद्यालय के सत्यवती कॉलेज में अंग्रेजी विभाग में रीडर पद पर कार्यरत हैं।

साहित्यिक परिचय

अंग्रेज़ी भाषा में रीडर होने के उपरान्त भी अनामिका ने हिन्दी साहित्य में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। बहुमुखी प्रतिभा की धनी लेखिका ने मात्र हिन्दी में ही नहीं अपितु अंग्रेज़ी साहित्य के क्षेत्र में भी अपना योगदान दिया है। डॉ. अनामिकी की रचनाओं का विवरण निम्नलिखित है :–

कविता – गलत पते की चिट्ठी, बीजाक्षर, समय के शहर में, अनुष्टुप, कविता में औरत, खुरदुरी हथेलियां, शीतल स्पर्श एक धूप को, दूबधान आदि।

कहानी – प्रतिनायक,

उपन्यास – पर कौन सुनेगा (1983), मन कृष्ण मन अर्जुन (1984 ई.), अवान्तर कथा (2000 ई.), दस द्वारे का पिंजरा (2008), तिनका–तिनके पास (2008), बिल्लू शेंक्सपियर : पोस्ट बस्तर (2014)

संस्मरण – एक ठो शहर, एक ठो लड़की, एक थे शेक्सपियर. एक थे चार्ल्स डिकेन्स

अनुवाद – नागमंडल, अब भी बसन्त को, एफरो–इंगलिश पोयमज, कहती हैं औरतें।

अंग्रेज़ी आलोचना – पोस्ट एलियट पोयट्री, डन क्रिटिसिज्म डाउन दि एज़ेज ट्रीटमेंट आफ लव एंड डेथ इन पोस्ट वार अमेरिकन विमेन पोएटस आदि।

हिन्दी आलोचना – स्त्रीत्व का मानचित्र, पानी तो पत्थर पीता है, मौसम बदलने की आहट, स्त्री विमर्श की उत्तर गाथा आदि।

सम्मान/पुरस्कार – डॉ. अनामिका को उनके लेखन के लिए विभिन्न पुरस्कार मिले हैं जिनमें से प्रमुख हैं – राजभाषा परिषद पुरस्कार (1987), भारतभूषण अग्रवाल पुरस्कार (1995),साहित्य सम्मान (1997), गिरिजा कुमार माथुर सम्मान (1998), परम्परा सम्मान (2001) आदि।

अनामिका के साहित्य का भाव पक्ष

भाव पक्ष की दृष्टि से अनामिका का साहित्य समृद्ध है। उनके साहित्य के भाव पक्ष को निम्नांकित बिन्दुओं में रेखांकित किया जा सकता है :–

1. **वैयक्तिकता** – किसी भी साहित्यकार के साहित्य में वैयक्तिकता का अंश अवश्य होता है। अनामिका का साहित्य भी इससे अछूता नहीं हे। उनकी शुरवाती कविताएँ में लेखिका ने निजी जीवन की अभिव्यक्ति की है। अपने मनोभावों को उद्‌घाटित करती हुई कवयित्री कहती है कि –

"गहन उस नीले सागर में
क्षीण फेनिल धाराएं प्लवित हैं।
मेरी नाव क्या उस पार लग पाएगी"

2. **प्रकृति प्रेम** – किसी भी संवेदनशील कवि में प्रकृति प्रेम होना स्वाभाविक है। अनामिका की आरम्भिक कविताओं में प्रकृति प्रेम स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। इनके पहले कहानी संग्रह 'शीतल स्पर्श एक धूप को' की अधिकतर कविताएँ प्रकृति को सम्बोधित करती हुई प्रतीत होती है। कवयित्री मनुष्य और प्रकृति का अटूट सम्बन्ध मानती है। 'बरसात का एक दिन', 'नभ का जुकाम', 'अम्बर को मलेरिया, आदि कविताएँ प्रकृति पर आधारित हैं।

3. **सामाजिक यथार्थ** – अनामिका एक यथार्थवादी लेखिका है। उनका समग्र साहित्य जीवन के विभिन्न अंशों की सच्ची तस्वी प्रस्तुत करता है। वह सामाजिक यथार्थ को इस प्रकार प्रस्तुत करती है कि पाठक के हृदय पर उसका गहरा प्रभाव पड़ता है।

4. **नारी जीवन** – अनामिका के साहित्य का मुख्य पक्ष नारी जीवन है। उनके साहित्य में नारी जीवन के विभिन्न पक्ष जैसे दहेज प्रथा, नारी शोषण, नारी उत्पीड़िन, नारी स्वतन्त्रता आदि को उद्‌घाटित किया गया हैं। नारी मन की जिज्ञासा की ओर संकेत करती हुई कवयित्री कहती है कि –

"सुनो हमें अनहद की तरह

और समझो जैसे समझी जाती है

नई–नई सीखी हुई भाषा"

5. **सामाजिक विसंगतियों का निरूपण** – साहित्य समाज का दर्पण कहलाता है। साहित्य में समाज और उसमें पाई जाने वाली विसंगतियों की विशेष रूप से अभिव्यक्ति की जाती है। अनामिका के साहित्य में भी विभिन्न सामाजिक विसंगतियों जैसे जातिवाद, अराजकता, धार्मिक संकीर्णता, राजनीतिक भ्रष्टाचार आदि की सफलता से अभिव्यक्ति हुई है।

6. **बहुमुखी प्रतिभा** – अनामिका के साहित्य की अन्य विशेषता यह है कि उसमें उनकी बहुमखी प्रतिभा स्पष्ट रूप से झलकती है। उन्होंने मात्र कविता ही नहीं लिखी बल्कि कहानी, उपन्यास, संस्मरण, आलोचना तथा अनुवाद के क्षेत्र में भी अपना मूल्यवान योगदान दिया है।

अनामिका के साहित्य का कला पक्ष

भाव पक्ष के समान अनामिका के साहित्य का कलापक्ष भी सुदृढ़ है। उनके साहित्य के कलापक्ष की विशेषताओं को निम्न बिन्दुओं में विभाजित किया जा सकता है।

1. **भाषा–शैली** – अनामिका ने अपने साहित्य में विशेष रूप से हिन्दी खड़ी बोली का प्रयोग किया है। इनकी भाषा बोल–चाल के अधिक निकट है।

2. **शब्द योजना** – लेखिका ने अपने साहित्य में अवश्यकता अनुसार हिन्दी, ऊर्दू, अंग्रेज़ी के साथ–साथ कहीं–कहीं तत्सम शब्दावली का भी प्रयोग किया है।

3. **छन्द मुक्तता** – अनामिका का काव्य छन्दों के बन्धन से मुक्त है। अर्थात् इन्होंने मुक्त छन्द का प्रयोग किया है। इसके कारण इनके काव्य में गेयता तथा लयात्मकता का अभाव है।

4. **बिम्ब विधान** – कवयित्री ने अपने काव्य में बिम्बों काा सुन्दर तथा स्वाभाविक प्रयोग किया है। बिम्बों का प्रयोग इस प्रकार हुआ है कि पाठक के समक्ष एक चित्र उभर आता है। ध्वनि बिम्ब का उदाहरण इस प्रकार है –

"एक अदृश्य टहनी से
टिड्डियाँ उड़ी और रंगीन अफवाहें
चीखती हुई चीं–चीं–

5. **प्रतीक योजना** – बिम्बों के समान की कवयित्री ने प्रतीकों का भी सुन्दर तथा सहज प्रयोग किया है। सांस्कृतिक प्रतीक का प्रयोग करते हुए कवयित्री कहती है कि –

"सुनो हमें अनहद की तरह
और समझो जैसे समझी जाती है
नई नई सीखी हुई भाषा"

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि अनामिका का साहित्य भाव एवं कला की दृष्टि से उत्कृष्ट है।

अनामिका की कविता 'स्त्रियाँ' का सार

डॉ. अनामिका की कविता 'स्त्रियाँ' स्त्री के जीवन का यथार्थ निरूपण करने वाली प्रसिद्ध एवं सटीक रचना है। समाज में आज भी नारी जाति का एक बहुत बड़ा वर्ग असहाय जीवन जीने के लिए विवश है। नारी अभी भी पुरुष समाज के अधीन ही जीवनयापन कर रही है। आज भी वे पूर्ण रूप से स्वतन्त्र नहीं हैं। उसे घर में किसी बच्चे की फटी पुरानी कॉपी के कागज से बने लिफाफे की तरह समझा जाता है। अर्थात् उसे घर में सम्मान नहीं दिया जाता। नारी को पुरुष समाज ठीक उसी भाँति देखता है जैसे सुबह कोई आलस से जागते समय घड़ी को देखता है। अर्थात् नारी को सम्मान की दृष्टि से नहीं देखा जाता। नारी की स्थिति ठीक उसी सस्ते कैसेट के समान समझी जाती है जिसके गाने कोई नहीं सुनना चाहता। नारी

को ठीक उसी पत्रकार भोगा जाता है जैसे किसी दूर के रिश्तेदार के दुख को भोगा जाता है और नारी ने जब भी अपने अधिकार की बात की, अपने सम्मान और समता की बात की तो उसे दुश्चरित्त महिला कहकर लांछित किया जाता है। उसके बारे में तरह–तरह की अफवाहें फैला दी जाती हैं। उन्हें कनखियों से देखा जाता है। नारी जाति इस प्रकार की सामाजिक व्यवस्था से तंग आकर पुरुष समाज से कह उठती है कि अब हमें हमारी स्थिति पर छोड़ दो। हमें अपने निर्णय लेने का अधिकार देकर हमें बक्श दो।

स्त्रियां कविता की सप्रसंग व्याख्या

1. पढ़ गया हमको
   जैसे पढ़ा जाता है कागज
   बच्चे की फटी कॉपियों का
   चनाजोरगरम के लिफाफे बनाने के पहले!
   देखा गया हमको
   जैसे की कुफ्त ही उनींदे
   देखी जाती है कलाई घड़ी
   अलस्सूबह अलार्म बजने के बाद
   सुना गया हमको
   यो ही उड़ते मन से
   जैसे सुने जाते हैं फिल्मी गाने
   सस्ते कैसेटों पर
   ठसाठस्स ठुँसी हुई बस में!

शब्दार्थ – कुफ्त = क्रोधित, उनींदे = कच्ची नींद, अलस्सूबह : सवेरे–सवेरे

सन्दर्भ – प्रस्तुत अवतरण डॉ. अनामितका कृत कविता स्त्रियाँ में से लिया गया हैं।

प्रसंग – आज के समाज मं भी नारी को सम्मान की दृष्टि से नहीं देखा जाता। आज भी वह बराबरी के अधिकार से वंचित है। प्रस्तुत पद्यांश इस ओर संकेत करता है।

व्याख्या – प्रस्तुत पद्यांश में लेखिका कहती है कि आज के आधुनिक समाज में स्त्री को मान–सम्मान नहीं दिया जाता । उन्हें कॉपी के कागज समान व्यर्थ समझा जाता है जिसका प्रयोग चनाजोरगरम के लिफाफे बनाने के लिए किया जाता है। नारी जाति को ठीक ऐसे देखा जाता है जैसे सुबह सवेरे उठते समय अलसाई हुई आँखों से बड़ी अनिच्छा से कलाई में पहनी घड़ी को देखा जाता है। घर–परिवार में नारी को इतना ही महत्व दिया जाता है। समाज में नारी जाति की स्थिति ठीक उस सस्ती कैसेट की तरह है जिसे सवारियों से ठसाठस्स भरी हुई बस में बड़ी अनिच्छा से सुना जाता है। भावार्थ यह है कि इस पुरुषवादी समाज में नारी को समानता और सम्मान का अधिकार नहीं दिया जाता।

विशेष –
1. आज की नारी का वास्तविक चित्र
2. छन्द मुक्त काव्य
3. बोलचाल की भाषा का प्रयोग

2. भोगा गया हमको
बहुत दूर के रिश्तेदारों के
दुःख की तरह!
एक दिन हमने कहा
हम भी इंसान हैं –
हमें कायदे से पढ़ो एक–एक अक्षर
जैसे पढ़ा होगा बी.ए. के बाद
जैसे कि ठिठुरते हुए देखी जाती है
बहुत दूर जलती हुई आग

सुनो हमें अनहद की तरह

और समझो जैसे समझी जाती है

नई–नई सीखी हुई भाषा

शब्दार्थ – कायदे = नियम, अनहद = ध्यान मग्न होने पर कानों में आने वाली ध्वनि

सन्दर्भ – प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रतिभाशाली कवयित्री अनामिका की कविता 'स्त्रियाँ' में से ली गई हैं।

प्रसंग – आधुनिक नारी सजग हो चुकी है। वह केवल अपने दुःखों का रोना ही नहीं रोती बल्कि अपने सम्मान व समता की बात भी करती है। प्रस्तुत अवतरण इसी ओर संकेत करता है।

व्याख्या – कवयित्री के अनुसार नारी को अपेक्षित मान–सम्मान नहीं दिया जाता। उन्हें घर में आज भी बहुत दूर के रिश्तेदारों के जीवन में आए दुःख के समान समझा जाता है। अर्थात् जिस प्रकार लोगों को दूर के रिश्तेदारों के दुःख में कोइ रुचि नहीं होती ठीक उसी प्रकार घर की स्त्री के दुःख में भी कोई रुचि नहीं होती। इस कविता के माध्यम से लेखिका स्त्री के सम्मान की बात करती हुई कहती है कि उनको भी उसी प्रकार ध्यानपूर्वक समझा जाए जैसे कोई बी.ए. की पढ़ाई के बाद ध्यान से एक–एक अक्षर पढ़ा जाता है। अर्थात् स्त्री के दुःख–दर्द आदि पर भी ध्यान दिया जाए। आज की स्त्री कहती है कि हमें भी इस प्रकार महत्व दिया जाए जैसे शार्दी में ठिठुरता हुआ व्यक्ति दूर जलती हुई आग को देखता है। कवयित्री के अनुसार पुरुष समाज को स्त्री को ठीक उसी भान्ति समझने का प्रयास किया जाना चाहिए जैसे नई–नई सीखी हुई भाषा को समझने के लिए किया जाता है। भावार्थ यह है कि स्त्री को भी समाज मे महत्त्व दिया जाना चाहिए।

विशेष –

1. स्त्रियों के अधिकार की बात की गई है।
2. खड़ी बोली के साथ ऊर्दू तथा तत्सम शब्दों का प्रयोग
3. अनुप्रास अलंकार का प्रयोग

4. इतना सुनना था कि अधर में लटकती हुई

एक अदृश्य टहनी से

टिड्डियाँ उडी और रंगीन अफवाहें

चीखती हुई चीं–चीं

दुश्चरित्र महिलाएँ, दुश्चरित्र

महिलाएँ –

किन्हीं सरपरस्तों के दम पर फूली–फली

अगरधत्त जंगली लताएँ!

खाती–पीती सुख से ऊबी

और बेकार, बेचैन, आवारा महिलाओं

का ही

शगल हैं ये कहानियाँ और कविताएँ

फिर ये उन्होंने थोड़े ही लिखी हैं।

(कनखियाँ, इशारे, फिर कनखी)

बाकी कहानी बस कनखी है।

हे परमपिताओं

परमपुरुषो –

बख्शो, बख्शो, अब हमें बख्शो!

शब्दार्थ – अधर = बीच में, अदृश्य = न दिखाई देने वाला, दुश्चरित्र = बुरा चरित्र, सरपरस्त = देखभाल करने वाला, कनखियाँ = तिरछी आँखों से देखना।

सन्दर्भ – प्रस्तुत अवतरण बहुमुखी प्रतिभा की धनी लेखिका डॉ. अनामिका का स्त्री जीवन पर आधारित कविता 'स्त्रियाँ' में से अवतरित किया गया है।

प्रसंग – आज की नारी सजग हो गई है। परन्तु जब भी वह अपने अधिकारों की बात करती है तो उस पर तरह–तरह के आक्षेप लगा दिए जाते हैं। प्रस्तुत पद्यांश इसी ओर इशारा करता है।

व्याख्या – कवियित्री अनामिका के अनुसार जब–जब नारी अपने मान–सम्मान, अधिकार की बात करती है, तब–तब पुरुषवादी समाज द्वारा विभिन्न प्रकार के आक्षेप लगाकर उसे बदनाम करने का प्रयत्न करता है। कभी तो यह अदृश्य पुरुषवादी मानसिकता नारी को दुश्चरित्र करके लांछित करती है तो कभी उसे बेकार, आवारा सुख से ऊबी हुई नारी कहके उसके अस्तित्व पर प्रश्न चिह्न लगाये जाते हैं। उसे कहा जाता है कि तुम किसी पुरुष सरपरस्त का सहारा लेकर ऊँचा बनने का प्रयास करती हो। अर्थात् पुरुषवादी मानसिकता के अनुसार स्त्री अपने दम पर जीवन व्यतीत नहीं कर सकती। उनके अनुसार उसकी स्थिति ठीक उस लता के समान होती है जो वृक्ष रूपी पुरुष का सहारा लेकर ऊपर उठती है। समाज की मानसिकता कुछ इस प्रकार की है कि यदि स्त्री आने अधिकार की बात साहित्य के माध्यम से या बोल कर करती है तो उसे कनखियाँ से देखा जाता है और उसके प्रति गंदे–गंदे इशारे किए जाते हैं। कवयित्री ऐसी पुरुषवादी मानसिकता का विरोध करती हुए कहती हैं कि हे परमपिताओ पुरुषों अब हम बख्शो। अर्थात् हमें हमारे जीवन को जीने की स्वतन्त्रता दो।

विशेष –

1. नारी के प्रति पुरुष मानसिकता का उद्‌घाटन
2. छन्द मुक्त रचना
3. ऊर्दू शब्दों का प्रयोग
4. व्यंग्य का प्रयोग

'स्त्रियाँ' कविता का प्रतिपाद्य/केन्द्रीय भाव/ उद्देश्य/सन्देश

डॉ. अनामिका कृत 'स्त्रियाँ' कविता नारी जीवन पर आधारित एक महत्त्वपूर्ण रचना है। इसके माध्यम से लेखिका यह बताना चाहती है कि पितृसत्तात्मक समाज में नारी की स्थिति दयनीय है। वह उस मान–सम्मान से वंचित है जिसकी वास्तव में उसकों आवश्यकता है। उसे या तो एक रद्‌दी कागज के समान समझा जाता है या तो किसी सस्ती कैसेट के गाने के समान अनिच्छा से सुना जाता है। कभी उसे दूर के सम्बन्धी के दुख के समान अनदेखा किया जाता है तो कभी बात–बात पर दुत्कारा जाता है। परन्तु

स्त्री जाति की यह मनोकामना है कि उसे मान दिया जाये। उसे भी उस प्रकार महत्त्व दिया जाए जैसे ठण्ड में आग को दिया जाता है। उसे भी वह स्थान दिया जाए जो व्यक्ति के जीवन में शिक्षा को दिया जाता हे। परन्तु वस्तु स्थिति कुछ ओर है। जब जब नारी पुरुष के साथ बराबरी के अधिकार की बात करती है तो उसो दुश्चरित्र कह कर तरह–तरह की अफवाहें उसके बारे में फैला दी जाती है। कवयित्री इस पुरुषवादी मानसिकता से मुक्ति का आह्वान करती है। नारी जाति की स्वतन्त्रता, मुक्ति, सम्मान तथा अधिकार की बात करना ही इस कविता का सन्देश भी है और उद्देश्य भी।

'स्त्रियाँ' कविता की भाषा शैली/शिल्प पक्ष/कला पक्ष

डॉ. अनामिका की कविता 'स्त्रियाँ' मूलतः भाव पक्ष की दृष्टि से जितनी महत्वपूर्ण है उतनी ही सहज सरल तथा हृदयगामी शिल्प पक्ष की दृष्टि से है। स्त्रियाँ कविता का कलापक्ष निम्नांकित बिन्दुओं में देखा जा सकता है –

1. **भाषा** – अनामिका ने इस कविता में मूलतः खड़ी बोली का प्रयोग किया है। उनका प्रयास यही रहा है कि वह कविता की भाषा को बोलचाल की भाषा के निकट रखें।

2. **शब्द चयन** – कविता में सहजता लाने के लिए कवयित्री ने विभिन्न भाषाओं के शब्दों का चयन किया है। जैसे –

ऊर्दू – कागज, कायदे, अफवाहें

अंग्रेंज़ी – अलार्म फिल्मी, कैसेट

तत्सम – अक्षर, अदृश्य

तद्भव – ठसाठस्स ठुँसी

3. **बिम्ब विधान**– कवियत्री ने कविता को हृदयगामी बनाने के लिए बिम्बों का प्रयोग भी किया है जो स्वाभाविक प्रतीत होताा है। ध्वनि बिम्ब का उदाहरण इस प्रकार है –

"एक अदृश्य टहनी से

टिड्डियाँ उड़ीं और रंगीन अफवाहें

चीखती हुई चीं–चीं"

4. **व्यंग्य योजना** – इस कविता के अन्तिम चरण में लेखिका ने पितृसत्तात्मक समाज पर व्यंग्य भी कसा है। वह पुरुष समाज पर व्यंग्य करती हुई कहती है –

"हे परम पिताओ

परम पुरुषो

बख्शो, बख्शो, अब हमें बख्शो"

5. **प्रतीक योजना** – कवयित्री ने अपनी कविता 'स्त्रियाँ'में प्रतीकों का भी सुन्दर स्वाभाविक प्रयोग किया है। सांस्कृतिक प्रतीक का उदाहरण इस प्रकार है –

"सुनो हमें अनहद की तरह

और समझो जैसे समझी जाती है

नई–नई सीखी हुई भाषा"

अंत में कह सकते हैं कि अनामिका की कविता 'स्त्रियाँ' भाषा शैली की दृष्टि से उल्लेखनीय है।

UNIVERSITY OF JAMMU

SEMESTER-IST

B.A.(U.G) PROGRAMME UNDER CBCS IN THE SUBJECT OF HINDI LANGUAGE (हिन्दी भाषा)

बी.ए. सत्र – प्रथम

COURSE CODE : UHILTC - 101 **TITLE : काव्य एवं व्याकरण**

CREDITS - 06

इकाई – 4

1. संधि – परिभाषा एवं भेद
2. पत्र लेखन
3. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

डॉ. बन्दना ठाकुर
राजकीय महाविद्यालय, नौशहरा (राजौरी)

डॉ. जगमोहन शर्मा
राजकीय महाविद्यालय, किलोतरान (डोडा)

भाग (ख) – व्याकरण

इकाई – चार

1. संधि – परिभाषा एवं भेद
2. पत्र लेखन
3. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

अध्याय की रूपरेखा

4.1 उद्देश्य

4.2 प्रस्तावना

4.3 संधि अर्थ एवं परिभाषा

4.4 संधि के भेद

4.1 उद्देश्य

इस अध्याय को पढ़ने के बाद आप बता सकेंगे कि –

- संधि शब्द का अर्थ तथा परिभाषा क्या है?
- संधि करते समय हमें किन–किन नियमों का पालन करना है, समझ सकेंगे।
- संधि के भेदों के विषय में विस्तृत जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

4.2 प्रस्तावना

संधि (सम्+धि) शब्द का अर्थ है 'मेल' या 'जोड़'। दो निकटवर्ती वर्णों के परस्पर मेल से जो विकार (परिवर्तन) होता है वह संधि कहलाता है। संस्कृत, हिन्दी तथा अन्य भाषाओं में परस्पर स्वरों या वर्णों के मेल से उत्पन्न विकार को संधि कहते हैं। जैसे – सम्+तोष = संतोष; देव+इंद्र = देवेंद्र; भानू+उदय = भानूदय।

4.3 संधि अर्थ एवं परिभाषा

संधि का अर्थ – संधि का साधारण अर्थ है मेल। दो वर्णों के निकट आने से उनमें जो विकार होता है, उसे 'सन्धि' कहते हैं। इस प्रकार संधि करते समय दो वर्णों का निकट होना आवश्यक होता है, क्योंकि दूरवर्ती शब्दों या वर्णों में संधि नहीं होती है। वर्णों की इस निकट स्थिति को ही संधि कहते हैं। अतः संक्षेप में यह समझना चाहिए कि दो वर्णों के पास–पास आने से उनमें जो परिवर्तन या विकार होता है, उसे सन्धि कहते हैं।

संधि की परिभाषा – "पास–पास स्थित पदों के समीप विद्यमान वर्णों के मेल से होने वाले विकार को संधि कहते हैं।"

उदाहरण : देव+ आलय = देवालय

जगत्+नाथ = जगन्नाथ

मनः+ योग = मनोयोग

संधि विच्छेद – संधि के नियमों द्वारा मिले वर्णों को फिर मूल अवस्था में ले आने को संधि–विच्छेद कहते हैं।

उदाहरण : परीक्षार्थी = परीक्षा+अर्थी

वागीश = वाक्+ईश

अंतःकरण = अंतः+करण

4.4 संधि के भेद

संधि के पहले वर्ण के आधार पर संधि के तीन भेद किये जाते हैं – स्वर–संधि, व्यंजन संधि व विसर्ग संधि। संधि का पहला वर्ण यदि स्वर हो तो स्वर–संधि (जैसे नव+आगत = नवागत; संधि का पहला वर्ण 'व' – अ – स्वरवाला है), संधि का पहला वर्ण यदि व्यंजन वर्ण हो तो 'व्यंजन संधि' (जैसे वाक्+ईश = वागीश, संधि का पहला वर्ण 'क्' व्यंजन वर्ण है) एवं संधि का पहला वर्ण यदि विसर्ग हो तो विसर्ग संधि (जैसे मनः+रथ = मनोरथ, संधि का पहला वर्ण 'नः' विसर्गयुक्त है) होती है।

स्वर–संधि – स्वर के बाद स्वर अर्थात् दो स्वरों के मेल से जो विकार (परिवर्तन) होता है, स्वर–संधि कहलाता है; जैसे –

सूर्य+अस्त = सूर्यास्त महा+ आत्मा = महात्मा

स्वर–संधि के निम्नलिखित पाँच भेद हैं –

1. दीर्घ–संधि
2. गुण–संधि

3. वृद्धि–संधि

4. यण–संधि और

5. अयादि संधि

नोट :– आ, ई, ऊ को 'दीर्घ', अ, ए, ओ को 'गुण', ऐ, औ को 'वृद्धि'; य, र, ल, व को यण् एवं अय, आय, अव आव ... को अयादि' (अय+आदि) कहते हैं।

(i) दीर्घ–संधि – ह्रस्व या दीर्घ 'अ', 'इ', 'उ' के पश्चात् क्रमशः ह्रस्व या दीर्घ 'अ', 'इ', 'उ' स्वर आएं तो दोनों को मिलाकर दीर्घ 'आ', 'ई', 'ऊ' हो जाते हैं, जैसे –

अ + अ = आ	धर्म + अर्थ = धर्मार्थ
	स्व + अर्थी = स्वार्थी
	देव + अर्चन = देवार्चन
	वीर + अंगना = वीरांगना
	मत + अनुसार = मतानुसार
अ + आ = आ	देव + आलय = देवालय
	नव + आगत = नवागत
	सत्य + आग्रह = सत्यग्रह
	देव + आगमन = देवागमन
आ +अ = आ	परीक्षा + अर्थी = परीक्षार्थी
	सीमा + अंत = सीमांत
	दिशा + अंतर = दिशांतर

	रेखा + अंश = रेखांश
आ + आ = आ	महा + आत्मा = महात्मा
	विद्या + आलय = विद्यालय
	वार्ता + आलाप = वार्तालाप
	महा + आनन्द = महानंद
इ + इ = ई	अति + इव = अतीव
	कवि + इंद्र = कवींद्र
	मुनि + इंद्र = मुनींद्र
	कपि + इंद्र = कपींद्र
	रवि + इंद्र = रवींद्र
इ + ई = ई	गिरि + ईश = गिरीश
	परि + ईशा = परीक्षा
	मुनि + ईश्वर = मुनीश्वर
	हरि + ईश = हरीश
ई + ई = ई	मही + इंद्र = महींद्र
	योगी + इंद्र = योगींद्र
	शची + इंद्र = शचींद्र
	लक्ष्मी + इच्छा = लक्ष्मीच्छा
ई + ई = ई	रजनी + ईश = रजनीश
	योगी + ईश्वर = योगीश्वर
	जानकी + ईश = जानकीश

	नारी + ईश्वर = नारीश्वर
उ + उ = ऊ	भानु + उदय = भानूदय
	विधु + उदय = विधूदय
	गुरू + उपदेश = गुरूपदेश
	लघु + उत्तर = लघूत्तर
उ + ऊ = ऊ	लघु + ऊर्मि = लघूर्मि
	धातु + ऊष्मा = धातूष्मा
	सिंधु + ऊर्मि = सिंधूर्मि
	साधु + ऊर्जा = साधूर्जा
ऊ + उ = ऊ	वधू + उत्सव = वधूत्सव
	भू + उत्सर्ग = भूत्सर्ग
	वधू + उपकार = वधूपकार
	भू + उद्धार = भूद्धार
ऊ + ऊ = ऊ	सरयू + ऊर्मि = सरयूर्मि
	भू + ऊष्मा = भूष्मा
	वधू + ऊर्मि = वधूर्मि
	भू + ऊर्जा = भूर्जा

(ii) गुण संधि – यदि 'अ' और 'आ' के बाद 'इ' या 'ई', 'उ' या 'ऊ' और 'ऋ' स्वर आए तो दोनों के मिलने से क्रमशः 'ए', 'ओ' और 'अर्' हो जाते हैं; जैसे –

अ + इ = ए	नर + इंद्र = नरेंद्र
	सुर +इंद्र = सूरेंद्र

	पुष्प + इंद्र = पुष्पेंद्र
	सत्य + इंद्र = सत्येंद्र
अ + ई = ए	नर + ईश = नरेश
	परम + ईश्वर = परमेश्वर
	सोम + ईश = सोमेश
	कमल + ईश = कमलेश
आ + इ = ए	रमा + इंद्र = रमेंद्र
	महा + इंद्र = महेंद्र
	यथा + इष्ट = यथेष्ट
	राजा + इंद्र = राजेंद्र
आ + ई = ए	महा + ईश = महेश
	उमा + ईश = उमेश
	राका + ईश = राकेश
	रमा + ईश = रमेश
अ + उ = ओ	वीर + उचित = वीरोचित
	मानव + उचित = मानवोचित
	पर + उपकार = परोपकार
	हित + उपदेश = हितोपदेश
अ + ऊ = ओ	सूर्य + ऊर्जा= सूर्योजा
	नव + ऊढ़ा = नवोड़ा
	जल + ऊर्मि = जलोर्मि

	समुद्र + ऊर्मि = समुद्रोर्मि
आ + उ = ओ	महा + उदय = महोदय
	महा + उत्सव = महोत्सव
	महा + उष्ण = महोष्ण
	महा + उद्धि = महोदधि
	गंगा + उदक = गंगोदक
आ + ऊ = ओ	दया + ऊर्मि = दयोर्मि
	महा + ऊर्जा = महोर्जा
	महा + ऊर्मि = महोर्मि
	महा + ऊष्मा = महोष्मा
अ + ऋ = अर्	देव + ऋषि = देवर्षि
	सप्त + ऋषि = सप्तर्षि
	राज + ऋषि = राजर्षि
	ब्रह्म + ऋषि = ब्रह्मर्षि
अ + ऋ = अर्	महा + ऋषि = महर्षि

(iii) वृद्धि संधि – 'अ' या 'आ' के बाद 'ए' या 'ऐ' आए तो दोनों के मेल से 'ऐ' हो जाता है तथा 'अ' और 'आ' के पश्चात 'ओ' या 'औ' आए तो दोनों के मेल से 'औ' हो जाता है, जैसे –

अ + ए = ऐ	एक + एक = एकैक
	लोक + एषण = लोकैषणा

अ + ऐ = ऐ	मत + ऐक्य = मतैक्य
	धन + ऐश्वर्य = धनैश्वर्य
आ + ए = ऐ	सदा + एव = सदैव
	तथा + एव = तथैव
अ + ऐ = ऐ	महा + ऐश्वर्य = महैश्वर्य
अ + ओ = औ	परम + ओज = परमौज
	वन + ओषधि = वनौषधि
	जल + औध = जलौध
	परम + ओजस्वी = परमौजस्वी
	अधर + ओष्ठ = अधरौष्ठ
आ + ओ = औ	महा + ओज = महौज
	महा + ओध = महौध
अ + औ = औ	वन + औषध = वनौषध
	परम + औदार्य = परमौदार्य
	परम + औषध = परमौषध
	अत्यन्त + औदार्य = अत्यन्तौदार्य
आ + औ = औ	महा + औषध = महौषध
	महा + औदार्य = महौदार्य

(iv) यण संधि – जब 'इ' या 'ई' के बाद 'इ' वर्ण के अतिरिक्त कोई अन्य स्वर आता है तो इ–ई के स्थान पर 'य'; यदि 'उ' या 'ऊ' के बाद 'उ' वर्ण के अतिरिक्त कोई अन्य स्वर आता है तो 'उ' या 'ऊ' के

स्थान पर व तथा ऋ के बाद ऋ के अतिरिक्त कोई भिन्न स्वर आता है तो ऋ का 'र' हो जाता है। जैसे –

इ + अ = य	यदि + अपि = यद्यपि
	अति + अधिक = अत्यधिक
इ + आ = या	अति + आचार = अत्याचार
	प्रति + आशा = प्रत्याशा
	अति + आनन्द = अत्यानन्द
इ + उ = यु	अभि + उदय = अभ्युदय
	प्रति + उपकार = प्रत्युपकार
	अति + उक्ति = अत्युक्ति
	वि + ऊह = व्युह
इ + उ = यू	प्रति + ऊश = प्रत्यूष
	नि + ऊन = न्यून
	नदी + अन्तर = नद्यन्तर
	प्रति + उत्तर = प्रत्युत्तर
इ + ए = ये	प्रति + एक = प्रत्येक
	अधि + एषणा = अध्येषणा
ई + आ = या	देवी + आगमन = देव्यागमन
	सखी + आगमन = सख्यागमन
ई + ऐ = यै	सखी + ऐश्वर्य = सख्यैश्वर्य
	नदी + ऐश्वर्य = नद्यैश्वर्य

अ + अ = व	सु + अच्छ = स्वच्छ
	सु + अल्प = स्वल्प
उ + आ = वा	सु + आगत = स्वागत
	मधु + आलस्य = मध्वालय
उ + इ = वि	अनु + इति = अन्विति
	अनु + इत = अन्वित
उ + ए = वे	प्रभु + एषणा = प्रभ्वेषणा
	अनु + एषण = अन्वेषण
उ + ओ = वो	गुरू + ओदन = गुवोदन
ऊ + आ = वा	वधू + आगमन = वध्वागमन
	भू + आदि = भ्वादि
ऋ + अ = र	पितृ + अनुमति = पित्रनुमति
	मातृ + अनुमति = मात्रनुमति
ऋ + आ = रा	मातृ + आदेश = मात्रादेश
	मातृ + आनन्द = मात्रानंद
ऋ + इ = रि	मातृ + इच्छा = मात्रिच्छा
	पितु + इच्छा = पित्रिच्छा

(अ) अयादि संधि – 'ए' या 'ऐ' वर्ण के अतिरिक्त कोई अन्य स्वर आता है तो 'ए' का 'अय' तथा 'ऐ' का 'आय' हो जाता है यदि 'ओ' या 'औ' के बाद 'ओ' वर्ण के अतिरिक्त कोई अन्य स्वर आता है तो 'ओ' का 'अव' तथा 'औ' का 'आव' हो जाता है। जैसे –

ए + अ = अय्	चे + अन = चयन

	ने + अन = नयन
ऐ + अ = आय्	नै + अक = नायक
	गै + अक = गायक
	गै + अन = गायन
ऐ + ई = आयि	ने + इका = नायिका
	गे + इका = गायिका
ओ + अ = अव	पो + अन = पवन
	भो+ अन = भवन
ओ + इ = अवि	पो + इत्र = पवित्र
	गो + इनि = गविनी
ओ + ई = अवी	गो + ईश = गवीश
औ + इ = आवि	नौ + इक = नाविक
	भौ + इनि = भाविनी
औ + उ = आवु	भौ + उक = भावुक

व्यंजन संधि

व्यंजन के बाद स्वर या व्यंजन आने से जो परिवर्तन होता है, उसे व्यंजन संधि कहते हैं। जैसे –

वाक् + ईश = वागीश (क् + ई = गी)

सत् + जन = सज्जन (त् + ज = ज्ज)

उत् + हार = उद्धार (त् + ह = द्ध)

नोट :– व्यंजन का शुद्ध रूप हल् वाला रूप (जैसे क् ख् ग् ...) होता है।

व्यंजन संधि के नियम

1. **वर्ग के पहले वर्ण का तीसरे वर्ण में परिवर्तन** : किसी वर्ग के पहले वर्ण (क्, च्, ट्, त्, प्) का मेल किसी स्वर अथवा किसी वर्ग के तीसरे वर्ण (ग, ज, ड, द, ब) या चौथे वर्ण (घ, झ, ढ, ध, भ) अथवा अंतःस्थ व्यंजन (य, र, ल, व) के किसी वर्ण से होने पर वर्ग का पहला वर्ण अपने ही वर्ग के तीसरे वर्ण (ग्, ज्, ड्, द्, ब्) में परिवर्तित हो जाता है। जैसे –

क् का ग् होना :– दिक् + गज = दिग्गज

दिक् + अंत = दिगंत

दिक् + विजय = दिग्विजय

वाक्+ ईश = वागीश

च् का ज् होना :– अच् + अंत = अजंत

अच् + आदि = अजादि

ट् का ड् होना :– षट् + आनन = षडानन

षट् + रिपु = षडिपु

त् का द् होना :– भगवत् + भजन = भगवद्भजन

उत् + योग = उद्योग

सत् + भावना = सद्भावना

सत् + गुण = सद्गुण

प् का ब् होना :– अप् + ज = अब्ज

अप् + धि = अब्धि

सुप् + अंत = सुबंत

2. **वर्ग के पहले वर्ण का पाँचवे वर्ण में परिवर्तन** : यदि किसी वर्ग के पहले वर्ण (क् च् ट् त् प्) का मेल किसी अनुनासिक वर्ण (वस्तुतः केवल न, म) से हो तो उसके स्थान पर उसी का पाँचवा वर्ण (ङ् ञ्, ण्, न्, म्) हो जाता है, जैसे –

क् का ङ् होना :– वाक् + मय = वाङ्मय

द् का ण् होना :– षट् + मुख = षण्मुख

त् का न् होना :– उत् + मत्त = उन्मत्त

तत् + मय = तन्मय

चित् + मय = चिन्मय

जगत् + नाथ = जगन्नाथ

3. किसी भी स्वर के बाद छ् आने के पहले 'च' आ जाता है। जैसे –

परि + छेद = परिच्छेद

आ + छादन = आच्छादन

छत्र + छाया = छत्रच्छाया

वि + छिन्न = विच्छिन्न

स्व + छन्द = स्वच्छन्द

4. 'त्' संबंधी नियम :

(i) त् के बाद यदि 'च', 'छ' हो तो 'त्' का 'च्' हो जाता है; जैसे –

उत् + चारण = उच्चारण

उत् + चरित = उच्चरित

जगत् + छाया = जगच्छाया

सत् + चरित्र = सच्चरित्र

(ii) त् के बाद यदि 'ज', 'झ' हो तो 'त्' 'ज्' में बदल जाता है; जैसे –

सत् + जन = सज्जन

जगत् + जननी = जगज्जननी

विपत् + जाल = विपज्जाल

उत् + ज्वल = उज्जल

उत् + झटिका = उज्झटिका

(iii) त् के बाद यदि 'ट', 'ड' हो तो 'त्' क्रमश 'द' 'ड्' में बदल जाता है; जैसे –

बृहत् + टीका = बृहदटीका

उत् + डयन = उड्डयन

(iv) त् के बाद यदि 'ल' हो तो 'त्' ल्' में बदल जाता है; जैसे –

उत् + लास = उल्लास

तत् + लीन = तल्लीन

उत् + लेख = उल्लेख

(v) त् के बाद यदि 'श्' हो तो 'त्' का 'च्' और 'श्' का 'छ्'हो जाता है; जैसे –

उत् + श्वास = उच्छ्वास

सत् + शास्त्र = सच्छास्त्र

(vi) त् के बाद यदि 'ह' हो तो 'त्' के स्थान पर 'द्' और 'ह' के स्थान पर 'ध' हो जाता है; जैसे –

तत् + हित = तद्धित

उत् + हार = उद्धार

उत् + हत = उद्धत

उत् + हृत = उद्धृत

5. 'न' संबंधी नियम : यदि 'र', 'श्' के बाद 'न' व्यंजन आता है तो 'न' का 'ण' हो जाता है; जैसे –:

परि + नाम = परिणाम

प्र + मान = प्रमाण

राम + अयन = रामायण

भूष + अन = भूषण

6. 'म' संबंधी नियम :

(i) 'म्' का मेल 'क' से 'म' तक के किसी भी व्यंजन वर्ग से होने पर 'म्' उसी वर्ग के पंचमाक्षर (अनुस्वार) में बदल जाता है; जैसे –

सम् + कलन = संकलन

सम् + गति = संगति

सम् + चय् = संचय

सम् + पूर्ण = संपूर्ण

(ii) 'म्' का मेल यदि 'य', 'र', 'ल', 'व', 'श', 'ष', 'स', 'ह' से हो तो 'म्' सदैव अनुस्वार ही होता है; जैसे –

सम् + योग = संयोग

सम् + रक्षक = संरक्षक

सम् + लाप = संलाप

सम् + विधान = संविधान

(iii) 'म्' के बाद 'म' आने पर कोई परिवर्तन नहीं होता; जैसे –

सम् + मान = सम्मान

सम् + मति = सम्मति

7. 'स' संबंधी नियम : 'स' से पहले 'अ', 'आ' से भिन्न स्वर हो तो 'स' का 'ष' हो जाता है; जैसे –

वि + सम = विशम

वि + साद = विशाद

सु + समा = सुशमा

विसर्ग संधि

विसर्ग के बाद स्वर या व्यंजन आने पर विसर्ग में जो विकार होता है; उसे विसर्ग संधि कहते हैं; जैसे –

निः + आहार = निराहार

दुः + आशा = दुराशा

तपः + भूमि = तपोभूमि

मनः + योग = मनोयोग

विसर्ग–संधि के प्रमुख नियम

1. **विसर्ग का 'ओ' हो जाता है** : यदि विसर्ग के पहले 'अ' और बाद में 'अ' अथवा प्रत्येक वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवा वर्ण अथवा 'य', 'र', 'ल', 'व', 'ह' हो तो विसर्ग का 'ओ' हो जाता है; जैसे –

मनः + अनुकूल = मनोनुकूल

तपः + बल = तपोबल

तपः + भूमि = तपोभूमि

पयः + धन = पयोधन

अधः + गति = अधोगति

वयः + वृद्ध = वयोवृद्ध

मन + रथ = मनोरथ

मन + हर = मनोहर

अपवाद : पुनः एवं अंतः में विसर्ग का र् हो जाता है; जैसे –

पुनः + मुद्रण = पुनर्मुद्रण

अंतः + धान = अंतर्धान

पुनः + जन्म = पुनर्जन्म

अंतः + अग्नि = अंतराग्नि

2. **विसर्ग का 'र्' हो जाता है** : यदि विसर्ग के पहले 'अ', 'आ' को छोड़कर कोई दूसरा स्वर हो और बाद में 'आ', 'उ', 'ऊ' या तीसरा, चौथा, पाँचवा वर्ण या 'य', 'र', 'ल', 'व' में से कोई हो तो विसर्ग का 'र्' हो जाता है; जैसे –

निः + आशा = निराशा

निः + धन = निर्धन

निः + बल = निर्बल

निः + जन = निर्जन

आशीः + वाद = आशीर्वाद

दुः + बल = दुर्बल

3. **विसर्ग का 'श्' हो जाता है** : यदि विसर्ग के पहले कोई स्वर हो और बाद में 'च', 'छ' या 'श' हो तो विसर्ग का 'श्' हो जाता है; जैसे –

निः + चिंत् = निश्चिंत

निः + छल = निश्छल

दुः + शासन = दुश्शासन

दुः + चरित्र = दुश्चरित्र

4. **विसर्ग का 'ष्' हो जाता है** : विसर्ग के पहले 'इ', 'उ' और बाद में 'क', 'ख', 'ट', 'ड', 'प', 'फ' में से कोई वर्ण हो तो विसर्ग का 'श्' हो जाता है; जैसे –

निः + कपट = निष्कपट

निः + कंटक = निष्कंटक

धुनः + टंकार = धनुष्टंकार

निः + प्राण = निष्प्राण

5. **विसर्ग का 'स्' हो जाता है** : विसर्ग के बाद यदि 'त' या 'थ' हो तो विसर्ग का 'स्' हो जाता है; जैसे –

नमः + ते = नमस्ते

निः + तेज = निस्तेज

मनः + ताप = मनस्ताप

दुः + तर = दुस्तर

निः + संताप = निस्संताप

दुः + साहस = दुस्साहस

6. **विसर्ग का लोप हो जाना** :

(i) यदि विसर्ग के बाद 'छ' हो तो विसर्ग लुप्त हो जाता है और 'च' का आगम हो जाता है; जैसे –

अनुः + छेद = अनुच्छेद

छत्रः + छाया = छत्रच्छाया

(ii) यदि विसर्ग के बाद 'र' हो तो विसर्ग लुप्त हो जाता है और उस के पहले का स्वर दीर्घ हो जाता है; जैसे –

निः + रोग = नीरोग

निः + रस = नीरस

(iii) यदि विसर्ग से पहले 'अ' या 'आ' हो तो विसर्ग के बाद कोई भिन्न स्वर हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है; जैसे –

अतः + एव = अतएव

7. **विसर्ग में परिवर्तन न होना** :– यदि विसर्ग के पूर्व 'अ' हो तथा बाद में 'क' या 'प' हो तो विसर्ग में परिवर्तन नहीं होता; जैसे –

प्रातः + काल = प्रातःकाल

अंतः + करण = अंतःकरण

अंतः + पुर = अंतःपुर

अंधः + पतन = अधःपतन

अपवाद : नमः एवं पुरः में विसर्ग का स् हो जाता है; जैसे –

नमः + कार = नमस्कार

पुरः + कार = पुरस्कार

प्रश्न अभ्यास

1. 'संधि' से आपका क्या आशय है? उदाहरण सहित स्पश्ट कीजिए।

2. संधि के कितने भेद हैं? प्रत्येक भेद को उदाहरण सहित बताईए।

3. निम्नलिखित में संधि कीजिए :–

   धर्म + अर्थ, स्व + अर्थी, देव + अर्चन, वीर + अंगना, मत + अनुसार, देव + आलय, नव + आगत, सत्य + आग्रह, देव + आगमन, परीक्षा + अर्थी, सीमा + अंत, दिशा + अंतर, रेखा + अंश, महा + आत्मा, विद्या + आलय, महा + आनन्द, वार्ता + आलाप, अति + इव, कवि + इंद्र, मुनि + इंद्र, गिरि + ईश, मुनि + ईश्वर, हरि + ईश, लक्ष्मी + इच्छा, रजनी + ईश, नारी + ईश्वर, भानु + उदय, विधु + उदय, भू + उत्सर्ग, भू + ऊष्मा, भू + ऊर्चा, महा + उदय, गंगा + उदय, एक + एक, राज + ऋशि, देव + ऋषि, परम + ओज, महा + ओध, जल + ओध, सदा + एवं, यदि + अपि, अति + उक्ति, नि + ऊन, सु + अस्ति, मातृ + आदेश।

4. निम्नलिखित हिन्दी भाषा के शब्दों का संधि–विच्छेद कीजिए :–

   अंतःकरण, वागीश, महात्मा, मतानुसार, महात्मा, रेखांश, वार्तालाप, महानंद, अतीव, गिरीश, परीक्षा, रजनीश, भूर्जा, नरेश, रमेश, परोपकार, नवोड़ा, महोदय, महौज, जलोध, गायन, नायक, लवण, पावक, सज्जन।

संदर्भ

1. डॉ. वासुदेवनन्दन प्रसाद, आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना
2. राम छबीला त्रिपाठी, भाशा विज्ञान एवं हिन्दी भाशा
3. श्याम चन्द्रा, व्याकरण प्रवेश
4. लूसेन्ट सामान्य हिन्दी
5. इन्टरनेट

पत्र लेखन

अध्याय की रूपरेखा

4.2 उद्देश्य

4.3 प्रस्तावना

4.4 पत्र–लेखन का अर्थ एवं स्वरूप

4.5 पत्र–लेखन के कुछ आवश्यक बिन्दु

4.6 पत्र–लेखन की विशेषताएं

4.7 पत्र–लेखन : महत्त्व

4.8 पत्र–लेखन के प्रकार

4.8.1 अनौपचारिक पत्र

4.8.1.1 अनौपचारिक पत्र के प्रकार

4.8.1.2 अनौपचारिक पत्र लिखते समय ध्यान देने योग्य बातें

4.8.1.3 अनौपचारिक पत्रों का प्रारूप

4.8.2 औपचारिक पत्र

4.8.2.1 औपचारिक पत्र के प्रकार

4.8.2.2 औपचारिक पत्र लिखते समय ध्यान देने योग्य बातें

4.8.2.3 औपचारिक पत्रों का प्रारूप

4.9 तालिका

4.10 पत्रों के नमूने

4.2 उद्देश्य

इस अध्याय को पढ़ने के बाद आप –

- विविध प्रकार के पत्र लेखन के प्रयोजन का उल्लेख कर सकेंगे?
- अच्छे पत्रों के गुण बता सकेंगे।
- पत्रों के प्रकारों के विषय में विचार कर सकेंगे।
- पत्र का प्रारूप समझा सकेंगे।
- कार्यालयी तथा व्यक्तिगत दोनों प्रकार के स्वरूप में पत्रों को लिख सकेंगे।

4.3 प्रस्तावना

पत्र लेखन एक कला है। जिससे व्यक्ति अपने सुख–दुख को लिखित रूप में अभिव्यक्त कर सकता है। पत्र लिखने वाला दूर रह कर भी अपने भावों तथा विचारों को दूसरे व्यक्ति तक पहुँचा सकता है। अपनी इच्छाओं, जिज्ञासा तथा आवश्यकता की जानकारी दे सकता है। जिन बातों को लोग सामने से कहने में सँकुचाते हैं, उन्हें पत्रों द्वारा आसानी से समझाया जा सकता है।

4.4 पत्र–लेखन का अर्थ एवं स्वरूप

पत्र–लेखन एक ऐसा माध्यम है जो दूर रह रहे लोगों की भावना एक संगम भूमि पर लाकर खड़ा कर देता है और दोनो में मधुर सम्बन्ध स्थापित करता है। यह भावों और विचारों को जोड़ने का एक शक्तिशाली माध्यम है। पत्र लिखने वाला अपने संदेश के माध्यम से अपने सुख–दुख दूसरे व्यक्ति तक पहुंचाता है। अपनी इच्छाएं, आवश्यकताएं, जिज्ञासाएं बताता है। पत्र पर उसके लेखक के व्यक्तित्व की छाप होती है। विशेष रूप से यदि व्यक्तिगत पत्रों की बात करें तो आप किसी भी व्यक्ति के अच्छे–बुरे व्यक्तित्व का पता उसके पत्र से लगा सकते हैं।

आज के आधुनिक युग में पत्र लेखन एक विशिष्ट कला का रूप धारण कर चुका है। प्रत्येक मानव जीवन से इसका घनिष्ठ सम्बन्ध बन चुका है। अपनी भावनाओं तथा विचारों के आदान–प्रदान का एक महत्त्वपूर्ण साधन बनकर उभरा है। किसी व्यक्ति के व्यवहार और विचारों को जानने के लिए उसके द्वारा लिखे गए पत्रों का सहारा लिया जा सकता है। जिनके माध्यम से हम उसके जीवन का यथार्थ रूप जान सकते हैं।

आधुनिक युग में पत्रलेखन को एक कला की संज्ञा दी गई है। आज हम देखते हैं कि पत्र द्वारा लेखक अपनी कलात्मक अभिव्यक्ति प्रस्तुत करते हैं। साहित्य भी इससे अछूता नहीं है बल्कि यहां भी इसका भरपूर प्रयोग होता है। इसलिए इसे कलात्मक दृष्टिकोण से भी देखा जा सकता है जिस पत्र में जितनी अधिक संप्रेषणीयता तथा स्वाभाविकता होगी वह उतना ही अन्तरंग भावनाओं को व्यक्त कर पाएगा। पत्र से केवल लिखने वाले की भावनाएं ही व्यक्त नहीं होती बल्कि उसका व्यक्तित्व भी उभरता है। इसमे लेखक के विचार, दृष्टिकोण , चरित्र, संस्कार, मनःस्थिति, आचरण आदि सभी एक साथ झलकते हैं। अतः हम कह सकते हैं कि पत्र लेखन एक प्रकार से कलात्मक अभिव्यक्ति है।

वर्तमान में हमारे समक्ष बातचीत करने, हाल–चाल जानने के लिए अनेक आधुनिक साधन उपलब्ध हैं – जैसे टेलीफोन, मोबाइल, ई–मेल, वर्डसैप, टूविटर, फेसबुक, फैक्स इत्यादि। अब प्रश्न यह उठता है कि फिर भी पत्र लेखन क्यों जरूरी है? पत्र लिखना महत्त्वपूर्ण ही नहीं अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि जब आप कॉलेज नहीं जा पाते, तब अवकाश के लिए प्रार्थना–पत्र लिखना पड़ता है। सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थानों के अधिकारियों को अपनी समस्याओं आदि की सूचना देने के लिए पत्र लिखना पड़ता है। फोन आदि पर बातचीत अस्थायी होती है इसके विपरीत लिखित पत्र स्थायी रूप ले लेता है।

4.5 पत्र–लेखन के कुछ आवश्यक बिन्दु

1. पत्र विषयानुरूप होना चाहिए।
2. पत्र की भाशा सरल तथा शिष्ट होनी चाहिए।
3. पत्र में हृदय के भाव स्पष्ट रूप से व्यक्त होने चाहिए।
4. पत्र में शिष्टाचार पूर्ण शब्दों का प्रयोग होना चाहिए।
5. विषयानुसार बात लिखें, बेकार की बातों को पत्र में नहीं लिखना चाहिए।
6. उचित मानक शब्दावली का प्रयोग करना चाहिए।
7. अनावश्यक विस्तार से बचना चाहिए।
8. पत्र में लिखी वर्तनी शुद्ध तथा लेख स्पष्ट होना चाहिए।
9. पत्र प्रेषक (भेजने वाला) तथा प्रापक (प्राप्त करने वाला) का नाम, पता आदि स्पष्ट रूप से लिखे होने चाहिए।

4.6 पत्र–लेखन की विशेषताएं

अच्छे पत्र–लेखन में निम्नलिखित विशेशताएं होनी चाहिए :–

1. **सरल भाषा शैली** :– पत्र की भाषा सरल, स्पष्ट तथा बोधगम्य होनी चाहिए। शब्दों का प्रयोग सावधानी से करना चाहिए। विषय को सीधे–सादे ढंग से स्पष्ट लिखना चाहिए। बातों को घुमाना फिराना नहीं चाहिए।
2. **प्रभावोत्पादकता** :– पत्र का पूरा प्रभाव पढ़ने वाले पर पड़ना चाहिए। आरम्भ से अन्त तक विन्रमता तथा सौहार्द के भाव झलकने चाहिए।

3. **बाहरी सजावट** :– पत्र की बाहरी सजावट पर लेखक का ध्यान होना चाहिए जैसे – (i) उसका कागज अच्छा होना चाहिए। (ii) लिखावट सुन्दर तथा साफ–सुथरी होनी चाहिए। (iii) विराम्चिन्ह आदि का प्रयोग यथास्थान होना चाहिए।

4. **स्पश्टता** :– पत्र की भाषा में स्पष्टता होनी चाहिए, स्पष्ट तथा मधुर भाषा वाला पत्र प्रभावी होता है, शब्दों का चयन तथा वाक्य रचना की सरलता पत्र को प्रभावशाली बनाते है।

5. **संक्षिप्तता** :– पत्र की भाषा में संक्षिप्तता होनी चाहिए। उसमें अनावश्यक विस्तार नहीं होना चाहिए। संक्षिप्तता का अर्थ है पत्र अपने आप में पूर्ण हो, व्यर्थ के शब्द जाल से मुक्त होना चाहिए।

6. **आकर्षण तथा मौलिकता** :– पत्र आकर्षक तथा सुंदर होना चाहिए। कार्यालयी पत्रों को स्पष्टता के साथ टाइप किया जाए। पत्र की भाषा में मौलिकता होनी चाहिए। पत्र का वर्णन, क्रमानुसार होना चाहिए, प्राप्त करने वाले का अधिक वर्णन होना चाहिए।

7. **उद्देश्यपूर्णता** :– प्रत्येक पत्र अपने कथन में स्वतः संपूर्ण होना चाहिए। पत्र पढ़ने के लिए किसी प्रकार की जिज्ञासा शेष नहीं रहनी चाहिए। पत्र का कथ्य अपने आप में पूर्ण तथा उद्देश्य की पूर्ति करने वाला होना चाहिए।

8. **शिष्टता** :– सरकारी, व्यवसायिक तथा अन्य औपचारिक पत्र की भाषा शैली शिष्टता पूर्ण होनी चाहिए।

4.7 पत्र–लेखन : महत्त्व

1. पत्र लेखन वह विधा है जिसके द्वारा व्यक्ति समाज में रहते हए अपने भावों एवं विचारों को दूसरों तक पहुँचाता है, इसके लिए वह पत्रों का सहारा लेता है। अतः व्यवसायिक, सामाजिक, कार्यालय आदि से सम्बन्धित अपने भावों एवं विचारों को प्रकट करने में पत्र अत्यन्त उपयोगी होते हैं।

2. पत्र मित्रों तथा रिश्तेदारों में आत्मीय सम्बन्ध स्थापित करने में सहायक होते हैं। इनके द्वारा मनुंष्य अपने दुख, दर्द, घृणा, दोश, सहानुभूति प्रकट करता है।

3. सरकारी तथा गैर–सरकारी कार्यालयों तथा व्यवसाय के सम्बन्ध में मुद्रित रूप में प्राप्त पत्रों का विशेष महत्त्व होता है। मुद्रित रूप में प्राप्त पत्रों को सुरक्षित रखा जा सकता है।

4. विद्यार्थी जीवन में भी पत्रों का विशेष महत्त्व देखा जा सकता है। स्कूल से अवकाश प्राप्ति, फीस माफी, स्कॉलरशिप पाने आदि में पत्रों की विशेष भूमिका रहती है।

4.8 पत्र–लेखन के प्रकार

मुख्य रूप से पत्रों को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है :–

1. अनौपचारिक पत्र (Informal Letter) 2. औपचारिक पत्र (Formal Letter)

4.8.1 अनौपचारिक पत्र : वैयक्तिक अथवा व्यक्तिगत पत्र अनौपचारिक पत्रों की श्रेणी में आते हैं। वैयक्तिक अथवा व्यक्तिगत पत्र ऐसे पत्र होते हैं जो व्यक्तिगत विषय पर अपने मित्रो, परिवारजनों तथा हितेषी व्यक्तियों को लिखे जाते हैं। इनमें मनुष्य के हृदय के सहज उद्‌गार व्यक्त होते हैं। इन पत्रों को पढ़कर हम किसी भी व्यक्ति के अच्छे या बुरे स्वभाव या मनोवृत्ति का परिचय आसानी से पा सकते हैं। इन पत्रों की विषयवस्तु निजी तथा घरेलू होती है। इन पत्रों की भाषा शैली प्रायः सीधी, सरल तथा अनौपचारिक होती है।

4.8.1.1 अनौपचारिक पत्र के प्रकार (Types of Informal letter)

1. निमंत्रण पत्र
2. सांत्वना पत्र
3. बधाई पत्र
4. शुभकामना पत्र
5. विशेष अवसर पर लिखे गए पत्र इत्यादि।

4.8.1.2 अनौपचारिक पत्र लिखते समय ध्यान देने योग्य बातें

1. इसकी भाषा स्पष्ट तथा सरल हो।
2. पत्र आरम्भ से अन्त तक प्रभावशाली हो।
3. पत्र लिखने वाले (प्रेषक) तथा प्राप्त करने वाले (प्रापक) का पता साफ और स्पष्ट होना चाहिए।
4. कक्षा/परीक्षा भवन में यदि हम पत्र लिख रहे हैं तो अपने नाम के स्थान क. ख. ग. तथा पते के स्थान पर कक्षा/परीक्षा भवन लिखें।
5. पत्र लिखते समय प्रेषक को प्रापक की आयु, योग्यता, पद आदि का ध्यान होना चाहिए।
6. पत्र में संक्षिप्तता का ध्यान रखना चाहिए।
7. अपना पता तथा तिथि लिखने के बाद एक पंक्ति छोड़कर लिखना चाहिए।
8. पत्र में किसी प्रकार की कांट–छांट नहीं होनी चाहिए।
9. पत्र में विषय की स्पष्टता का होना आवश्यक है।

4.8.1.3 अनौपचारिक पत्रों का प्रारूप

1. **पता** : पत्र में सबसे ऊपर बाईं ओर प्रेषक (पत्र भेजने वाले) का नाम व पता लिखा जाता है।
2. **दिनांक** :– जिस दिन पत्र लिखा जा रहा है, उस दिन की तारीख।
3. संबोधन–प्रापक (जिस व्यक्ति को पत्र लिखा जा रहा है) के साथ संबंध के अनुसार संबोधन का प्रयोग किया जाता है। जैसे कि बड़ों के लिए पूज्यनीय, पूज्य, आदरणीय आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है और छोटों के लिए प्रिय, प्रियवर, स्नेही आदि का प्रयोग किया जाता है।
4. **अभिवादन** :– जिस व्यक्ति को पत्र लिखा जा रहा है, उसक साथ सम्बन्ध के अनुरूप ही अभिवादन होना चाहिए जैसे सादर प्रणाम, चरण स्पर्श, नमस्ते, नमस्कार इत्यादि।
5. **मुख्य विषय** :– मुख्य विषय को मुख्यतः तीन अनुच्छेदों में विभाजित करना चाहिए। पहले अनुच्छेद की शुरूआत इस प्रकार होनी चाहिए – "हम/मैं यहां कुशल हूँ, आशा करती हूँ कि आप भी

कुशलतापूर्वक होंगे। दूसरे अनुच्छेद में जिस कारण पत्र लिखा गया है उस बात का उल्लेख किया जाता है। तीसरे अनुच्छेद में समाप्ति से पहले, कुछ वाक्य अपने परिवार व संबंधियों की कुशलता के लिए लिखने चाहिए। जैसे कि – 'मेरी तरफ से बड़ों को प्रणाम, छोटों को आर्शीवाद व प्यार आदि'।

6. **समापन** :– अंत में प्रेषक का सम्बन्ध जैसे – 'आपका पुत्र, आपकी पुत्री, आपकी भतीजी आदि'।

4.8.2 औपचारिक पत्र

औपचारिक पत्र उन्हें लिखा जाता है जिनसे हमारा कोई निजी संबंध न हो। इन पत्रों में केवल कार्य सम्बन्धी बातों पर ध्यान दिया जाता है। सरकारी कार्यालयों में लिखे गए पत्र, आवेदन पत्र, प्रार्थनापत्र, व्यवसाय सम्बन्धी पत्र, संपादक के नाम पत्र आदि औपचारिक पत्रों की श्रेणी में आते हैं।

औपचारिक पत्र लिखते समय मुख्य रूप से संदेश, सूचना तथा तथ्यों को ही अधिक महत्त्व दिया जाता है।

4.8.2.1 औपचारिक पत्र के प्रकार

1. **प्रार्थना पत्र** :– जिन पत्रों में निवेदन अथवा प्रार्थना की जाती है, वे 'प्रार्थपा–पत्र' कहलाते हैं। प्रार्थनापत्र में अवकाश, शिकायत, समस्या, आवेदन आदि के लिए लिखे जाते हैं।
2. **कार्यालीय पत्र** :– यह पत्र कार्यालीय कामकाज के उद्देश्य से लिखे जाते हैं; इसलिए इन्हें 'कार्यालयी–पत्र' कहते हैं। ये सरकारी कर्मचारियों या अधिकारियों, स्कूल एवं कॉलेज के प्रधानाध्यापकों तथा प्राचार्यों को लिखे जाते हैं। इन पत्रों में डाक अधीक्षक, समाचार पत्र के सम्पादक, परिवहन विभाग, थाना प्रभारी, स्कूल/कालेज प्रधानाचार्य आदि को लिखे गए पत्र आते हैं।

3. **व्यवसायिक–पत्र** :– व्यवसाय में सामान का क्रय–विक्रय तथा रूपयों का लेन–देन करने के लिए जो पत्र लिखे जाते हैं उन्हें व्यवसायिक पत्र कहा जाता है।

4.8.2.2 औपचारिक पत्र लिखते समय ध्यान देने योग्य बार्ते

औपचारिक पत्र लिखते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखा जाता है :–

1. औपचारिक पत्र व्यवस्थित तथा नियमबंध होते है।
2. इन पत्रों में स्पष्ट तथा मानक शब्दावली का प्रयोग करना चाहिए।
3. यह पत्र आरम्भ से अन्त तक प्रभावशाली होना चाहिए।
4. पत्र में अनावश्यक बातों से बचना चाहिए।
5. पत्र की भाषा सीधी, सरल तथा प्रभावशाली होनी चाहिए।
6. यदि आप कक्षा या परीक्षा भवन में पत्र लिख रहे हैं तो कक्षा अथवा परीक्षा भवन (अपने पता के स्थान पर) तथा क. ख. ग. (अपने नाम से स्थान पर) लिखना चाहिए।
7. पत्र को एक पृष्ठ पर ही लिखने का प्रयास करना चाहिए ताकि तारतम्यता/लयबद्धता बनी रहे।
8. प्रधानाचार्य को पत्र लिखते समय प्रेषक के स्थान पर अपना नाम, कक्षा व दिनांक लिखना चाहिए।

4.8.2.3 औपचारिक पत्रों का प्रारूप

1. 'सेवा में' लिखकर पत्र प्रापक का पदनाम तथा पता लिखकर पत्र की शुरूआत करें।
2. **विषय** – जिसके बारे में पत्र लिखा जा रहा है, उसे केवल एक ही वाक्य में शब्द–संकेतों में लिखें।
3. **संबोधन** – जिसे पत्र लिखा जा रहा है – महोदय/महोदया, माननीय आदि शिष्टाचार शब्दों का प्रयोग करें।
4. **विषय–वस्तु** – इसे दो अनुच्छेदों में लिखना चाहिए।

   पहला अनुच्छेद – "सविनय निवेदन यह है कि" से वाक्य शुरू करना चाहिए, फिर अपनी समस्या के बारे में लिखें।

दूसरा अनुच्छेद – "आपसे विनम्र निवेदन है कि" लिखकर आप उनसे क्या अपेक्षा (इच्छा) रखते हैं, उसे लिखें।

5. **हस्ताक्षर व नाम** – 'धन्यवाद' या 'कष्ट' के लिए क्षमा जैसे शब्दों का प्रयोग करना चाहिए और अंत में भवदीय; भवदीया; प्रार्थी लिखकर अपने हस्ताक्षर करें तथा उसके नीचे आप नाम लिखें।

6. **प्रेषक पता** – पत्र लिखने वाले को शहर/इलाका, पिनकोड इत्यादि लिखना चाहिए।

7. दिनांक।

4.9 तालिका

पत्र के प्रकार	संबंध	आरम्भ	समापन
व्यवसायिक	पुस्तक विक्रेता, बैंक मैनेजर, व्यवसायिक आदि	मान्यवर, माननीय, श्रीमान, महोदय	भवदीय, निवेदक
आवेदन पत्र	प्रधानाचार्य, कोई अन्य अधिकारी	श्रीमान जी, महोदय, आदरणीय महोदय, माननीय महोदय	विनीत, प्रार्थी, भवदीय, आपका आज्ञाकारी
कार्यालय	संपादक, नगर–निगम अधिकारी, मंत्री, पोस्टमास्टर आदि	आदरणीय संपादक महोदय, मान्यवर महोदय	भवदीय प्रार्थी आपका कृपाकाक्षी निवेदक विनीत
व्यक्तिगत	बड़ों को	पूजनीय माननीय, आदरणीय, श्रद्धेय	चरण स्पर्श। स्नेह–पात्र, कृपाकाक्षी
	बराबर वालों को	मित्रवर, प्रिय, बंधु, बंधुवर	तुम्हारा हितेशी स्नेही
	छोटों को	प्रिय, चिरंजीव, आयुष्मान	तुम्हारा शुभचिन्तक शुभाकांक्षी

4.10 पत्रों के नमूने

औपचारिक पत्र

उदाहरण

पुस्तकें मँगवाने के लिए प्रकाशक को लिखा गया पत्र

सेवा में,
प्रकाशक
लखनऊ।

महोदय,

मुझे मालूम हुआ है कि आपके यहां 'सामान्य हिन्दी' नामक पुस्तक उपलब्ध है जो विद्यार्थी वर्ग के लिए बहुत उपयोगी है। मुझे इस पुस्तक की एक प्रति चाहिए। इस पुस्तक की एक प्रति वी.पी.पी से मेरे नाम भेज देने का कष्ट करें। आपकी अति कृपा होगी।

धन्यवाद सहित।

किशोर कुमार
स्थान – बख्शी नगर, जम्मू।

दिनांक – 20–04–2020

नगरपालिका के प्रधान को पत्र लिखें जिसमें पीने के जल के अभाव को दूर करने की प्रार्थना की गई हो।

सेवा में,
प्रधान नगरपालिका,
जम्मू।

मान्यवर,

बड़े खेद की बात है कि पिछले एक मास से 'शास्त्री नगर' क्षेत्र में पेय–जल की कठिनाई का अनुभव किया जा रहा है। नगरपालिका की ओर से पेय–जल की सप्लाई बहुत कम होती जा रही है। कभी–कभी तो पूरा दिन पानी नल में नहीं आता। मकानों की पहली–दूसरी मंजिल तक तो पानी ऊपर चढ़ता ही नहीं। आप पानी की आवश्यकता के विषय में जानते तो भली–भांति हैं। पानी की कमी के कारण यहाँ के लोगों का जीवन कष्टमय बन गया है। आपसे सानुरोध प्रार्थना है कि इस क्षेत्र में पेय–जल की समस्या का समाधान करें।

आशा है कि आप इस विषय पर ध्यान देंगे और शीघ्र ही उचित कार्यवाही करेंगे।

भवदीय

क.ख.ग
शास्त्री नगर, जम्मू।

पोस्ट मास्टर को मनीआर्डर गुम हो जाने की शिकायत कीजिए।

सेवा में,
पोस्ट मास्टर,
नौशहरा
राजौरी।

मान्यवर,

सेवा में निवेदन है कि मैंने 25 जून 20... को अपने जम्मू निवासी छोटे भाई को सौ रुपये का मनीआर्डर करवाया था लेकिन एक मास बीत जाने पर भी वह उसे प्राप्त नहीं हुआ। लगता है कि आपके किसी कर्मचारी की लापरवाही के परिणामस्वरूप मनीआर्डर गुम हो गया है।

मनीआर्डर की रसीद का नं. 0589 है। रसीद मेरे पास सुरक्षित है। कृपया आप इस सम्बन्ध में उचित छानबीन करें। मेरे छोटे भाई को रुपये न मिलने के कारण असुविधा का सामना करना पड़ा है। सरकारी कार्यालय में इस प्रकार की लापरवाही उचित नहीं।

भवदीय

राजेश,

गली संख्या 20–सी नौशहरा

बिजली का बिल बढ़ा–चढ़ाकर भेज देने के लिए सम्बद्धित अधिकारी को एक शिकायती पत्र लिखिए।

सेवा में,
विद्युत अधिकारी,
माधोपुर क्षेत्र,
राजौरी।

श्रीमान जी,

निवेदन यह है कि इस बार हमारा बिजली का बिल बढ़ा–चढ़ा कर भेजा गया है। लगता है कि मीटर पढ़ने में गलती हुई है। आपके आदमी ने 2022 के स्थान पर 2220 पढ़ लिया है।

आपसे प्रार्थना है कि आप तथ्य की पुष्टि करने का आदेश दें और बिजली का बिल पुनः भेजें। आशा है कि आप इस कार्य में विलंब नहीं करेंगें।

भवदीय

सुशील धवन,

5/625 माधोपुरी,

गली नं. 1, राजौरी।

किसी दैनिक समाचार–पत्र के सम्पादक को एक पत्र लिखिए जिसमें सामान्य नागरिकों की कठिनाइयों का वर्णन हो।

सेवा में,
मुख्य सम्पादक,

नवभारत टाइम्स,
नई दिल्ली।

आदरणीय महोदय,

मैं आपके लोकप्रिय पत्र के माध्यम से अपने निम्नांकित विचार अपने प्रदेश के अधिकारियों तक पहुँचाना चाहता हूँ –

(क) पानीपत नगर का नितान्त विकास हो रहा है। दूर–दूर बस्तियाँ बन गई हैं। इन बस्तियों तक पहुँचने के लिए प्रदेश सरकार की ओर से बहुत कम स्थानीय बसें चलाई गई हैं। बस सेवा उपलब्ध न होने के कारण नागरिकों को अनेक प्रकार की कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

(ख) नगर–निगम भी अपने कर्त्तव्य का पालन नहीं कर सका है। स्थान–स्थान पर गन्दगी के ढेर पड़े रहते हैं, जिनसे बीमारियाँ फैलने का भय रहता है।

(ग) बिजली का संकट भी दिन–प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। बिजली के बंद रहने के कारण नल में जल का अभाव रहता है, पानी के जमाव के कारण भी नागरिकों को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। मेरा नम्र निवेदन है कि उक्त कठिनाइयों की ओर सम्बन्धित अधिकारी ध्यान दें और इसके निवारण का समुचित प्रबंध करें।

भवदीय

सुधीर

दिनांक – 04 अगस्त, 2019

आपके मुहल्ले में प्रकाश की व्यवस्था कम है। विद्युत अधिकारी को विषय पर पत्र लिखिए।

सेवा में,
विद्युत अधिकारी,
गांधी नगर,
जम्मू।

आदरणीय महोदय,

आप भली–भान्ति जानते हैं कि गांधी नगर एक घनी आबादी वाला क्षेत्र है। इसमें एक के बाद एक बाइस गलियां हैं। ये गलियां सड़क से प्रारंभ हो जाती हैं। ये गलियां एक दूसरे के साथ इस तरह सटी हुई हैं कि बाहर से आने वाला व्यक्ति दिन में भी कई बार गलत नम्बर की गली में प्रवेश कर जाता है। रात के अंधेरे में तो यह कठिनाई और भी बढ़ जाती है। इस क्षेत्र में प्रकाश की व्यवस्था आवश्यकता से बहुत कम है। रोशनी का प्रबंध केवल सड़क के साथ लगने वाली गली के पास है। अधिकांश क्षेत्र में प्रायः रात के समय अंधेरा रहता है। अतः आपसे सानुरोध प्रार्थना है कि प्रत्येक गली के सिरे पर प्रकाश की व्यवस्था कराएं। प्रकाश का समुचित प्रबंध होने से चोरों को भी चोरी का अवसर कम मिलता है।

आशा है कि आप मेरी प्रार्थना की ओर ध्यान देंगे।

आपका आज्ञाकारी,

रोहित शर्मा,

दिनांक – 10 जुलाई 20 ....

अनौपचारिक पत्र :–

विवाह पर अवकाश के लिए प्रार्थना पत्र

सेवा में,
श्रीमान प्रधानाचार्य महोदय,
नेशनल पब्लिक स्कूल,
जम्मू।

मान्यवर महोदय,

सविनय निवेदन यह है कि मेरी बड़ी बहन का विवाह ..... को होना निश्चित हुआ है। काम करने के लिए मेरा रहना आवश्यक है। इसलिए मुझे दिनांक .....से .....तक का तीन दिन का अवकाश प्रदान करने की कृपा करें।

सधन्यवाद।

आपका आज्ञाकारी शिष्य,

राकेश शर्मा,

कक्षा ऋ क.ख.ग.

दिनांक – .....

समाचार पत्र में दिए गए विज्ञापन पर विज्ञापन –कर्ता को नौकरी के लिए प्रार्थना पत्र लिखो।

सेवा में,
प्रबन्धक,
अमर ज्योति कॉलेज, दिल्ली

मान्यवर महोदय,

दिनांक 11 जुलाई, 20.... के 'दैनिक जागरण' से ज्ञात हुआ है कि आपके यहाँ हिन्दी विशय के तीन प्राध्यापकों के स्थान रिक्त हैं। प्राध्यापक के पद की नियुक्ति के लिए आपने जो शैक्षणिक योग्यताएं मांगी हैं, मैं उसके लिए अपने आप को पूर्ण समर्थ समझता हूँ। अतः मैं आपकी सेवा में यह प्रार्थना पत्र भेज रहा हूँ। मेरी शैक्षणिक योग्यता तथा अनुभव का विवरण इस प्रकार है –

1. मैंने 2009 ई. में जम्मू विश्वविद्यालय से हिन्दी विषय में एम.ए. प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की।
2. एक वर्ष तक डी.ए.वी. कॉलेज, चण्डीगढ़ में अस्थायी रूप से रिक्त प्राध्यापक के पद पर भी कार्य किया है।
3. स्कूल तथा कॉलेज जीवन में क्रिकेंट तथा बैडमिंटन में विशेष रुची रही है।

4. भाषण तथाा वाद–विवाद प्रतियोगिताओं में भी अनेक बार प्रथम स्थान प्राप्त किया है।

आवश्यक प्रमाण–पत्र इस प्रार्थना–पत्र के साथ भेज रहा हूँ। मुझे पूर्ण आशा है कि मेरे प्रार्थना पत्र पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करेंगे और मुझे अपनी ख्याति प्राप्त संस्था में काम करने का अवसर प्रदान करेंगे।

धन्यवाद सहित।

आपका आज्ञाकारी

आदित्य

दिनांक – 10 अप्रैल, 2020

आपके मुहल्ले की समय पर सफाई नहीं होती। अपने नगर की नगरपालिका के प्रधान को पत्र लिखकर मुहल्ले की सफाई न होने की शिकायत कीजिए।

सेवा में,
मान्यवर स्वास्थ्य अधिकारी महोदय,
नगर निगम, जम्मू।

महोदय,

निवेदन यह है कि मैं भगवती नगर का एक निवासी हूँ। यह नगर सफाई की दृष्टि से पूरी तरह उपेक्षित है। इसे देखकर कभी–कभी तो ऐसा लगता है जैसे यह नगर निगम के क्षेत्र से बाहर है। गाँव की गंदगी के विषय में तो केवल सुना था लेकिन यहाँ की गंदगी को प्रतिदिन आँखों से देखता हूँ। सफाई कर्मचारी की नियुक्ति तो अवश्य हुई है लेकिन वह कभी–कभी ही दिखाई देता है। उसके व्यवहार में अशिष्टता भी है। इधर–उधर गंदगी के ढेर लगाकर चला जाता है। नालियों का भी ठीक प्रबन्ध नहीं। मच्छरों के जमघट ने नाक में दम कर रखा है। अनेक प्रकार की बीमारियों के फैलने का भय बना रहता है।

आपसे नम्र निवेदन है कि हमारी कठिनाई को दूर करने का प्रयास करें। आशा है कि आप मेरी प्रार्थना पर ध्यान देंगे और भगवती नगर की सफाई का उचित प्रबन्ध करेंगे।

भवदीय

आकाश शर्मा,

1/40, भगवती नगर , जम्मू

अपने बैंक के प्रबंधक को पत्र लिखकर चैक–बुक खो जाने की सूचना दीजिए।

सेवा में,
प्रबंधक,
कार्पोरेशन बैंक,
कनॉट प्लेस,
जम्मू।

श्रीमान,

मेरा आपके बैंक में बचत खाता है। मेरे खाते की संख्या 2034 है। मेरी चैक बुक संख्या 578910 खो गई है। इसमें चार चैक शेश हैं। इन चैकों की राशि का भुगतान न करें।

धन्यवाद सहित।

विरेन्द्र सिंह,

शक्ति नगर , जम्मू

दिनांक – 24–02–2020

विद्यालय में खेल–कूद की समग्रता की समुचित व्यवस्था कराने हेतु प्रधानाचार्य को आवेदन पत्र लिखिए।

सेवा में,
प्रधानाचार्य,
राजकीय उच्च विद्यालय,
जम्मू।

श्रीमान,

सविनय निवेदन है कि हमारे विद्यालय में खेल कूद का पर्याप्त सामान उपलब्ध नहीं है। इससे सभी कक्षाओं के विद्यार्थियों को खेलने का सामान नहीं मिल पाता। खेल कूद के पीरियड में विद्यार्थी समान न मिलने के कारण इधर–उधर घूमते रहते हैं। इसमें उनमें अनुशासनहीनता आ रही है। वे कई बार आपस में झगड़ा करने लगते हैं।

आपसे विनम्रतापूर्वक प्रार्थना है कि इस ओर तत्काल ध्यान दें और खेल–कूद विभाग में खेलने का पर्याप्त सामान उपलब्ध कराने की कृपा करें। हम आपके आभारी रहेंगे।

धन्यवाद सहित।

आपकी आज्ञाकारी शिश्य,

शबीर मिज़ा, स्कूल कैप्टन,

कक्षा दसवीं।

दिनांक – 10–05–20.....

छोटे भाई को पत्र लिखिए जिसमें मोबाइल की उपयोगिता का वर्णन हो।

48 टैगोर भवन, जम्मू विश्वविद्यालय,

जम्मू।

प्रिय श्याम,

स्नेह

तुम्हारा पत्र मिला। पढ़कर अच्छा लगा कि तुमने मोबाइल ले लिया है। अब हमारा परस्पर संपर्क हर समय हो सकेगा। परन्तु इसका दुरुपयोग नहीं होना चाहिए। मोबाइल तुम्हारा ऐसा साथी है जो तुम्हारी सहायता कर सकता है। इससे संदेश भेजे जा सकते हैं, संगीत सुना जा सकता है, फोटो खींच सकते हैं, कैलकुलेटर का काम ले सकते हैं, अनेक व्यक्तियों के सम्पर्क नम्बर, दर्ज कर सकते हैं, विदेशी मुद्रा का

विनियम, कैलेंडर, समय आदि सभी सुविधाएँ इस पर उपलब्ध हैं। आशा है इन सबका आवश्यकता के अनुसार उपयोग करोगे, परन्तु अपनी पढ़ाई छोड़कर दिन भर इस पर नहीं लगे रहना। माता जी, पिता जी को प्रणाम कहना।

तुम्हारा बड़ा भाई

संजीव।

अपने मित्र को पत्र लिखकर उसे ग्रीष्मावकाश का कार्यक्रम बताओ।

नौशहरा, राजौरी,

जम्मू।

प्रिय रवि,

आज ही तुम्हारा पत्र मिला। पढ़कर प्रसन्नता हुई कि तुम्हारी परीक्षाएँ समाप्त हो चुकी हैं और तुम ग्रीष्मावकाश में अपने माता–पिता के साथ गाँव में ही रहोगे।

मैंने तो कुछ और ही कार्यक्रम बनाया है। मैं अपने माता–पिता के साथ कश्मीर जा रहा हूँ। मैं तथा माता पिता भी यही चाहते हैं कि तुम भी हमारे साथ चलो। पिछली बार मैं तुम्हारे साथ नैनीताल गया था। तथा तुमने मुझे यह वायदा किया था कि अगले वर्ष तुम मेरे साथ चलोगे। कश्मीर अत्यन्त सुन्दर है और वहाँ अनेक दर्शनीय स्थल हैं हम लोग वहाँ शंकराचार्य मंदिर के भी दर्शन करेंगे यदि तुम हमारे साथ चलोगे तो मेरा आनन्द दुगुना हो जाएगा। मैंने तुम्हारे पिताजी को भी पत्र लिख दिया है, जिसमें मैंने उनसे तुम्हें साथ ले जाने की अनुमति माँगी है। तुम अपनी तैयारी शुरू कर दो। हम अब शीघ्र ही कश्मीर घूमने चलेंगे।

पत्रोत्तर की प्रतीक्षा में

तुम्हारा मित्र,

अरुण कुमार।

दिनांक – 15–04–20.....

प्रश्न अभ्यास

1. 'पत्र लेखन' से आपका क्या अभिप्राय है?
2. 'पत्र लेखन' के आवश्यक बिन्दु बताईए।
3. 'पत्र लेखन' की विशेषताएं लिखिए।
4. 'पत्र लेखन' के कितने प्रकार हैं, उदाहरण सहित चर्चा कीजिए।
5. पुस्तकें मँगवाने के लिए प्रकाशक को पत्र लिखिए।
6. विवाह पर अवकाश के लिए प्रार्थना पत्र लिखिए।
7. अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य को एक प्रार्थना पत्र लिखें जिसमें विद्यालय की सफाई के बारे में सुझाव दिए गए हों।

संदर्भ

1. डॉ. वासुदेवनन्दन प्रसाद, आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना
2. ओंकार नाथ वर्मा, सामान्य हिन्दी (अरिहन्त)
3. अरविन्द कुमार, सम्पूर्ण व्याकरण और रचना
4. इन्टरनेट

4.3 अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

हिन्दी भाषा में अनेक शब्दों के स्थान पर एक शब्द का प्रयोग कर सकते हैं अर्थात हिन्दी में कई शब्दों की जगह पर एक शब्द लगाकर भाषा को प्रभावशाली बनाया जा सकता है।

(अ)

जिसकी कल्पना न की जा सके	अकल्पनीय
जो कहा न जा सके	अकथनीय
हाथी को हाँकने का लोहे का हुक	अंकुश
जो खाया न जा सके	अखाद्य
जिसका जनम पहले हुआ हो	अग्रज
आगे का विचार करने वाला	अग्रसोची
जो सबके आगे रहता हो	अग्रणी

जिसका ज्ञान इन्द्रियों के द्वारा न हो	अगोचर
जो नेत्रों से दिखाई न दे	अगोचर
जो इन्द्रियों से परे हो	अगोचर
समाचार पत्र का मुख्य (सम्पादकीय) लेख	अग्रलेख
जो खाली न जाय	अचूक
जो अपने स्थान या स्थिति से अलग न किया जा सके	अच्युत
जिसकी चिन्ता नहीं हो सकती	अचिन्त्य
जो छूने योग्य न हो	अछूत
जो छुआ न गया हो	अछूता
जो बूढ़ा न हो	अजर
जिसका कोई शत्रु उत्पन्न न हुआ हो	अजातशत्रु
जिसे जीता न जा सके	अजेय
जो न जाना गया हो	अज्ञात
जो कुछ नहीं जानता हो	अज्ञ
जिसके कुल का पता ज्ञात न हो	अज्ञातकुल
जिस हँसी से अट्टालिका तक हिल जाय	अट्टहास
जो अपनी बात से न टले	अटल
न टूटने वाला	अटूट
जो अपनी जगह से न डिगे	अडिग
पदार्थ का सबसे छोटा इन्द्रिय–ग्राह्य विभाग या मात्रा	अणु
सीमा का अनुचित उल्लंघन	अतिक्रमण
जिसके आने की तिथि ज्ञात न हो	अतिथि
किसी कथा के अंतर्गत आने वाली दूसरी कथा	अन्तःकथा
जो सबके मन की जानता हो	अंतर्यामी
आवश्यकता से अधिक वर्षा	अतिवृष्टि
किसी बात या कथन को बढ़ा–चढ़ा कर कहना	अतिश्योक्ति
जो बीत गया है	अतीत
इन्द्रियों की पहुँच से बाहर	अतीन्द्रिय

जिसकी तुलना न की जा सके	अतुलनीय
जो दबाया न जा सके	अदम्य
जो देखा न जा सके	अदृश्य
जिसके समान दूसरा न हो	अद्वितीय
जो देखने योग्य न हो	अदर्शनीय
जो पहले न देखा गया हो	अदृष्टपूर्व
धर्म या शास्त्र के विरुद्ध कार्य	अधर्म
अधिकार या कब्जें में आया हुआ	अधिकृत
सर्वाधिकार सम्पन्न शासक या अधिकारी	अधिनायक
विधानमंडल द्वारा पारित या स्वीकृत्त नियम	अधिनियम
कर या शुल्क का वह अंश जो किसी कारणवश अधिक से अधिक लिया जाता है	अधिभार
यह पत्र, जिसमें किसी को कोई काम करने का अधिकार दिया जाय	अधिपत्र
किसी पक्ष का समर्थन करने वाला	अधिवक्ता
वास्तविक मूल्य से अधिक लिया जाने वाला शुल्क	अधिशुल्क
सरकार द्वारा प्रकाशित या सरकारी बजट में छपी सूचना	अधिसूचना
किसी कार्यालय या विभाग का वह अधिकार जो अपने अधीन कार्य करने वाले कर्मचारियों की निगरानी रखे	अधीक्षक
किसी सभा, संस्था का प्रधान	अध्यक्ष
नीचे की ओर मुख किये हुए	अधोमुख
राज्य के अधिपति द्वारा जारी किया गया वो अधिकारिक आदेश जो किसी विशेष समय तक ही लागू हो	अध्यादेश
वह स्त्री जिसका पति दूसरा विवाह कर ले	अध्गूढ़ा
अन्य से सम्बन्ध न रखने वाला	अनन्य
जिसका कोई दूसरा उपाय न हो	अनन्योपाय
जिसका स्वामी न हो	अनाथ
जिसका आदर न किया गया हो	अनादृत
दूसरों के गुणों में दोष ढूँढने की वृति का न होना	अनसूया
जिसका वचन द्वारा वर्णन न किया जा सके	अनिवर्चनीय

जिसका निवारण न किया जा सके	अनिवार्य
बिना पलक गिराये हुए	अनिमेश
जिसका उच्चारण न किया जा सके	अनुच्चरित
जो परीक्षा में उत्तीर्ण न हुआ हो	अनुत्तीर्ण
किसी कार्य के लिए दी जाने वाली सहायता	अनुदान
जिसकी उपमा न दी जा सके	अनुपम
जिसका अनुभव किया गया हो	अनुभूत
किसी मत या प्रस्ताव का समर्थन करने की क्रिया	अनुमोदन
किसी व्यक्ति या सिद्धान्त का समर्थन करने वाला	अनुयायी
एक भाषा की लिखी हुई बात को दूसरी भाषा में लिखना या कहना	अनुवाद
परम्परा से चली आई हुई बात, उक्ति या कला	अनुश्रुति
जिसका मन किसी दूसरी ओर हो	अन्यमनस्यक / अनमना
जिसका कोई निश्चित घर न हो	अनिकेत
नीचे की ओर लाना या खींचना	अपकर्ष
जो पहले पढ़ा न गया हो	अपठित
दोपहर के बाद का समय	अपराह्न
शरीर के लिए जितना धन आवश्यक हो उससे अधिक न लेना	अपरिग्रह
जो मापा न जा सके	अपरिमेय
जिसके बिना कार्य न चल सके	अपरिहार्य
जो आँखों के सामने न हो	अप्रत्यक्ष / परोक्ष
जिसके पार न देखा जा सके	अपारदर्शक
जो पूरा या भरा हुआ न हो	अपूर्ण
जिसकी अपेक्षा (उम्मीद) हो	अपेक्षित
अभिनय करने वाला पुरुष	अभिनेता
अभिनय करने वाली स्त्री	अभिनेत्री
जो किसी की ओर मुँह किये हुए हो	अभिमुख
जिस पर अभियोग लगाया गया हो	अभियुक्त
जिसका जन्म उच्च कुल में हुआ हो	अभिजात

किसी कार्य को बार–बार करना	अभ्यास
भली प्रकार से सीखा हुआ	अभ्यस्त
किसी वस्तु का भीतरी भाग	अभ्यन्तर
किसी वस्तु को प्राप्त करने की तीव्र इच्छा	अभीप्सा
जो कभी मृत्यु को प्राप्त न हो	अमर
जो काव्य, संगीत आदि का रस न ले	अरसिक
द्वार या आँगन के फर्श पर रंगों से चित्र बनाने या चौक पूरने की कला	अल्पना
जो अल्प (कम) जानता हो	अल्पज्ञ
जो इस लोक का न हो	अलौकिक
जो कम बोलता हो	अल्पभाषी
शरीर का कोई भाग	अवयव
जिस पर विचार न किया गया हो	अविचारित
सरकार द्वारा दूसरे देश की तुलना में अपने देश की मुद्रा का मूल्य कम कर देना	अवमूल्यन
विना वेतन के कार्य करने वाला	अवैतनिक
जो सीधा (ठीक किय) न जा सके	असाध्य
जो शोक करने योग्य नहीं है	अशोच्य
जो स्त्री (ऐसी पर्दानशीन है कि) सूर्य को भी न देख सके	असूर्यम्पश्या
जिसका विभाजन न किया जा सके	अविभाजित
अच्छा–बुरा समझने की शक्ति का अभाव	अविवेक
जो विधान या नियम के विरुद्ध हो	असंवैधानिक
जिसमें शक्ति नहीं है	अशक्त
न हो सकने वाला	अशक्य/असंभव
जो शोक करने योग्य नहीं	अशोक्य
फेंककर चलाया जाने वाला हथियार	अस्त्र
किसी प्राणी को न मारना	अहिंसा
अंडे से जन्म लेने वाला	अंडज
महल का भीतर भाग	अन्तःपुर

गुरू के समीप रहने वाला विद्यार्थी	अन्तेवासी
जिसका जन्म छोटी (अन्त्य) जाति में हुआ हो	अन्त्यज
जिसका जन्म अनु (पीछे) हुआ हो	अनुज
जो पहले कभी न हुआ हो	अभूतपूर्व
जो बीत चुका है	अतीत
जिसकी गहराई की थाह न लग सके	अथाह
जो सदा से चलता आ रहा है	अनवरत
जो आगे की न सोचता हो	अदूरदर्शी
धरती आकाश के बीच का स्थान	अंतरिक्ष
जिस पर आक्रमण न किया गया हो	अनाक्रांत
जो जीता न जा सके	अजेय
जिसके पास कुछ न हो	अकिंचन
जो कानून के विरुद्ध हो	अवैध
जो समय पर न हो	असामयिक
अपने हिस्से या अंश के रूप मे कुछ देना	अंशदान
जिस के समान दूसरा न हो	अद्वितीय
जिसमें कुछ करने की क्षमता न हो	अक्षम
जिसका खण्डन न हो सके	अकाट्य
जिस पर मुकद्दमा चल रहा हो	अभियुक्त
जिसकी सीमा न हो	असीम
जो दिया न जा सके	अदेय
अनुकरण करने योग्य	अनुकरणीय
जो मानव के योग्य न हो	अमानुषिक
जो बिना बुलाये आया हो	अनाहूत
जिस पर कोई नियंत्रण न हो	अनियंत्रित
जिसे अधिकार दिया गया हा	अधिकृत
जारी किया गया आधिकारिक आदेश	अध्यादेश
वर्षा का अभाव	अनावृष्टि

जिस पर निर्णय न हुआ हो	अनिर्णीत
जिस पर अनुग्रह किया गया हो	अनुग्रहीत
जो हिसाब–किताब की जाँच करता हो	अंकेक्षक
जिसकी परिभाषा देना संभव न हो	अपरिभाशित
जो पहले कभी घटित न हुआ हो	अघटित
वह पत्र जिसमें किसी को कुछ करने का अधिकार दिया गया हो	अधिपत्र
सीमा का उल्लंघन करना	अतिक्रमण
जो पहले कभी नहीं सुना गया	अश्रुतपूर्ण
जिसमें सामर्थ्य नहीं है	असमर्थ
जिसकी आशा न की जाय	अप्रत्याशित
जिसे पढ़ा न जा सके	अपाठ्य
जिसे भेदा (तोड़ा) न जा सके	अभेद
आत्मा व परमात्मा का द्वैत (अलग–अलग होना) न मानने वाला	अद्वैतवाद
अल्प (कम) वेतन भोगने वाला (पाने वाला)	अल्पवेतनभोगी
अध्ययन (पढ़ना) का काम करने वाला	अध्येय
अध्यापन (पढ़ाने) का काम करने वाला	अध्यापक
आग से झुलसा हुआ	अनलद
जहां गमन (जाया) न किया जा सके	अगमन

(आ)

वह स्त्री जिसका पति परदेश से लौटा हो	आगतपतिका
वह स्त्री जिसका पति आने वाला है	आगमस्यितपतिका
किसी बात पर बार–बार ज़ोर देना	आग्रह
वह जो अपने आधार से पवित्र है	आधारपूत
सामाजिक एवं प्रशासनिक अनुशासन की क्रूरता से उत्पन्न स्थिति	आतंक
अपने प्राण आप लेने वाला	आत्मघाती
दूसरे के हित में अपने आप को संकट में डालना	आत्मोत्सर्ग
अर्थ या धन से सम्बन्ध रखने वाला	आर्थिक

जो जन्म लेते ही गिर या मर गया है	आदण्डपात
सर्वप्रथम मत को प्रवर्तित करने वाला	आदिप्रवर्तक
आदि से अन्त तक	आद्योपान्त
पैर से लेकर सिर तक	आपादमसतक
ऐसा व्रत, जो मरने पर ही समाप्त हो	आमरणव्रत
किसी पात्र आदि के अन्दर का स्थान, जिसमें कोई चीज आ सके	आयतन
देश में विदेश से माल आने की क्रिया	आयात
गुण–दोषों का विवेचन करने वाला	आलोचक
जिसे आश्वासन दिया गया हो	आश्वस्त
वह कवि जो तत्क्षण कविता कर सके	आशुकवि
ईश्वर में विश्वास रखने वाला	आस्तिक
जिसकी बाँहें जानु (घुटने) तक पहुँचती हों	आजानुबाहु
आशा से अतीत (परे)	आशातीत
सेतुबंध रामेश्वरम् से हिमालय तक	आसेतुहिमालय
बालक से वृद्ध तक	आयालवृद्ध
आयोजन करने वाला व्यक्ति	आयोजक
धन से संबंध रखने वाला	आवधिक
जो आलोचना के योग्य हो	आलोच्य
किसी अवधि से संबंध रखने वाला	आवधिक
आशुलिपि (शार्ट हैण्ड) जाननेवाला लिपिक	आशुलिपिक
किसी देश के वे निवासी जो पहले से वहाँ रहते रहे हैं	आदिवासी

(इ, ई)

इन्द्रियों को वश में करने वाला	इंन्द्रियजित
इंद्रियों पर किया जाने वाला वश	इंद्रियाविग्रह
जो इंद्रियों के ज्ञान के बाहर है	इंद्रियातीत
अपनी इच्छा के अनुसार काम करने वाला	इच्छाचारी
किसी चीज या बात की इच्छा रखने वाला	इच्छुक
किन्ही घटनाओं का कालक्रम से किया गया वृत	इतिवृत

इतिहास को जानने वाला	इतिहासज्ञ
दूसरों की उन्नति को न देख सकना	ईर्ष्या
पूरब और उत्तर के बीच की दिशा	ईशान
जिसकी ईप्सा (इच्छा की गई हो)	ईप्सित
किसी नई चीज का बनाना	ईजाद, आवि कार

(उ, ऊ)

खाने से बचा हुआ जूठा भोजन	उच्छिष्ट
जो छाती के बल चलता हो	उदग (सर्प)
जिसकी उपमा दी जाय	उपमेय
जिससे उपमा दी जाय	उपमान
जिसका मन उद्दार हो	उदारमना
जिसका ह्रदय उदार हो	उदारह्रदय
ऊपर कहा हुआ	उपर्युक्त
जिसका उल्लेख किया गया हो	उल्लिखित
जो धरती फोड़ कर जनमता है	उद्भिज
जो उद्धार करता है	उद्धारक
जो किसी नियम को न माने	उच्छृंखल
किसी के बाद उसकी संपत्ति प्राप्त करने वाला	उत्तराधिकारी
जिसने ऋण चुका दिया हो	उऋण
ऊपर आने वाला श्वास	उच्छवास
जिस पर किसी काम का उत्तरदायित्व हो	उत्तरदायी
वह वस्तु जिसका उत्पादन हुआ हो	उत्पाद
सूर्य जिस पर्वत के पीछे निकलता है	उदयाचल
जिस पर उपकार किया गया हो	उपकृत
पर्वत के पास की भूमि	उपत्यका
सूर्योदय से पहले का समय	उशाकाल
जिसके विषय में उल्लेख करना आवश्यक हो	उल्लेखनीय
जिसने अपना ऋण चुका दिया हो	उऋण

जो भूमि उपजाऊ हो	उर्वरा
जिस भूमि में कुछ पैदा न होता हो	ऊसर
ऊपर की ओर जाने वाला	ऊर्ध्वगामी
वह व्यक्ति जो हाथ उठाए हो	ऊर्ध्वबाहु
ऊपर की ओर बढ़ती हुई साँस	उर्ध्वश्वास

(ए, ऐ)

जिसका चित्त एक जगह स्थिर हो	एकाग्रचित
जिस पर किसी अन्य को कुछ अधिकार न हो	एकाधिकार
जो दिन में एक बार भोजन करता है	एकाहारी
इस लोक से सम्बन्धित	ऐहिक
इन्द्रजाल करने वाला	ऐन्द्रजालिक
जिसका संबंध किसी एक देश से हो	एकदेशीय
किसी एक पक्ष से संबंधित	एकपक्षिय
इंद्रियों से संबंधित	ऐंद्रिक
इस लोक से संबंध रखने वाला	ऐहलौकिक
इतिहास से संबंधित	ऐतिहासिक
जो अपनी इच्छा पर निर्भर हो	ऐच्छिक

(ओ, औ)

परब्रह्म का सूचक 'ओं' शब्द	ओंकार
जिसका उच्चारण ओष्ठ (ओंठ) से हो	ओश्ठय
आड़न या परदे के लिये रथ या पालकी को ढकने वाला कपड़ा	ओहार
सारे संसार के देशों की खेल प्रतियोगितायें	ओलम्पिक
अपनी विवाहित पत्नी से उत्पन्न (पुत्र)	औरस (पुत्र)
जिसका संबंध उपनिवेश या उपनिवेशों से हो	औपनिवेशिक
उपचार या ऊपरी दिखावे के रूप में होने वाला	औपचारिक
जिसका संबंध उपन्यास से हो	औपन्यासिक

(क)

जो कान को कटु लगे	कर्णकटु
कष्टों या काँटो से भरा हुआ	कंटकाकीर्ण
अपने कर्तव्य का निर्णय न कर सकने वाला	किंकर्तव्यविमूढ़
जो कटु बोलता है	कटुभाषी
जो कष्ट को सहन कर सके	कश्टसहिष्णु
जो काम से जी चुराता हो	कामचोर
किसी के उपकार का न मानने वाला	कृतघ्न
जो कहा गया है	कथित
जो कहने योग्य हो	कथ्य / कथनीय
जो कला जानता हो	कलाविद् / कलाकार
जो अच्छे कुल में उत्पन्न हुआ हो	कुलीन
बेलों आदि से घिरा हुआ सुरम्य स्थान	कुंज
जो किये गये उपकारों को जानता (मानता) हो	कृतज्ञ
जो कर्त्तव्य से च्युत हो गया है	कर्तव्यच्युत
जिसे बाह्य जगत् का ज्ञान न हो	कुपमण्डूक
किसी की कृपा से पूरी तरह संतुष्ट	कृतार्थ
जिसकी बुद्धि कुश के अग्र (नोक) की तरह तेजे हो	कुशाग्रबुद्धि
जो पुरुष कविता रचता है	कवि
जो स्त्री कविता रचती है	कवयित्री
जिसके पास करोड़ो रुपये हों	करोड़पति
वह बात जो जनसाधारण में चलती आ रही है	किंवदन्ती
जिस लड़की का विवाह न हुआ हो	कुमारी
जिसे क्रय किया गया हो	क्रीत
वह नायिका जो कृष्ण पक्ष मेंन अपने प्रेमी से मिलने जाती हो	कृष्णाभिसारिका
जो कल्पना से परे हो	कल्पनातीत
कारागार से संबंध रखने वाला	कारागारिक
कार्य करने वाला व्यक्ति	कार्यकर्ता
किन्हीं निश्चित कार्यों के लिए बनायी गयी समिति	कार्यसमिति

पद, उम्र आदि के विचार से औरों से अपेक्षाकृत छोटा	कनिष्ठ
ठीक अपने क्रम से आया हुआ	क्रमागत
नियम विरुद्ध या निन्दनीय कार्य करने वालों की सूची	काली सूची (ब्लैक लिस्ट)
जो केन्द्र की ओर उन्मुख होता हो	केन्द्राभिमुख
क्रम के अनुसार	क्रमानुसार
किसी विचार/निणर्य को कार्यरूप देना	कार्यान्वयन
धन का देवता	कुबेर
कुंती का पुत्र	कौंतेय,
राजनीतिज्ञों एवं राजदूतों की कला	कूटनीति
क्षमा पाने योग्य	क्षम्य
क्षण भर में नष्ट होने वाला	क्षणभंगुर
जिसका हाथ बहुत तेज चलता हो	क्षिप्रहस्त
भूख से व्याकुल	क्षुधातुर

(ख)

ऐसा ग्रहण जिसमें सूर्य या चन्द्र का पूरा बिम्ब ढँक जाय	खग्रास
जो सदैव हाथ में खड्ग लिए रहता हो	खड़गहस्त
खाने योग्य पदार्थ	खाद्य
जिसका कोई हिस्सा टूटकर अलग हो गया हो	खंडित
वह नायिका जिसका पति रात को किसी अन्य स्त्री के पास रहकर प्रातः उसके पास आता हो	खंडिता
ऐसा जो अंदर से खाली हो	खोखला
किसी के घर की होने वाली तलाशी	खानातलाशी

(ग)

प्राचीन आदर्श के अनुकूल चलने वाला	गतानुगतिका
जो बीत चुका हो	गत
जो इंद्रियों के ज्ञान के बाहर है	गोतीत
गणित शास्त्र के जानकार	गणितज्ञ

जो गाँव से सम्बन्धित हो	ग्रामीण
वह नाटक जिसमें गीत अधिक हों	गीतरूपक
पृथ्वी की वह शक्ति जो सभी चीजों को अपनी ओर खींचती हो	गुरुत्वाकर्षण
जो कठिनाइयों से पचता है	गरिष्ठ / गुरुपाक
जो कानून के विरुद्ध है	गैरकानूनी
गंगा का पुत्र	गांगेय
बहुत गप्पे हाँकने वाला	गपोड़िया
जो गिरि (पहाड़) को धारण करता हो	गिरधारी
गृह (घर) बसा कर रहने वाला	गृहस्थ
रात और संध्या के बीच का समय	गोधूलि
जो छिपाने योग्य हो	गोपनीय
गगन (आकाश) चूमने वाला	गगनचुम्बी

(घ)

घास छीलने वाला	घसियारा
किसी के इर्द–गिर्द घेरा डालने की क्रिया	घेराबन्दी
जिसकी घोषणा की गयी हो	घोषित
बहुत सी घटनाओं का सिलसिला	घटनावली, घटनाक्रम,
घूस लेने वाला / रिश्वत लेने वाला	घूसखोर / रिश्वतखोर
घुलने योग्य पदार्थ	घुलनशील
घृणा करने योग्य	घृणास्पद

(च)

महीने के किसी पक्ष की चौथी तिथि	चतुर्थी
बरसात के चार महीने	चतुर्मास
चार वेदों को जानने वाला	चतुर्वेदी
जो चक्र धारण करता है	चक्रधर / चक्रधारी
जिसके चूड़ा पर चन्द्र रहे	चन्द्रचूड़
जो चंद्र धारण करता हो	चंद्रधारी
जिसके शिखर (सिर) पर चंद्र हो	चंद्रशेखर

करने की इच्छा	चिकीर्षा
जिसकी चिकित्सा की जा सके	चिकित्स्य
चार राहों वाला	चौराहा
जिसके हाथ में चक्र हो	चक्रपाणि
जिसके चार पैर हों	चतुष्पद
अधिक दिनों तक जीने वाला	चिरंजीवी
जो चिरकाल तक बना रहे	चिरस्थायी
चेतन स्वरूप की माया	चिद्विलास
जिसका चिंतन किया जाना चाहिए	चिंतनीय
रोगियों की चिकित्सा करने का स्थान	चिकित्सालय
चूहे फँसाने का पिंजड़ा	चूहेदानी
करुण स्वर में चिल्लाना	चीत्कार
किसी को सावधान करने के लिए कही जाने वाली बात	चेतावनी
चौथे दिन आने वाला ज्वर	चौथिया
चारों ओर की सीमा	चौहद्दी
जिस पर चिह्न लगाया गया हो	चिह्नित
जो चर्चा का विषय हो	चर्चित
किसी वस्तु का चौथा भाग	चतुर्थांश
जो अपने स्थान से डिग गया हो	च्युत
जिसे चार भुजाएँ हैं	चतुर्भुज

(छ)

छिपे वेश में रहना	छद्मवेश
सेना के रहने का स्थान	छावनी
छात्रों के रहने का स्थान	छात्रावास
सहसा छिपकर आक्रमण करने वाला	छापामार
दूसरों के दोषों को खोजना	छिद्रान्वेषण
दूसरों के दोषों को ढूँढने वाला	छिद्रान्वेषी
किसी काम या व्यक्ति में छिद्र याा दोष निकालने का कार्य	छिद्रान्वेषण

कर्मचारियों आदि को छाँटकर निकालने की क्रिया	छँटनी
छः महीने के समय से सम्बन्धित	छमाही

(ज)

जो जन्म से अंधा हो	जन्मांध
अन्न को पचाने वाली जठर (पेट) की अग्नि	जठराग्नि
जो जरायु (गर्भ की थैली) से जनमता है	जरायुज
जल में जनम लेने वाला	जलज
जल में रहने वाले जीव–जन्तु	जलचर
जो यान जल में चलताा हो	जलयान

(झ)

जिसके लम्बे–लम्बे बिखरे बाल हों	झबरा
झूट बोलने वाला	झूठा
अपनी झक (धुन) में मस्त रहने वाला	झक्की
झमेला करने वाला	झमेलिया
काँटेदार झाड़ियों का समूह	झाड़झंखाड़
वह कपड़ा जिससे कोई चीज झाड़ी जाय	झाड़न
झीं–झीं की तेज आवाज़ करने वाला कीड़ा	झींगुर

(ट)

सिक्के ढालने का कारखाना	टकसाल
मूल बातों को संक्षेप में लिखना	टिप्पणी
टाइप करने की कला	टंकण
लगातार घंटा बजने से होने वाला शब्द	टनाटन
चारों ओर जल से घिरा हुआ भू–भाग	टापू
किसी ग्रंथ या रचना की टीका करने वाला	टीकाकार
किराए पर चलने वाली मोटर गाड़ी	टैक्सी
ठगों का मोदक/लड्डू जिसमें बेहोश करने वाली चीज़ मिली रहती है	ठगमोदक/ठगलड्डू

(ठ)

ठकठक करके बर्तन बनाने वाला	ठठेरा
ठठेरे की बिल्ली जिसे ठक ठक शब्द से न डरे	ठठेरमंजारिका
ठन ठन की अवाज़	ठनकार
ठूसकर भरा हुआ	ठसाठस
दिन रात ठाढ़े (खड़) रहने वाला साधु	ठाढ़ेश्वरी
ठीका लेने वाला	ठीकेदार

(ड)

डंडी मारने वाला	डंडीमार
डाका मारने वाला	डकैत
डफली बजाने वाला	डफालची / डफाली
स्थल या जल का वह तग या पतला भाग जो स्थल या जल के दो बड़े खंडों को मिलाता है	डमरुमध्य
बहुत डरने वाला	डरपोक

(त)

उसी समय का	तत्कालीन
जिसे त्याग देना उचित हो	त्याज्य
किसी पद अथवा सेवा से मुक्ति का पत्र	त्यागपत्र
किसी भी पक्ष का समर्थन न करने वाला	तटस्थ
ऐसा तर्क जो देखने पर ठीक प्रतीत होता हो, किन्तु वैसा न हो	तर्काभास
तीनकालों की बात जानने वाला	त्रिकालज्ञ
भौहों के बीच का ऊपरी भाग	त्रिकुटी
सत्य, रज व तम	त्रिगुण
दैहिक, दैविक व भौतिक ताप या कष्ट	त्रिताप
वात, पित्त व कफ	त्रिदोष
आँवला, हर्र व बहेड़ा	त्रिफला
तीन युगों में होने वाला	त्रियुगी
तीन नदियों का संगम	त्रिवेणी

तीन लोकों का समूह	त्रिलोक
स्वर्गलोक, मृत्युलोक और पाताललोक	त्रिभुवन / त्रिलोक
शीतल, मन्द व सुगन्धित वायु	त्रिविधवायु
जो तर्क योग्य हो	तार्किक
तैरने की इच्छा	तितीर्षा
ऋण के रूप में आर्थिक सहायता	तकाबी
एक व्यक्ति द्वारा चलायी जाने वाली शासन प्रणाली	तानाशाही
चोरी छिपे चुगी शुल्क आदि दिये बना माल लाकर बेचने वाला	तस्कर
जो तर्क के आधार पर सही सिद्ध हो	तर्कसंगत
तर्क के द्वारा जो माना गया हो	तर्क सम्मत

(द)

दो बार जन्म लेने वाला	द्विज
जिसने गुरु से दीक्षा ली हो	दीक्षित
देने की इच्छा	दित्सा
अनुचित या बुरा आचरण करने वाला	दुराचारी
बहुत दूर की बात पहले से ही सोच लेने वाला	दूरदर्शी
जिसे समझना बहुत कठिन हो	दुश्कर
जिसका दमन कठिन हो	दुर्दम्य / दुर्दांत / दुर्धर्श
जिसको प्राप्त करना बहुत कठिन हो	दुर्लभ
जो मुश्किल से प्राप्त हो	दुश्माप्य
जिसमें जाना या समझना कठिन हो	दुर्गम
जिसको लाँघना कठिन हो	दुर्लघ्य
पति के छोटे भाई की स्त्री	देवरानी
दैव या प्रारब्ध सम्बन्धी बातें जानने वाला	देवज्ञ
दिन केन मय अपने प्रिय से मिलने जाने वाली नायिका	दिवाभिसारिका
जो विलंब या टालमटोल से काम करे	दीर्धसूत्री
दशरथ का पुत्र	दाशरथि
देखने की इच्छा	दिदृक्षा

(ध)

सदा प्रसन्न रहने वाला या कला–प्रेमी नायक	धीरललित
शक्तिशाली, दयालु और योद्धा नायक	धीरोदात्त
बहुत चंचल, दुष्ट और अपनी प्रशंसा करने वाला नायक	धीरोद्धत
मछली पकड़ने या बेचने वाली जाति विशेष	धीवर
हवा में मिली हुई धूल या भापन के कारण होने वाला अँधेरा धुन्ध जो वस्तु दूसरे के यहाँ रखी हो	धरोहर
ध्यान करने योग्य या लक्ष्य	ध्येय

(न)

नाक से रक्त बहने का रोग	नकसीर
नख से शिखा तक के सब अंग	नखशिख
नष्ट होने वाला	नश्वर
नभ (आकाश) में विचरण करने वाला	नभचर / खेचर
नया उदित होने वाला	नवोदित
अभी–अभी जन्म लेने वाला	नवजात
नदी से सींचा जाने वाला प्रदेश	नदीमातृक
नया–नया आया हुआ	नवागन्तुक
नगर में जन्म लेने वाला	नागरिक
जिसे ईश्वर पर विश्वास न हो	नास्तिक
जिसका कोई आकार न हो	निराकार
जिसे कोई भय न हो	निर्भय
जो एक अक्षर भी न जानता हो	निरक्षर
जिसमें कोई दोष न हो	निर्दोष
जिसकी उपमा न दी जा सके	निरुपम
जिसके हृदय में ममता न हो	निर्मम
जिसके हृदय में दया न हो	निर्दय
जिसे हानि या अनर्थ का भय न हो	निरापद
जिसके हृदय में पाप न हो	निष्पाप

निशि में विचरण करने वाला	निशाचर
बिना पलक गिराये हुए	निर्निमेष
जो तेजहीन हो	निस्तेज
जिसे कोई भ्रम या सन्देह न हो	निर्भ्रान्त
एक देश से माल दूसरे देश में जाने की क्रिया	निर्यात
जिसका कोई शुल्क न लिया जाय	निःशुल्क
किसी के साथ सम्बन्ध न रखने वाला	निःसंग
जिसकी कोई सन्तान न हो	निःसंतान
जिसे कोई आकांक्षा न हो	निःस्पृह
जो अपने लाभ या स्वार्थ का ध्यान न रखता हो	निःस्वार्थ
जो निन्दा के योग्य हो	निन्दनीय
जो कामना रहित हो	निश्काम
जो चिन्ता से रहित हो	निश्चिंत
जिसका कोई आधार न हो	निराधार
जिसका कोई आश्रय न हो	निराश्रय
जिसके पास शक्ति न हो	निर्बल
जिस पर किसी प्रकार का अंकुश (नियंत्रण) न हो	निरंकुश
जो उत्तर न दे सके	निरुत्तर
जो न्याय जानता है	नैयायिक
शासकीय अधिकारियों का शासन	नौकरशाही
जो अति (बहुत) लघु (छोटा) नहीं है	नातिलघु
जो अति (बहुत) दीर्घ (बड़ा) नहीं है	नातिदीर्घ
जो नृत्य करता है	नृत्यकार/नर्तक
जिसमें तेज नहीं है	निस्तेज
जो नीचे लिखा गया है	निम्नलिखित
जिसके बारे में मतभेद न हो	निर्विवाद
निर्वाचन में अपना मत देने वाला	निर्वाचक
उच्च न्यायालय का न्यायाधीश	न्यायमूर्ति

नगर में रहने वाला	नागरिक
जिसे देश से निकाला गया हो	निर्वासित
जिसका मूल नहीं है	निर्मूल
जिसका कोई अर्थ न हो	निरर्थक
जो सत्व, रज और तम तीनों गुणों से परे हो	निर्गुण
जिसमें मल (गंदगी) न हो	निर्मल
जिस स्थान पर अभिनेता अपना वेश–विन्यास करते हैं	नेपथ्य

(प)

शरीर के एक पार्श्व का लकवा	पक्षापात
अपने पति के प्रति अनन्य अनुराग रखने वाली स्त्री	पतिव्रता
अपने पद से हटाया हुआ	पदच्युत
अपने को पंडित मानने वाला	पंडितम्मन्य
पंडितों में पंडित	पंडितरा
पथ का प्रदर्शन करने वाला	पथ प्रदर्शक
जिसमें पाँच कोने हों	पंचकोण
जो दृष्टि के क्षेत्र से परे हो	परोक्ष
जो परायों का अर्थ (हित) चाहता है	परमार्थी
जो अपने पथ से भटक गया हो	पथभ्रष्ट
वह स्त्री जिसके पति ने त्याग (छोड़) दिया हो	परित्यक्ता
जो दूसरों का भला चाहने वाला हो	परार्थी
पानी में डूबकर चलने वाली नाव	पनडुब्बी
जो दूसरों का उपकार करने वाला हो	परोपकारी
दूसरों के आश्रय में रहने वाला	पराश्रयी
पन्द्रह दिन में होने वाला	पाक्षिक
जो पृथ्वी से सम्बन्धित हो	पार्थिव
जिसके आर–पार देखा जा सके	पारदर्शी
आटा पीसने वाली स्त्री	पिसनहारी
पीने की इच्छा	पिपासा

जो पिंड से जनमता है	पिंडज
पिता की हत्या करने वाला	पितृहंता
पिता का पिता	पितामह
पिता के पिता का पिता	प्रपितामह
कही हुई बात को बार–बार कहना	पिष्टपेषण
जो उक्ति बार–बार कही जाय	पुनरुक्ति
जो किसी का प्रतिनिधित्व (किसी की जगह काम) करता है	प्रतिनिधि
वह शासन प्रणाली जिसमें जन साधारण का शासन हो	प्रजातंत्र
शीघ्र किसी बल या युक्ति को सोच ले	प्रत्युत्पन्नमति
वह जिससे प्रेम किया जाय	प्रेमपात्र
समान रूप से आगे बढ़ने की चेष्टा	प्रतिस्पर्द्धा
जिसमें प्रतिभा है	प्रतिभावान
जो प्रणाम करने योग्य हो	प्रणम्य
जो मुकदमे का प्रतिवाद करे	प्रतिवादी / मुद्दालेह
जिसकी बाँहें अधिक लंबी हों	प्रलंबबाहु
बच्चा जनने वाली स्त्री	प्रसूत
जो पहरा देने वाला हो	प्रहरी
उपकार के प्रति किया गया उपकार	प्रत्यपकार
किसी आरोप के उत्तर में किया जाने वाला आरोप	प्रत्यरोप
लौटकर आया हुआ	प्रत्यागत
वह नायिका जिसका पति विदेश जाने को हो	प्रवत्स्यपतिका
वह स्त्री जिसका पति प्रोषित (परदेश गया) हो	प्रोषितपतिका
जो पूछने योग्य हो	प्रष्टव्य
प्राण देने वाली औषधि	प्राणदा
पाप या अपराध करने पर दोषमुक्त होने के लिए किया जाने वाला धार्मिक या शुभ कार्य	प्रायश्चित
जो देखने में प्रिय हो	प्रियदर्शी
जो प्रिय बोलता हो	प्रियवादी

प्रिय बोलने वाली स्त्री	प्रियंवदा
जो दूसरे के अधीन हो	पराधीन
जो प्रशंसा के योग्य हो	प्रंशंसनीय
ऐतिहासिक युग के पूर्व का	प्रागैतिहासिक
पिता से प्राप्त की हुई (सम्पत्ति)	पैतृक
आँखों के समक्ष	प्रत्यक्ष
जो अपनी मातृभूमि छोड़ विदेश में रहता हो	प्रवासी
प्रयोग में लाने योग्य	प्रयोजनीय
किसी टूटी–फूटी वस्तु का पुनर्निर्माण	पुनर्निर्माण
जो पांचाल देश की हो	पांचाली
पर्वत की कन्या	पार्वती

(फ)

जो केवल फल खाकर निर्वाह करता हो	फलाहारी
जिस स्थान पर बैठकर माल खरीदा और बेचा जाता हो	फड़
आय से अधिक व्यर्थ खर्च करने वाला	फिजूलखर्ची
फलने वाला या फल (ठीक परिणाम) देने वाला	फलदायी
वह पात्र जिसमे शोभा के लिए फूल लगाकर रखे जाते हैं	फूलदान
जिस कागज पर मानचित्र, विवरण या कोष्ठक अंकित हो	फलक
छत में टाँगने का शीशे का कमल या गिलास, जिसमें मोमबत्तियाँ जलती हों	फानूस
झरू फिरकर सौदा बेचने वाला	फेरीवाला

(ब)

किसी देवता पर चढ़ाने के लिए मारा जाने वाला पशु	बलि
जल में लगने वाली आग	बड़वागिन
जिसने बहुत कुछ सुन रखा हो	बहुश्रुत
बहुत –सी भाषाओं को बोलने वाला	बहुभाषाभाशी
बहुत–सी भाषाओं को जानने वाला	बहुभाषाविद्
जिसने बहुत कुछ देखा हो	बहुदर्शी
बहुत से रूप धारण करने वाला	बहुरूपिया

जिस स्त्री को सन्तान न पैदा होती हो	बाँझ
छोटे कद का आदमी	बौना
भोजन करने की इच्छा	बुभुक्षा
जिसकी जीविका बुद्धि के बल पर चलती हो	बुद्धिजीवी
जो बुद्धि द्वारा जाना जा सके	बोधगम्य
बहुत बोलने वाला	बहुभार्पा
आधे से अधिक लोगों की सम्मिलित एक राय	बहुमत
जिसके पासन कोई रोजगार न हो	बेरोजगार

(भ)

जिसका हृदय भग्न हो	भग्नहृदय
भविष्य में होने वाला	भावी
जो भाग्य का धनी हो	भाग्यवान
दीवार पर बने हुए चित्र	भितिचित्र
भूतों का ईश्वर	भूतंश
जो भू–धारण करता है	भूधर
जो पृथ्वी के गर्भ (भीतर) के हाल/शास्त्र जानता हो	भूगर्भयेत्तर/भूगर्भशास्त्री
वह शास्त्र जिसमें पृथ्वी का स्वरूप का वर्ण हो	भूगोल
वे बातें जो पुस्तक के आरंभ में लिखी जाय	भूमिका/प्राक्कथन
जो पूर्व में था या हुआ पर अभी नहीं है	भूतपूर्व
(किसी पद पर) जो पहले रहा हो	भूतपूर्व

(म)

जिसकी आत्मा महान हो	महात्मा
किसी बात का गूढ़ रहस्य जानने वाला	मर्मज्ञ
जो मछली का आहार करता है	मत्स्याहारी
जिसकी भुजाएँ बड़ी हों	महाबाहु
देवताओं पर चढ़ाने हेतु बनाया गया दही, घी, जल, चीनी और शहद का मिश्रण	मधुपर्क
किसी मत को मानने वाला	मतानुयायी
मनन करने योग्य	मननीय

जो मान–सम्मान के योग्य हो	माननीय
जो मधुर बोलता हो	मधुरभाषी
मित (कम) बोलने वाला	मितभाषी
कम खर्च करने वाला	मितव्ययी
एक महीने में होने वाला	मासिक
माता की हत्या करने वाला	मातृहंता / मातृघाती
मरने की इच्छा	मुमूर्ज्ञा
मुँह पर निकलने वाली फुंसियाँ	मुँहासे
जिसे मोक्ष की कामना हो	मुमुक्षु
भेड़ का बच्चा	मेमना
जिसमें मल (गंदग) हो	मलिन
मेघ की तरह नाद करने वाला	मेघनाद
किसी विषय पर दूसरे से मत न मिलना	मतभेद
चुनाव में अपना मत देने की क्रिया	मतदान
मनपसन्द या नामांकित	मनोनीत
वह स्थिति जब मुद्रा का चलन अधिक हो	मुद्रास्फीति
जिसने मृत्यु को जीत लिया है	मुत्युजय
मांस आहार या भोजन करने वाला	मांसाहारी / मांसभोजी

(य)

जहाँ तक हो सके	यथासंभव
शक्ति के अनुसार	यथाशक्ति
यश वाला	यशस्वी
क्रम के अनुसार	यथाक्रम
जहाँ तक सध सके	यथासाध्य
जैसा चाहिए वैसा	यथोचित
जो एक स्थान पर टिक कर नहीं रहता	यायावर
जो युद्ध में स्थिर रहता है	युधिष्ठिर
युद्ध का जहाज	युद्धपोत

नए युग या प्रवृत्ति का निर्माण करने वाला	युगनिर्माता
नए युग या प्रवृत्ति का प्रवर्तन (लागू करने) वाला	युगप्रवर्त्तक
युद्ध की इच्छा रखने वाला	युयुत्सा
यथार्थ (सच) कहने वाला	यथार्थवादी
जो क्रम के अनुसार हो	यथाक्रम
यात्रा करने वाला	यात्री

(ल)

आय–व्यय लेन–देन का लेखा करने वाला	लेखाकार
जो आसानी से पचता हो	लघुपाक

(व)

जो वर्णन के बाहर हो	वर्णनातीत
जो वचन से परे हो	वचनातीत
जो पूर्ण रूप से बहरा हो	वज्रबधिर
जिसके हाथ में वीणा हो	वीणापाणि
जिसके हाथ में वज्र हो	वज्रपाणि
बाल्यावस्था और युवावस्था के बीच का समय	वयःसन्धि
जिस स्त्री को कोई संतान न हुई हो	वन्ध्या
जो अधिक बोलता हो	वाचाल
जो मुकदमा दायर करता है	वादी / मुद्दई
वसुदेव के पुत्र	वासुदेव
जिसके भीतर की हवा का तापमान सम स्थिति में रखा गया हो	वातानुकूलित
जो कोई वस्तु वहन करता है	वाहक
बिक्री करने वाला	विक्रेता
जो अपने धर्म के विपरीत आचरण करता हो	विधर्मी
जिस स्त्री का पति मर गया हो	विधवा
जो विश्व भर का बंधु है	विश्वबंधु
जो विषयों में आसक्त है	विषयासक्त
जो विषय विचार में आ सकता है	विचारगम्य

बोलने की इच्छा	विवाक्षा

(श)

सौ वर्ष का समय	शताब्दी
शत्रु का नाश करने वाला	शत्रुघ्न
वह स्थान जहाँ मुर्दे जलाये जाते हैं	श्मशान
सौ में सौ	शतप्रतिशत
शयन (सोने) का कमरा	शयनागार
शरण में आया हुआ	शरणागत
जो शक्ति का उपासक हो	शाक्त
सदैव रहने वाला	शाश्वत
जो अन्न और साग–सब्जी खाता हो	शाकाहारी
जो शास्त्र को जानता हो	शास्त्रज्ञ
सिर पर धारण करने योग्य	शिरोधार्य
जिसके नख सूप के समान हों	शूर्पणखा
जिसके हाथ में शूल हो	शूलपाणि (शिव)
जो तेज चलता हो	शीघ्रगामी
जो शिव की उपासना करता हो	शैव
जो सुनने योग्य हो	श्रौतव्य / श्रवणीय
जो सुनने में मधुर हो	श्रुतिमधुर
जो सुनने में कटु लगे	श्रुतिकटु

(ष)

छह कोने वाली आकृति	षट्कोण
छह–छह महीने पर होने वाला	षणमासिक
संगीत के छः राग	षट्राग
छः मुँहों वाला	षण्मुख / शडानन
सोलह वर्ष की लड़की	षोडशी

(स)

एक ही जाति का	सजातीय
जहाँ अनेक नदियों का संगम (मिलन) हो	संगम
जो संगीत जानता है	संगीतज्ञ
एक ही समय में उत्पन्न होने वाला	समकालीन
जो सबको एक समान देखता है	समदर्शी
जिसका आचार अच्छा हो	सदाचारी
सड़ी हुई वस्तु की गन्ध	सढ़ाँध
जिसमें सात रंग हों	सतरंगा
अपने परिवार के साथ हैं जो	सपरिवार
सहन करना जिसका स्वभाव है	सहनशील
जो किसी सभा का सदस्य हो	सभासद
जो सब कुछ जानता हो	सर्वज्ञ
जो सबका प्यारा हो	सर्वप्रिय
जिस स्त्री का पति जीवित हो	सधवा
सबको जीतने वाला	सर्वजित
जो सव्य (बायें हाथ से हथियार आदि चलाने में) सधा हुआ हो	सव्यसाची
जो नाटक का सूत्र धारण (संचालन) करता है	सूत्रधारी
जो दया के साथ (दयालु) है	सदय
जो सरलता से बोध्य (समझने योग्य) हो	सुबोध
जो आसानी से पचता हो	सपाच्य
सत्य के प्रति आग्रह	सत्याग्रह
जो सब जगह व्याप्त हो	सर्वव्यापी
वह पुरुष जिसकी पत्नी साथ है	सपत्नीक
जो सर्वशक्तिसंपन्न है	सर्वशक्तिमान
समान वयवाला	समवयस्क
समान (एक ही) उदर से जन्म लेने वाला	सहोदर
एक ही समय में वर्तमान	समसासमयिक

न बहुत शीत (ठंडा) न बहुत उष्ण (गर्म)	समशीतोष्ण
प्राणों पर संकट लाने वाला	सांघातिक
जिसका कोई आकार हो	साकार
सब लोगों से सम्बन्ध रखने वाला	सार्वजनिक
एक सप्ताह में होने वाला	साप्ताहिक
सरस्वती का भक्त या सरस्वती से संबद्ध	सारस्वत
सब कालों में होने वाला	सार्वकालिक
सब देशों से सम्बद्ध	सार्वदेशिक
समस्त पृथ्वी से सम्बन्ध रखने वाला	सार्वभौमिक
साहित्य से सम्बन्धित	साहित्यिक
जो अक्षर पढ़ना–लिखना जानता है	साक्षर
सिंह का बच्चा	सिंहशावक
जो आसानी से लब्ध (प्राप्त) हो सके	सुलभ
सुन्दर हृदय वाला	सुहृदय
जिनकी ग्रीवा (गर्दन) सुन्दर हो	सुग्रीव
स्वेद (पसीने) से उत्पन्न होने वाला	स्वेदज
जो स्मरण करने योग्य है	स्मरणीय/स्मर्तव्य
किसी काम में दूसरों से बढ़ने की इच्छा	स्पर्द्धा
जो स्त्री के वशीभूत या उसके स्वभाव का हो	स्त्रैण
जो स्वयं उत्पन्न हुआ हो	स्वयंभू
अपना हित चाहने वाला	स्वार्थी
अपनी इच्छा से दूसरों की सेवा करने वाला	स्वयंसेवक
जो स्वयं ही सिद्ध (ठीक) हो	स्वयंसिद्ध
दूसरो के स्थान पर काम करने वाला	स्थानापन
एक स्थान से दूसरे स्थान को जाना	स्थानान्तरण
अपने ही बल पर निर्भर रहने वाला	स्वावलम्बी
स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद का	स्वातन्त्र्योत्तर
कुछ खास शर्तो द्वारा कोई कार्य कराने का समझौता	संविदा

समय से संबंधित	सामयिक
जिसके लोचन (आँखें) सुंदर हों	सुलोचन
जिसे सरलता से पढ़ा जा सके	सुपाठ्य
शयन करने की इच्छा	सुषुप्सा

(ह)

हाथ का लिखा हुआ	हस्तलिखित
दूसरे के हाथ में गया हुआ	हस्तान्तरित
हृदय को विदीर्ण करने वाला	हृदयविदारक
मिठाई बनाने और बेचने वाला	हलवाई
हंस के समान सुंदर मंद गति से चलने वाली स्त्री	हंसगामिनी
हिन्द की भाषा	हिन्दी

अभ्यास हेतु प्रश्न

1. सौ वर्ष का समय .....
2. सदैव रहने वाला .....
3. जो तेज चलता हो .....
4. मनन करने योग्य .....
5. भेड़ का बच्चा .....
6. जल में लगने वाली आग .....
7. जो देखने में प्रिय हो .....
8. लौट कर आया हुआ .....
9. जो प्रिय बोलता हो .....
10. पिता की हत्या करने वाला .....
11. पंडितों में पंडित .....
12. जो तेजहीन हो .....
13. जिसका कोई आकार न हो .....

14. जो जन्म से अन्धा हो .....
15. चार राहों वाला .....
16. जो कानून के विरुद्ध है .....
17. जो बीत चुका हो .....
18. जो कटु बोलता है .....
19. जिसका चित एक जगह स्थिर हो .....
20. इस लोक से सम्बन्धित .....
21. जो बीत गया है .....
22. आवश्यकता से अधिक वर्षा .....
23. जो देखा न जा सके .....
24. जो बूढ़ा न हो .....
25. समाचार पत्र का मुख्य लेख .....

संदर्भ

1. डॉ. वासुदेवनन्दन प्रसाद, आधुनिक हिन्दी व्याकरण
2. श्याम चन्द्रा, व्याकरण प्रवेश
3. लूसेन्ट सामान्य हिन्दी
4. इन्टरनेट

COMMUNICATION HINDI

सम्प्रेषण कौशल (हिन्दी)

For B.A. Semester I

Prof. Ashwani Kumar
Govt. Degree College
Doda

विषय सूचि

1. प्रतिवेदन लेखन

- अर्थ
- परिभाषा
- प्रकार
- उद्देश्य और महत्त्व
- गुण
- विधि
- उद्हारण
- निष्कर्श

2. संवाद लेखन

2. अर्थ
3. परिभाषा
4. ध्यान रखने योग्य बातें
5. उद्हारण
6. महत्त्व
7. प्रकार
8. निष्कर्श

सम्प्रेषण कौशल (हिन्दी) B.A. Semester I

UHITS - 101

UNIT - I

1. प्रतिवेदन लेखन

प्रतिवेदन का अर्थ है, किसी संदर्भ में संपन्न हुई कारवाई का विवरण लिखित रूप में प्रस्तुत करना। किसी भी सभा, संस्था या विभाग में जो बैठक आयोजित की जाती है और उसकी जो कारवाई होती है उसे लिखित रूप में प्रस्तुत किया जाता है। यही प्रतिवेदन होता है।

"प्रतिवेदन" को अंग्रेजी में Report or Reporting कहते हैं। "प्रतिवेदन" भी सूचना की एक विधा है। हिन्दी में Report के लिए रपट शब्द प्रचलित है।

प्रतिवेदन की परिभाषा

"जब कोई घटना या दुर्घटना घट जाती है, कोई कार्य पूरा हो जाता है, जब कोई कारवाई या जांच पूरी हो जाती है उसका लिखित रूप में जो विवरण दिया जाता है उसे प्रतिवेदन कहते हैं।"

प्रतिवेदन (Report) एक ऐसा विवरण होता है जो किसी प्रश्न या जांच के फलस्वरूप में भी प्रस्तुत किया जाता है। प्रतिवेदन (Report) का उद्देश्य आवश्यक सूचनाओं, आंकड़ों, तथ्यों आदि का विश्लेषण करके निष्कर्ष एवं सुझाव को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत करना है।

प्रतिवेदन के प्रकार

1. **घटना संबंधी जांच प्रतिवेदन** – गत दिनों में घटित हुई किसी घटना से संबंधित विवरण तैयार किया जाता है। इसमें पहले घटना की जांच की जाती है उसके बाद लिखित रूप में एक प्रतिवेदन (Report) तैयार किया जाता है।

2. **घटना अथवा आयोजन (पर्व और त्योहार) संबन्धी विवरणात्मक प्रतिवेदन** – इस में घटना या दुर्घटना संबन्धी विवरण प्रस्तुत करना होता है। जिस में घटना का स्थान, समय, विषय और उपस्थित लोगों का विवरण होता है। उदहारण – किसी मेले, यात्रा, सभा, किसी दुर्घटना जैसे गाड़ी का खाई में गिर जाना आदि का लिखित प्रतिवेदन तैयार किया जाता है।

प्रतिवेदन का उद्देश्य और महत्व

रिपोर्ट अथवा प्रतिवेदन समाचार के लिए कच्चा माल होती है। समाचार लेखक रिपोर्टर की रिपोर्ट के आधार पर समाचार तैयार करते हैं। वास्तव में रिपोर्ट अथवा प्रतिवेदन और समाचार में कच्चे और तैयार माल का अंतर है। लिखित प्रतिवेदन (Report) वह दस्तावेज है जो विशिष्ट दर्शकों के लिए केंद्रीकृत और सामग्री प्रस्तुत करता है।

प्रतिवेदन (Report) का इस्तेमाल प्रायः एक प्रयोग, जांच या पूछताछ के परिणाम को प्रदर्शित करने के लिए किया जाता है। यह रिपोर्ट (प्रतिवेदन) सर्वजनिक या निजी, एक व्यक्ति विशेष या आम जनता के लिए हो सकती है। प्रतिवेदन का प्रयोग सरकारी, व्यावसायिक, शिक्षा, विज्ञान और अन्य क्षेत्रों में होता है। प्रतिवेदन के कुछ उदहारण : वैज्ञानिक प्रतिवेदन, वार्षिक प्रतिवेदन, कार्यस्थल प्रतिवेदन, जनगणना प्रतिवेदन, यात्रा प्रतिवेदन, जांच, बजट, नियम संबन्धी प्रतिवेदन (Report)। समीक्षा प्रतिवेदन निरीक्षण, आयोजन और समारोह संबन्धी प्रतिवेदन।

जब Schools और Colleges में 15 August, बाल दिवस अथवा किसी त्योहार और उत्सव का आयोजन किया जाता है तो उसके बाद उनका प्रतिवेदन तैयार किया जाता है। कब, क्यों, कहां, कैसे प्रतिवेदन के मुख्य आधार होते हैं।

जब कोई दुर्घटना हो जाती है जैसे गाड़ी का Accident होना, दंगे होना, आग लगना इनकी भी रिपोर्ट तैयार की जाती है उसके बाद इनको समाचार पत्रों पर दर्शाया जाता है। आप ने पूरे साल में क्या कार्य किया आप के वरिष्ट अधिकारी आप से रिपोर्ट मांग सकते हैं। सारे संस्थानों से सरकार पूरे साल का प्रतिवेदन मांग सकती है। हर officer अपने कर्मचारी से उनके निर्धारित कार्य की रिपोर्ट मांग सकता है।

अंत में हम कह सकते हैं कि प्रतिवेदन हमेशा आप के किये हुए कार्य, घटित हुई घटना या दुर्घटना के ऊपर ही तैयार किए जाते हैं। जब कोई आयोजन त्यौहार या समारोह समाप्त हो जाता है तो उसका लिखित प्रतिवेदन (Report) तैयार किया जाता है।

प्रतिवेदन के गुण

1. प्रतिवेदन पूरी तरह से स्पष्ट और पूर्ण होना चाहिए।
2. उसकी भाषा ना तो आलंकारिक हो, न मुहावरेदार हो।
3. सभी तथ्य सत्य, प्रमाणिक एवं विश्वसनीय होने चाहिए।
4. संक्षिप्तता का पूरा ध्यान रखना चाहिए।
5. तथ्यों को तर्क और क्रम से ऐसे रखना चाहिए कि पूरी जानकारी स्पष्ट रूप में मिलती चली जाए।
6. प्रतिवेदन की भाषा स्पष्ट और सरल होनी चाहिए।
7. प्रतिवेदन लेखन में स्पष्ट सोच, तार्किक संगठन और ध्वनि व्याख्यान को जोड़ना चाहिए।
8. प्रतिवेदन लेखन में शीर्षक होना चाहिए।
9. प्रतिवेदन के अंत में प्रतिवेदक को या सभा/दल/संस्था के अध्यक्ष को हस्ताक्षर करने चाहिए।

10. कोई भी तथ्य अस्पष्ट नहीं होना चाहिए, अन्यथा विवाद उत्पन्न होता है।

प्रतिवेदन लिखने की विधि

प्रतिवेदन लिखने से पहले सारे तथ्यों को एकत्र कर लेना जरूरी होता है। निम्नलिखित तथ्य अवश्य देने चाहिए :–

1. संस्था का नाम।
2. बैठक/सम्मेलन/सभा का नाम और उद्देश्य।
3. आयोजन स्थल का नाम।
4. आयोजन के दिनांक और समय की सूचना।
5. उपस्थित लोगों की जानकारी – अध्यक्षता, मंच–संचालन, वक्ता, सुझाव देने वाले, आमंत्रित अतिथि तथा प्रतिभागी सदस्य।
6. विषय की जानकारी।
7. निर्णयों की जानकारी।
8. कोई प्रतियोगिता या कलात्मक प्रस्तुति हुई हो, तो उसका उल्लेख।
9. प्रतियोगिता का परिणाम आया हो तो उसकी जानकारी।
10. कौन सी घटना घटी अर्थात क्या हुआ? घटना कहां घटी?
11. घटना कब घटी?
12. घटना घटने का कारण क्या था?

प्रतिवेदन के उदहारण

1. विद्यालय में 'हिन्दी–दिवस' मनाया गया। इस संदर्भ में सभा के अयोजन का संक्षिप्त प्रतिवेदन लिखिए।

आज सोमवार, 14 सितम्बर, 2016 को ... विद्यालय के सभागार में प्रातः 11 बजे प्राचार्य महोदय की अध्यक्षता में एक सभा आयोजित की गई। हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ कमल ने "राश्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी" पर अपने विचार प्रकट किए। कुछ छात्रों ने भी अपनी भावनाएं व्यक्त कीं। प्राचार्य महोदय ने घोषणा की कि इस वर्ष हिंदी में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्र को 1000/– रुपए का नकद पुरस्कार दिया जाएगा। सभी उपस्थित लोगों का अध्यक्ष महोदय ने धन्यवाद किया और सभा समाप्त की गई।

–0–

2. विद्यालय में आयोजित "बाल–दिवस" समारोह का प्रतिवेदन तैयार कीजिए।

हमारे विद्यालय में 14 नवम्बर को बाल–दिवस समारोह सम्पन्न हुआ। इस सुअवसर पर नेहरु जी के विचारों को भी व्यक्त किया गया। हमारे प्रधानाचार्य सहित अध्यापकों ने क्रमशः अपने विचार प्रकट किए, इस प्रकार यह बाल–दिवस समारोह सम्पन्न हुआ।

3. जम्मू के व्यापारियों की एक बैठक हुई उसका प्रतिवेदन लिखो।

01–02–2017 को जम्मू के सभी व्यापारियों की एक बैठक रात 7:00 बजे हुई इस हंगामेदार बैठक में सभी व्यापारी उपस्थित थे। कमेटी के निम्नलिखित पदाधिकारी मंच पर विराजमान थे :–

श्री प्रमोद गुप्ता	अध्यक्ष
श्री विजय गुप्ता	उपाध्यक्ष
श्री राम प्रसाद	सचिव

श्री विजय कुमार कोशाध्यक्ष

बैठक में निम्नलिखित निर्णय लिए गए :–

- सभी व्यापारी मिलकर जुलूस निकालें।
- कोई भी व्यापारी दुकान ना खोले।
- सिलिंग के विरोध में 20, 21, 22 मार्च को पूरा बाज़ार बंद रखा जाए।

4. जी.टी. रोड पर बस और ट्रक के बीच टक्कर होती देखी इस पर प्रतिवदेन लिखिए।

जनवरी 16, 2020 को सुबह 6:00 बजे कोहरे के कारण एक बस और ट्रक की जबरदस्त टक्कर हो गई। धनबाद के पास एक ओर किसी कारण ट्रैफिक बंद था। इस कारण वाहन एक ओर आ जा रहे थे। इसी बीच एक ट्रक वाले ने जोर से बस को टक्कर मार दी।

दुर्घटना होते ही जोर का धमाका हुआ। ड्राईवर और आगे की सवारियों को गहरी चोटें आईं। ट्रक का ड्राईवर भाग गया। 15 मिनट बाद ट्रैफिक पुलिस की गाड़ी पहुँची। घायलों को पास के अस्पताल में ले जाया गया। शेष सवारियों को अन्य बसों द्वारा उनके स्थान पर पहुँचाया गया।

–0–

निष्कर्ष

अंत में हम कह सकते हैं कि प्रतिवेदन भी सूचना का एक माध्यम है। प्रतिवेदन के आधार पर ही विशेष निर्णय लिए जाते हैं। प्रतिवेदन लिखते समय मनुष्य को हमेशा सत्य लिखना चाहिए क्योंकि इसी पर भविष्य टिका होता है। किसी भी जांच और कारवाई को प्रतिवेदन के आधार पर ही पूरा किया जाता है।

प्रश्न–अभ्यास

1. प्रतिवेदन लेखन क्या होता है? इसका प्रयोग कहां किया जाता है?
2. प्रतिवेदन लेखन के माध्यम से किस प्रकार की सूचना दी जाती है?
3. प्रतिवेदक (Reporter) में कौन–कौन से गुण होने चाहिए?
4. 'प्रतिवेदन लेखन' पर अपने शब्दों में एक लेख लिखिए।
5. विद्यालय में 'गणतंत्र दिवस' मनाया गया इस पर प्रतिवेदन लिखिए।
6. आपके घर के सामने दो परिवारों में झगड़ा हो गया है। इस पर प्रतिवेदन तैयार कीजिए।
7. जम्मू क्षेत्र अध्यापक–संघ की बैठक का प्रतिवेदन लिखो।
8. आप के गाँव का छात्र परीक्षा में प्रथम आया है, उसके स्वागत–समारोह का प्रतिवेदन तैयार कीजिए।

नोट – अध्यापकों को पूछ कर रोज एक नये विषय पर प्रतिवेदन लिखने का अभ्यास करो।

2. संवाद लेखन

दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच हुए वार्तालाप या सम्भाषण को संवाद कहते हैं। दूसरे शब्दों में – दो व्यक्तियों की बातचीत को 'वार्तालाप' अथवा संभाषण अथवा संवाद कहते हैं।

जीवन में हम अनेक लोगों के साथ बातचीत करते हैं। किन्तु प्रत्येक के साथ बातचीत एक समान नहीं होती। जैसे अध्यापक–शिष्य, माँ–बेटे, मित्रों और सहपाठियों के बीच संवाद अलग होते हैं।

परिभाषा

"लोगों की आपसी बातचीत को संवाद अथवा संवाद लेखन कहते हैं।" "जब किसी की बातचीत को लिखकर प्रस्तुत किया जाता है उसे संवाद लेखन कहते हैं।"

संवाद का सामान्य अर्थ बातचीत है। इसमें दो या दो से अधिक व्यक्ति भाग लेते हैं। अपने विचारों और भावों को व्यक्त करने के लिए संवाद की सहायता ली जाती है। जो संवाद जितना सजीव, समाजिक और रोचक होगा, वह उतना ही अधिक आकर्षक होगा। उसके प्रति लोगों का खिंचाव होगा।

संवाद के अनेक नाम हैं – वार्तालाप, कथोपकथन, गुफ्तगु, सम्भाषण इत्यादि। यह कहानी, नाटक, उपन्यास आदि की जान हैं। इसके माध्यम से पात्रों की सोच, उसके चरित्र का पता चलता है। हमारा अपना जीवन भी एक रंगमंच है, हम जो प्रतिदिन एक–दूसरे से बातचीत करते हैं वे संवाद हैं। लेकिन फिर भी जब इन्ही संवादों को लिखने की बात आती है तो उसके लिए विशेष सावधानी रखने की अवश्यकता होती है। साधारण जीवन में आप अपनी इच्छा से कुछ भी बोल देते हो किन्तु किसी खास समय, विशेष व्यक्ति के साथ किसी संस्था में आप को सोच कर बोलना (लिखना) होता है।

संवाद लिखते समय इन बातों का ध्यान रखना चाहिए :–

1. संवाद छोटे, सहज तथा स्वभाविक हों।
2. संवादों में रोचकता एवं सरसता हो।
3. संवादों की भाषा सरल, स्वाभाविक और बोल–चाल के निकट हो। उसमें अश्लीलता तथा अप्रचलित शब्दों का प्रयोग ना हो।
4. संवाद विषय और पात्रों के अनुकूल हों।
5. संवाद पात्रों की सामाजिक स्थिति के अनुकूल हों।
6. प्रसंग के अनुरूप संवादों में व्यंग्य–विनोद होना चाहिए।
7. यथास्थान मुहावरों तथा लोकोक्तियों का प्रयोग भी होना चाहिए।
8. संवाद में प्रवाह क्रम और तर्क सम्मत विचार होना चाहिए।

कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं –

1. हामिद और दुकानदार का संवाद

हामिद – यह चिमटा कितने का है?

दुकानदार – यह तुम्हारे काम का नहीं है जी।

हामिद – बिकाऊ है की नहीं?

दुकानदार – बिकाऊ नहीं है और यहां क्यों लाद लाये?

हामिद – तो बताते क्यों नहीं के पैसे का है।

दुकानदार – छे पैसे लगेंगे।

हामिद – ठीक बताओ।

दुकानदार – ठीक–ठीक पाँच पैसे लगेंगे, लेना हो तो लो नहीं तो चलते बनो।

हामिद – तीन पैसे लोगे?

2. माँ–बेटे के बीच संवाद

बेटा – माँ, ओ माँ!

माँ – अरे बेटा आ गए!

बेटा – हाँ माँ ...।

माँ – आज स्कूल से आने में काफी देर लगा दी ...।

बेटा – हाँ माँ, आज विश्व पर्यावरण–दिवस जो था।

माँ – तो क्या कोई विशेष कार्यक्रम था तेरे स्कूल में?

बेटा – हाँ माँ।

3. अध्यापक और छात्र के बीच संवाद

अध्यापक – परीक्षा की तैयारी हो गई अमन।

अमन – हाँ सर, लगभग हो ही गई है।

अध्यापक – क्या मतलब?

अमन – सर, कुछ प्रश्न अभी रहते हैं।

अध्यापक – परीक्षा सिर पर है, उनको भी तैयार करो।

अमन – जी सर।

अध्यापक – दिल लगा कर मेहनत करो।

अमन – जी सर करूंगा।

4. दो पड़ोसियों के बीच संवाद

गुप्ता जी : राम राम भाई।

खन्ना जी : राम राम।

गुप्ता जी : आज का समाचार पत्र पढ़ा आप ने?

खन्ना जी : क्या आज कुछ खास समाचार है?

गुप्ता जी : लिखा है दिल्ली में बस लूट ली गई।

खन्ना जी : किस ने लूटी है?

गुप्ता जी : पुलिस अभी आरोपी की तलाश कर रही है।

खन्ना जी : आजकल लूट की बड़ी खबरें आ रही हैं।

गुप्ता जी : आप सच्च बोल रहे हो खन्ना जी।

5. पिता पुत्र के बीच संवाद

पिता जी : आज कल स्कूल कैसा चल रहा है?

पुत्र : ठीक चल रहा है पिता जी।

पिता जी : सुना है स्कूल से आज कल जल्दी आ जाते हो।

पुत्र : जी पिता जी।

पिता जी : क्यों?

पुत्र : पिता जी स्कूल में बाल–दिवस के अयोजन की तैयारी हो रही है।

पिता जी : तुम भी भाग ले रहो हो?

पुत्र : जी पिता जी।

पिता जी : अच्छी बात है।

संवाद लेखन का महत्व

साधारण जीवन में संवादों से ही मनुष्य की पहचान होती है। जो व्यक्ति संवाद बोलने में कुश्ल है उसकी समाज में बहुत पहचान और इज्ज़त होती है। संवाद के लिए आप को भाषा का पूरा ज्ञान होना अनिवार्य है। समाज में भाषा का एक महत्वपूर्ण स्थान है। भाषा से ही लोगों के चरित्र की पहचान की जाती है। संवाद के माध्यम से आप किसी का भी मन जीत सकते हो, उसे अपना मित्र बना सकते हो। जो कार्य

विश्व की कोई भी शक्ति नहीं कर सकती वह कार्य मीठे संवादों से हो सकता है। आप जितने भी ज्ञानी हों, जितने भी अधिक पढ़े–लिखे हों अगर आप को संवाद करना नहीं आता, भाषा का प्रयोग करना नहीं आता तब आप का समाज में कोई सम्मान नहीं होगा।

अगर कोई व्यक्ति अनपढ़ ही क्यों ना हो, किन्तु उसको बोलने का ढंग आता हो, दूसरों से बात करनी आती हो, बड़े–बड़े ज्ञानी भी उस से बातचीत करने में शर्म नहीं करते।

संवाद दो प्रकार के होते हैं :–

(1) **बोल कर (मौखिक संवाद)** – लोगों की बातचीत को मौखिक संवाद कहते हैं।

(2) **लिखित संवाद** – बातचीत को लिखित रूप में प्रस्तुत करने को लिखित संवाद कहते हैं।

दोनों संवादों का समाज में अपना अलग–अलग महत्व है। साधारण जीवन में आप को बोल कर ही अपनी भावनाओं को व्यक्त करना होता है।

लिखित संवादों को किसी खास समय पर ही इस्तेमाल किया जाता है और इसमें खास सावधानी रखनी होती है। कहानी, नाटक, उपन्यास, एकांकी इत्यादि में लिखित संवादों का ही प्रयोग होता है।

Interview में जब आप जाते हैं वहां **मौखिक** संवाद ही काम आते हैं। किसी **खास व्यक्ति** से किसी **संस्था** में जा कर अगर बात करनी हो वहां भी **मौखिक** संवाद काम आते हैं।

निष्कर्ष

अंत में हम कह सकते हैं कि संवाद मनुश्य के चरित्र के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हम जिस समाज में रहते हैं वहां हमें रोज लोगों के साथ बातचीत करनी होती है। हमारे समाज में हर प्रकार के लोग रहते हैं। हमें इन लोगों से संवाद करना आना चाहिए। समाज में हमारी भाषा, हमारे संवादों के आधार पर ही हमें पहचाना जाता है। संवाद से ही समाज के हर मसले का हल हो सकता है। आज के

इस जीवन में मनुष्य ने एक दूसरे से संवाद करना छोड़ दिया है। वह अपने काम में इतना व्यस्त हो गया है कि उसके पास अपने परिवार के लिए भी समय नहीं है। इसी कारण वह अकेला और चिंताग्रस्त होता जा रहा है।

प्रश्न–अभ्यास

1. संवाद लेखन पर अपने विचार प्रकट कीजिए।
2. मनुष्य के जीवन में संवाद का क्या महत्व है?
3. मौखिक संवाद और लिखित संवाद क्या होते हैं? दोनों में क्या अंतर है?
4. समाज में संवाद लेखन की क्या भूमिका होती है?
5. 'फल बेचने वाले' तथा 'खरीदने वाले' के बीच जो संवाद होते हैं, लिखो।
6. 'डॉक्टर' और 'रोगी' के बीच संवाद।
7. बस के ड्राइवर और सवारी के बीच संवाद।
8. भाई और बहन के बीच संवाद।

नोट – रोज किसी अलग विशय पर संवाद लिखने का अभ्यास करो।

संप्रेषण कौशल

इकाई – 1

मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ

बी.ए. सत्र – प्रथम

डा. विजय कुमार
राजकीय महाविद्यालय, पाडर
किश्तवाड़

इकाई – 1

मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ

1. मुहावरा : अर्थ और परिभाषा

मुहावरा शब्द मूलतः अरबी भाषा का शब्द है, जिसका शाब्दिक अर्थ होता है – अभ्यास करना। मुहावरा शब्द की व्युत्पति पर विचार करने से स्पष्ट होता है कि अरबी का 'मुहावरा' शब्द उर्दू में 'मुहाविरा' और हिन्दी में 'मुहावरा' बनकर प्रयुक्त होता है। हिन्दी के कुछ विद्वान मुहावरा को 'वाग्धारा' अथवा 'रोज़मर्रा' भी कहते हैं किन्तु प्रचलित भाषा में 'मुहावरा' ही है। **'मुहावरा'** का शब्दार्थ '**बोलचाल', 'बातचीत'** या अभ्यास है। हिन्दी में यह 'विलक्षण' अर्थ देने वाले वाक्यांश के रूप में ही लिया जाता है।[1]

1.1 परिभाषा :– जब कोई वाक्यांश अपने सामान्य अर्थ को छोड़ कर विशेष अर्थ में रूढ़ हो जाता है, तो **मुहावरा** कहलाता है।[2]

उदाहरण :– **'लाठी खाना'** शब्द मुहावरा है क्योंकि खाना शब्द अपने वास्तविक अर्थ में नहीं, लाक्षणिक अर्थ में आया है।

- 'श्री गणेश करना' का अर्थ है – शुरू करना।
- 'चार चाँद लगाना' का अर्थ है – प्रतिष्ठा बढ़ना।

1.1.1 उद्देश्य

मानव के बौद्धिक विकास के साथ–साथ भाषा की अभिव्यंजना शक्ति में वृद्धि होती जा रही है। आज लोगों की दृष्टि अभिधेयार्थ तक सीमित नहीं है, लक्ष्यार्थ और व्यंग्यार्थ प्रधान होते जा रहे हैं।

---

1. पृथ्वीनाथ पाण्डेय, आधुनिक हिन्दी व्याकरण, भारतीय पुस्तक परिशद्, नई दिल्ली, संस्करण–2,013, पृ. – 148
2. संजीव कुमार, सामान्य हिन्दी, लूसेंट पब्लिकेशन पटना, 2015, पृ. – 129

लाक्षणिक प्रयोग रूढ़ और लोकप्रिय होकर मुहावरों का रूप लेते जा रहे हैं। मुहावरे जनसाधारण की भाषा, संस्कृति के प्रभाव और विदेशी मुहावरों के प्रभाव से स्वयं विकसित होते हैं। मुहावरों के अर्थ द्योतन की क्षमता पीढ़ियों के निरन्तर प्रयोग से आती है।

1.1.2 'मुहावरा' और 'कहावत' में अन्तर

मुहावरा / (मुहावरा की विशेषताएं)

- मुहावरा वाक्यांश है।
- मुहावरे का स्वतन्त्र प्रयोग नहीं होता।
- मुहावरे में उद्देश्य, विधेय का पूर्ण विधान नहीं होता, अतः अर्थ की स्पष्टता के लिए वाक्य प्रयोग किया जाता है।
- मुहावरा फल से सम्बन्धित नहीं होता।
- मुहावरे का कार्य चमत्कार उत्पन्न कर, भाषा–सौन्दर्य को स्थापित करना है।
- मुहावरा बात को कहने की एक रीति है।
- मुहावरे में काल, वचन और पुरुष के अनुरूप परिवर्तन हो जाता है।
- मुहावरे लाक्षणिक अर्थ देने के लिए प्रयुक्त होते हैं।
- मुहावरों के अन्त में बहुधा 'ना' आता है; जैसे – खाक छानना, गाल बजना, खिचड़ी पकाना, साँप लोटना आदि।

कहावत / (कहावत की विशेषताएँ)

- कहावत वाक्य है।
- कहावत का स्वतन्त्र प्रयोग होता है।

- कहावत में उद्देश्य और विधेय का पूर्ण विधान होता है।
- कहावत फल से सम्बन्धित होती है।
- कहावत का कार्य कथन के खण्डन–मण्डन/विरोध को रेखांकित करने का होता है।
- कहावत, कथन में व्यक्त अनुभव अथवा विचार का सारगर्भित और स्थायी निचोड़ है।
- कहावत का स्वरूप पूर्णतः अपरिवर्तित रहता है।
- कहावत का प्रयोग प्रायः अन्योक्ति के लिए होता है।[1]

1.1.3 दोनों के प्रयोग के नियम

- मुहावरों और कहावतों का प्रयोग प्रसंग को समझकर करना चाहिए।
- मुहावरों और कहावतों का शब्दार्थ ग्रहण करने के स्थान पर, उनका अर्थ ग्रहण करना चाहिए।
- प्रत्येक मुहावरे अथवा कहावत का प्रयोग उसकी भाषा की प्रकृति से सम्बद्ध रहता है अतः उसका प्रयोग उस भाषा के अन्तर्गत ही उपयुक्त रहता है। दूसरी भाषा में उसका अविकल अनुवाद अर्थ का अनर्थ कर सकता है।
- मुहावरों और कहावतों का रूप के अनुसार ही प्रयोग किया जाना चाहिए।

परीक्षोपयोगी महत्वपूर्ण मुहावरे : अर्थ और उनके प्रयोग

1. अँगूठे पर मारना

अर्थ : परवाह न करना

प्रयोग : शेखी बघारने वाले को मैं अँगूठे पर मारता हूँ।

---

1. पृथ्वीनाथ पाण्डेय, आधुनिक हिन्दी व्याकरण, भारतीय पुस्तक परिशद्, नई दिल्ली, संस्करण–2,013, पृ. – 149

2. **अन्त बिगाड़ना**

अर्थ : परिणाम खराब करना

प्रयोग : आतंकवादियों का साथ देकर सीधे–सीधे श्याम ने अपना अन्त बिगाड़ लिया।

3. **अन्धों में काना राजा**

अर्थ :– अयोग्य व्यक्तियों के मध्य कम योग्य भी ज़्यादा योग्य बनता है।

प्रयोग :– इन भोले–भाले अनपढ़ों के बीच विद्वता प्रदर्शित कर अन्धों में काना राजा बन रहे हो, विद्वानों के बीच तो ज़रा आकर देखो।

4. **आँख की किरकिरी होना**

अर्थ : अच्छा न लगना

प्रयोग : अंग्रेज शासकों के लिए वीर क्रान्तिकारी चन्द्रशेखर आज़ाद आँख की किरकिरी बन गये थे।

5. **आँख खुलना**

अर्थ : सावधान हो जाना

प्रयोग : इतनी ठोकरें खाने के बाद तो तुम्हारी आँखे खुल जानी चाहिए।

6. **इधर का न उधर का**

अर्थ : बे–आबरु होना

प्रयोग : राजेश परिवार से अलग होकर न इधर का रहा न उधर का।

7. **ऊँची दुकान फीके पकवान**

अर्थ :– आडम्बर ही आडम्बर

प्रयोग :– वर्तमान समय में साधुओं के क्रिया–कलाप 'ऊंची दुकान फीके पकवान' ही सिद्ध हो रहे हैं।

8. एक ही थैले के चट्टे–बट्टे होना

अर्थ : सबका एक समान होना।

प्रयोग : तुम्हें अपने अच्छे होने की सफाई देने की कोई जरूरत नहीं है, मैं जानता हूँ, तुम सब एक ही थैली के चट्टे–बट्टे हो।

9. एक अनार सौ बीमार

अर्थ : आवश्यकता से अधिक माँग

प्रयोग : क्षेत्र में अधिक इमारतों का निर्माण होने के कारण राजगीरों की स्थिति'एक अनार सौ बीमार' जैसी हो गयी है।

10. ऐंठ निकालना

अर्थ : घमण्ड चूर होना

प्रयोग : करगिल युद्ध में परास्त होने के बाद पाकिस्तान की ऐंठ निकल गयी है।

11. ओखली में सिर देना

अर्थ :– जानबूझ कर संकट मोल लेना।

प्रयोग :– पाकिस्तान ने भारत में अपरोक्ष में आतंकवाद को बढ़ावा देकर ओखली में सिर दे दिया है।

12. औंधी खोपड़ी होना

अर्थ : निरा मूर्ख

प्रयोग : उसी औंधी खोपड़ी में तुम्हारी तर्कपूर्ण बात नहीं समायेगी।

13. कलेजे पर साँप लोटना

अर्थ : ईर्ष्या से हृदय जलना

प्रयोग : भारत की सद्भावना और शान्ति को देखकर पाकिस्तान के कलेजे पर साँप लोट जाता है।

14. कमर सीधी करना

अर्थ : थकाना मिटाना

प्रयोग : 20 कि.मी. पैदल चलकर आया हूँ, ज़रा कमर तो सीधी करने दो।

15. काम तमाम करना

अर्थ :– किसी को मार डालना

प्रयोग :– लुटेरों ने कल कालू का काम तमाम कर दिया।

16. कालिख पोतना

अर्थ : कलंकित करना

प्रयोग : रामू ने चोरी करके अपने परिवार पर कालिख पोती है।

17. किसी के कंधे से बंदूक चलाना

अर्थ : किसी पर निर्भर होकर कार्य करना

प्रयोग : अरे मित्र, किसी के कंधे से बंदूक क्यों चलाते हो, आत्मनिर्भर बनो।

18. कीचड़ उछालना

अर्थ : किसी को बदनाम करना

प्रयोग : बेवजह किसी पर कीचड़ उछालना ठीक नहीं होता।

19. खून–पसीना एक करना

अर्थ :– अधिक परिश्रम करना

प्रयोग :– खून पसीना एक करके विद्यार्थी अपने जीवन में सफल होते हैं।

20. गले का हार होना

अर्थ : बहुत प्यारा

प्रयोग : लक्ष्मण राम के गले का हार थे।

21. गड़े मुर्दे उखाड़ना

अर्थ : दबी हुई बात फिर से उभारना

प्रयोग : जो हुआ सो हुआ, अब गड़े मुर्दे उखाड़ने से क्या लाभ।

22. गुदड़ी में लाल

अर्थ : गरीब के घर में गुणवान का उत्पन्न होना

प्रयोग :

23. घड़ो पानी पड़ना

अर्थ :– अत्यन्त लज्जित होना

प्रयोग :– बदमाशी करते रँगे हाथ पकड़े जाने पर उस पर घड़ों पानी पड़ गया।

24. घाट–घाट का पानी–पीना

अर्थ : संसार का अनुभव प्राप्त करना

प्रयोग : मुझे किसी मामले में कम मत आँको, मैंने भी घाट–घाट का पानी पिया है।

25. चाँद पर थूकना

अर्थ : सम्माननीय का अनादर करना

प्रयोग : जिस भलेमानस ने कभी किसी का कुछ नहीं बिगाड़ा, उसे ही तुम बुरा–भला कह रहे हो? भला, चाँद पर भी थूका जाता है।

26. चादर देखकर पाँव पसारना

अर्थ : आमदनी के अनुसार खर्च करना

प्रयोग : जो लोग चादर के बाहर पैर पसारते हैं हमेशा तंगी का ही अनुभव करते रहते हैं।

27. छक्के छुड़ाना

अर्थ :– हरा देना

प्रयोग :– 'ऑपरेशन विजय' के दौरान करगिल मे भारतीय सेना ने पाकिस्तानी सेना के छक्के छुड़ा दिये।

28. छतीस का आँकड़ा

अर्थ : घोर विरोध

प्रयोग : मुझ में और मेरे मित्र में आजकल छतीस का आँकड़ा है।

29. जल में रहकर मगर से बैर करना

अर्थ : अपने आश्रयदाता से शत्रुता करना

प्रयोग : मैंने विनोद से कहा कि जल में रहकर मगर से बैर मत करो, वरना नौकरी से हाथ धोना पड़ेगा।

30. झूठ का पुतला

अर्थ : बहुत झूठा व्यक्ति

प्रयोग : वीरू तो झूठ का पुतला है तभी कोई उसकी बात का विश्वास नहीं करता।

31. टाँग खींचना

अर्थ :– बनते काम में बाधा डालना

प्रयोग :– रमेंश ने मेरी टाँग खींच दी, वरना मैं मैनेजर बन जाता।

32. डूब मरना

अर्थ : बहुत लज्जित कोना

प्रयोग : इस तरह की बातें मेरे लिए डूब मरने के समान है।

33. ढोंग रचना

अर्थ : पाखंड करना

प्रयोग : ढोंग रचने वाले साधुओं से मुझे सख्त नफरत है।

34. त्रिशंकु होना

अर्थ : बीच में रहना/न इधर का होना, न उधर का)

प्रयोग :

35. दिन दूना रात चौगुना

अर्थ :– तेज़ी से तरक्की करना

प्रयोग :– राम जी अपने व्यापार में दिन दूना रात चौगुना बढ़ रहा है।

(विद्यार्थियों से अनुरोध है कि वे शेष मुहावरे अपने पाठ्यक्रम में लगे पाठ्य–पुस्तक से पढ़ लेना)।

प्रश्न–अभ्यास

1. मुहावरे की परिभाषा लिखिए।
2. मुहावरा कहावत से किन–किन अर्थों में भिन्न है?
3. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ बताते हुए, उनका वाक्य प्रयोग कीजिए :–
   - i. कीचड़ उछालना
   - ii. चाँदी का जूता मारना
   - iii. थूक कर चाटना
   - iv. पत्थर की लकीर
   - v. अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना

लोकोक्तियाँ / कहावतें (Sayings)

अर्थ और परिभाषा

'कहावत' उस बँधे पद–समूह को कहते हैं, जिसमें अनुभव की कोई बात संक्षेपतः सुन्दर, प्रभावशाली और चमत्कारिक ढंग से कही जाती है। संस्कृत और हिन्दी में कहावत को सूक्ति प्रवाद–वाक्य अथवा लोकोक्ति भी कहते हैं और अँगरेज़ी में इसे 'Proverb' तथा उर्दू में 'मसल' कहा जाता है। कहावतें मुहावरे से भिन्न है और उनका प्रयोग मुहावरों की भाँति एक वाक्य में हो पाना सम्भव नहीं। कहावतों के व्यवहार के लिए मान्य लेखकों के ग्रन्थों का अनुशीलन करना चाहिए।

परिभाषा :– किसी घटना या कहानी से सम्बन्धित अनुभव के सार को व्यक्त करने वाली लोकप्रसिद्ध उक्ति या कथन को लोकोक्ति या कहावत कहते हैं।[1]

हिन्दी की प्रचलित कहावतें

1. **अन्धा क्या चाहे दो आँखें**

   अर्थ : इच्छित वस्तु का प्राप्त होना।

2. **अपनी गली में कुत्ता भी शेर होता है।**

   अर्थ : अपने घर में निर्बल भी सबल दिखाई पड़ता है।

3. **अपनी डफली : अपना राग**

   अर्थ :– सबका मत पृथ्क–पृथक होना।

4. **एक तो करेला, दूसरे नीम चढ़ा**

   अर्थ : दुर्गुणी–दुर्गुणी का संयोग।

---

1. पृथ्वीनाथ पाण्डेय, आधुनिक हिन्दी व्याकरण, भारतीय पुस्तक परिशद, दिल्ली

5. **कंगाली में आटा गीला**

अर्थ : विपत्ति पर विपति आना।

6. **काला अक्षर : भैस बराबर**

अर्थ : अनपढ़ मनुष्य।

7. **खूँट के बल बछड़ा कूदे**

अर्थ :– दूसरे के बल पर काम करना।

8. **खोदा पहाड़, निकली चुहिया**

अर्थ : अधिक परिश्रम के बाद साधारण लाभ।

9. **घर का जोगी जोगणा आन गाँव का सिद्ध**

अर्थ : घर का मनुष्य चाहे कितना ही योग्य क्यों न हो, सकी प्रतिष्ठा नहीं होती/अपने लोगों का आदर न करके, दूसरों को श्रद्धेय समझना।

10. **घर का भेदी लंका ढहावे**

अर्थ : आपसी फूट अत्यधिक हानिकारक होती हैं।

11. **चोर की दाढ़ी में तिनका**

अर्थ :– जो दोषी होता है, वह खुद डरता रहता है।

12. **थूक कर चाटना ठीक नहीं**

अर्थ : देकर लेना ठीक नहीं।

13. **नीम हकीम खतरे जान**

अर्थ : अयोग्य से हानि

14. **पंच परमेश्वर**

अर्थ : पाँच पंचों की राय।

बेकारी से बेगार भली

अर्थ :– चुपचाप बैठे रहने की अपेक्षा कुछ काम करना।

15. मन चंगा तो कठौती में गँगा

अर्थ : मन पवित्र तो सब कुछ ठीक।

16. मुँह में राम, बगल मं छुरी

अर्थ : कपटी

17. मेढक को भी जुकाम

अर्थ : ओछे का इतराना।

18. रस्सी जल गयी पर

अर्थ :– बूरे हालात में पड़कर भी अभिमान न त्यागना

19. लष्कर में ऊँट बदनाम

अर्थ : दोष किसी का, बदनामी किसी की।

(विद्यार्थियों से अनुरोध है कि वे शेष कहावतें पाठ्यक्रम में लगे पाठ्य–पुस्तक से पढ़ लेना)।

संप्रेषण कौशल

इकाई – एक

बी.ए. सत्र – प्रथम

सार लेखन

उपमा कुमारी
राजकीय महाविद्यालय डोडा

इकाई की रूपरेखा

सार लेखन का अर्थ व परिभाषा

सार लेखन की प्रक्रिया

सार लेखन की विशेषताएँ

सार लेखक के गुण

सार लेखन के उदाहरण

प्रश्न–अभ्यास

संदर्भ ग्रंथ

सार लेखन

सार लेखन का अर्थ व परिभाषा

अर्थ – सार का अर्थ है :– मूल तत्व अथवा निचोड़।सार लेखन से तात्पर्य है :– किसी अनुच्छेद, परिच्छेद, विस्तृत विषय को संक्षिप्त में लिखना। सार लेखन को अंग्रेजी में प्रैसी राइटिंग (precis writing) कहा जाता है। किसी गद्यांश के मुख्य भावों को समझकर उसे संक्षेप में लिखना ही सार लेखन कहलाता है। सार लेखन को संक्षेपण भी कहते हैं।

इसमें गद्यांश के मूल भावों को इस प्रकार संक्षिप्त किया जाता है कि मूल गद्यांश का एक तिहाई हो जाए और कोई भी मुख्य बात या भाव छूटने ना पाए। सार लेखन में अनावश्यक संदर्भ , तर्क –वितर्क आदि को छोड़ दिया जाता है और मूल भाव, विचार और तथ्य को ही रखा जाता है। सार लेखन में समास शैली का प्रयोग किया जाता है।

परिभाषा:– कैलाश चंद्र भाटिया के अनुसार,:– "किसी स्वतंत्र अथवा सम्बद्ध विषय की सविस्तार व्याख्या,लम्बे वक्तव्य अथवा पत्र व्यवहार के तथ्यों का ऐसा संयोजन संक्षेपण है, जिसमें से अनावश्यक बातों, अप्रासंगिक तथा असंबद्ध तथ्यों को छोड़ दिया जाए।"

सार लेखन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं–

सार लेखन अथवा संक्षेपण से विचारों की एकाग्रता एवं दृढ़ता का विकास होता है।

इससे मानसिक चिंतन ,मनन तथा विचारों में स्पष्टता आती है।

सार लेखन से विश्लेषण शक्ति का विकास होता है और अभिव्यक्ति प्रभावशाली बनती है।

सार लेखन से मानसिक श्रम की बचत होती है।

सार लेखन की प्रक्रिया

सार लेखन निश्चित प्रक्रिया एवं सतत अभ्यास के पश्चात अपने यथार्थ रूप को प्राप्त होता है। इसकी प्रक्रिया क्रमशः इस प्रकार है :–

1 वाचन

2 मुख्य विचारों का रेखांकन

3 प्रारूप की तैयारी

4 प्रारूप

5 लेखन

6 पुनर्परीक्षण

7 शीर्षक

1. **वाचन** :– मूल अनुछेद को कम से कम तीन बार पढ़ना चाहिए। 1 सामान्य वाचन ,2 विचार ग्रहण की दृष्टि से, 3 अर्थ ग्रहण की दृष्टि से ।

2. **मुख्य विचारों का रेखांकन** :– मूल का भावार्थ समझ लेने के पश्चात मुख्य विचारों, आवश्यक शब्दों, वाक्यों और वाक्य खंडों को रेखांकित करना चाहिए।रेखांकित अंश मुख्य विचारों से सम्बंधित और महत्त्वपूर्ण हो। रेखांकित करते समय कोई भी महत्त्वपूर्ण बात छूटनी नहीं चाहिए।

3. **प्रारूप की तैयारी** :– सार लेखन को अंतिम रूप देने से पहले उसका प्रारूप (कतंजि) तैयार करना पड़ता है। इसलिए अनुच्छेद के महत्त्वपूर्ण विचारों को क्रमवार कर लेना चाहिए।प्रारूप तैयार करते समय शुद्ध संक्षेपण करना चाहिए न कि खंडन मंडन आदि और न अपनी और से कुछ जोड़ना चाहिए और न ही कुछ आवश्यक छोड़ना चाहिए। अतः मूल में अभिव्यक्त विचार ही लिखने चाहिए।

4. **प्रारूप** :– मूल को अंतिम रूप देने से पहले रेखांकित वाक्यों के आधार पर उसकी एक कच्ची रूपरेखा तैयार करनी चाहिए, फिर सबको पढ़कर देखना चाहिए कि कुछ आवश्यक छूट तो नहीं गया है। आवश्यक संशोधन या जोड़ घटाव करना चाहिए।विचारों का क्रम मूल का हो ये आवश्यक नहीं है उसमें कुछ परिवर्तन किया जा सकता है परंतु विचारों का तारत्मय बना रहना चाहिए।वाक्य आपस में सम्बद्ध होने चाहिए।

5. **लेखन** :– प्रारूप के आधार पर सार लेख का अंतिम रूप तैयार करना चाहिए। अनेक शब्दों के लिए एक शब्दों का, समासिक शब्दों का, संधि का प्रयोग करना चाहिए।

6. **पुनर्परीक्षण** :– अंतिम रूप देने के उपरांत सार लेखन को ध्यान से पढ़ना चाहिए।अच्छी तरह से देखना चाहिए कि कोई महत्त्वपूर्ण अंश छूट तो नहीं गया है,शब्द संख्या का अनुपात मूल से एक तिहाई होना चाहिए परंतु आवश्यकतानुसार कम या अधिक हो सकता है ।

7. **शीर्षक** :– अंत में सार लेख के लिए एक उचित शीर्षक चुनना चाहिए। शीर्षक छोटा,सरल एवं मूल विचारों को स्पष्ट करने वाला होना चाहिए।

सार लेखन की विशेषताएँ

संक्षिप्तता :– सार लेखन की प्रथम विशेषता है कि सार मूल का संक्षिप्त रूप हो। सार मूल का एक तिहाई होना चाहिए।

क्रमबद्धता और प्रवाह :– भाव और विचार की प्रस्तुति क्रमबद्ध होनी चाहिए। विचार परस्पर सम्बद्ध हों,मूल विषय के अतिरिक्त कुछ भी नहीं होना चाहिए। संक्षेपण के साथ विचारों ओर भावों का संयोजन भी होना चाहिए। अच्छे संक्षेपण में भाव और भाषा में प्रवाह हमेशा बना रहता है ।

पूर्णता :– संक्षिप्तता के साथ साथ पूर्णता आवश्यक है सार लेख से मूल का सब कुछ ज्ञात हो जाना चाहिए।आवश्यक और अनावश्यक बातों को छाँटने में भी इसका ध्यान रखना चाहिए कि न कुछ आवश्यक छूटे और न कुछ अनावश्यक आए।

स्पष्टता :– संक्षेपण के भाव और भाषा में जटिलता न हो।भाव और विचार स्पष्ट हों, अभिव्यक्ति स्पष्ट हो।

शुद्धता :– संक्षेपण में भाव भाषा की दक्षता होनी चाहिए।अशुद्ध शब्द व वाक्य मूल आशय को स्पष्ट नहीं कर सकते । भिन्न या विकृत अर्थ वाले शब्दों और वाक्यों का प्रयोग न हो। भाषा व्याकरण सम्मत होनी चाहिए।

सार लेखक के गुण

सार लेखक में निम्नलिखित गुण होने चाहिएः–

1 **गम्भीर अध्ययन तथा शीर्षक चयन** :– सार लेखक में इतनी क्षमता होनी चाहिए कि वह समूची सामग्री में से महत्त्वपूर्ण बातों का चयन कर सके तथा इसका निर्णय कर सके कि सार लिखते समय उसको किस क्रम में रखा जाए। इसके साथ साथ उसे यह भी निर्णय करना होगा कि सार लेखन में कौन सी बात को महत्त्व देना है और किसको गौण समझना है। सार लेख तैयार करते समय सबसे पहले एक शीर्षक का निश्चय करना होता है और योग्य सार लेखक की सफलता इसी में है कि वह मूल सामग्री का गम्भीर अध्ययन करके उसके प्रत्येक शब्द, वाक्यांश से प्रकट होने वाले भावों को दृष्टिगत रखते हुए एक ऐसे उपयुक्त शीर्षक का चयन करे, जिसके उच्चारण मात्र से सार लेख में निहित आधारभूत विषयवस्तु का ज्ञान हो सके ।

2 **संक्षिप्त करने की क्षमता** :– संक्षिप्त रचना शक्ति का होना सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है और इसके लिए अभ्यास तथा प्रतिभा की आवश्यकता होती है। निरंतर अभ्यास से इस गुण का विकास होता है।

3 **भाषा का ज्ञान** :– सार लेखन के लिए मूल की भाषा का पूरा ज्ञान होना चाहिए। यदि भाषा का ज्ञान अपूर्ण या अल्प होगा तो मूल सामग्री को ही नहीं समझा जा सकता तथा उसमें प्रयुक्त मुहावरों आदि

को समझना नितांत असम्भव हैं। ऐसी स्थिति में आदर्श सार लेख का तैयार करना, उसके लिए उपयुक्त शीर्षक का चयन करना, संक्षिप्त रूप से तथा क्रमानुसार भावों को प्रकट करना किसी भी दशा में संभव नहीं हो सकता।अतः योग्य सार लेखक में गम्भीर अध्ययन करके उपयुक्त शीर्षक चयन करने तथा संक्षिप्त रूप से विचारों को प्रकट करने की क्षमता के अतिरिक्त भाषा पर पूरा अधिकार होना भी आवश्यक है।

उदाहरण

1 मानव को मानव के रूप में सम्मानित करके ही हम जातीयता, प्रान्तीयता और क्षुद्र राष्ट्रीयता के संकीर्ण भेदों को तोड़ सकते हैं।आज मानव मानव से दूर हटता जा रहा है ।यह भूल चुका है कि देश,धर्म और जाति के भिन्न भिन्न होते हुए भी हम सर्वप्रथम मानव हैं। हम सब समान हैं और सभी की भावनाएँ और लक्ष्य एक हैं। आज धर्म,सत्ता और धन आदि का भेद होने से एक मानव दूसरे मानव को मानव ही नहीं मानता। सत्ताधारी वर्ग दूसरों को कुचलकर सारी सुख सुविधाओं पर एकाधिकार कर लेना चाहता है ।एक आकाश के नीचे रहने वाले सारे मानव एक समान हैं दया मानवता का सार है ।दया छोड़कर सत्य भी सत्य नहीं है । दया प्रेरित असत्य भी व्यावहारिक सत्य है। दया धर्म मानव धर्म है ।

शीर्षक – मानव धर्म

सारे देश में व्याप्त जातीयता, प्रान्तीयता, क्षुद्र राष्ट्रीयता के भेदों को मिटाने के लिए मानव स्वरूप का सम्मान किया जाना चाहिए। आज मानव मानव के मध्य अनेक विशमताएँ हैं। हमें सभी मनुष्यों को एक समान मानकर दया भावना को अपनाना चाहिए। यही मानव धर्म है ।

2 सभ्यता और संस्कृति के विकास में धर्म और विज्ञान दोनो का ही हाथ रहता है। धर्म ने मनुष्य के मन का सुधार किया है और विज्ञान ने संस्कृति को जीता है।धर्म हमारे मन को बल देता है और जितने भी अच्छे गुण है वह सभी धर्म के कारण हैं।सत्य, अहिंसा,परोपकार आदि सभी अच्छे गुण धर्म के अंतर्गत आते हैं। धर्म ह्रदय में पैदा होता है। विज्ञान भी सत्य को जानने में लगा रहता है।विज्ञान प्रकृति को जीतता है

तथा धर्म सत्य, अहिंसा, परोपकार आदि से मन को जीतता है।अंतः यदि विज्ञान और धर्म मिल कर काम करें तो वह दिन दूर नहीं जब हम राज्यों और देशों के विचार को पीछे छोड़ देंगे और सारे संसार को अपना समझेंगे।संसार के सभी लोगों को अपना भाई समझेंगे। इस प्रकार सभ्यता और संस्कृति से मानव का विकास होता रहगा।

सार लेखन के उदाहरण

सार :

शीर्षक :– धर्म और विज्ञान

सभ्यता और संस्कृति के विकास में धर्म और विज्ञान का काफी योगदान रहता हैं। धर्म मनुष्य में सत्य, अहिंसा,परोपकार,संयम आदि गुण पैदा करता है तो विज्ञान सत्य की खोज करता रहता है। धर्म और विज्ञान से ही मानव जाति की उन्नति हो सकती है और समस्त संसार समृद्धि और सम्पन्नता की और अग्रसर हो सकता है।

3. कवि सहज रूप से शब्दों की आकर्षण शक्ति से पूर्णतया परिचित होता है। उसकी लोकोत्तर प्रतिभा की चुम्बक शक्ति शब्द रूपी लौह को अपनी और खींच लेती है और जो शब्द जितने भी अधिक अर्थों को अपने भीतर समा सकेंगे वे सब उसमें सहज ही लिपट जाएँगे। जिस प्रकार दर्पण के सामने आने पर मनुष्य की आकृति उसमें एकाएक दिखाई दे जाती है और उसका सम्पूर्ण रूप सामने आ जाता है,उसी प्रकार कवि का भाव काव्य में प्रयुक्त शब्दों से स्पष्ट हो जाता है और उसके शब्द इतनी कुशलता से ग्रंथित होते हीन की उसका गंभीर अनुभव चित्र रूप में चित्रित हो जाता है। प्रतिभाशाली कवि अपनी शक्ति के प्रकाश में प्रत्येक शब्द को जीवित रूप में देखता है इसलिए उसके प्रयुक्त शब्दों में सर्वत्र काव्य की कला निहित रहेगी। कलाकार और कवि शब्द के अंतःपटल में अपनी आत्मा के दर्शन करेगा। इस में किंचित मात्र भी संदेह नहीं की जिस प्रकार प्रेत्यक व्यक्ति की कुछ अपनी निजी विशेषता रहती है, निजी गुण रहते हैं

और निजी व्यक्तित्व रहता है उसी प्रकार प्रत्येक शब्द में उसका निजी व्यकित्व ,निजी गुण, निजी विशेषता रहती है। कवि इन गुणों को, व्यक्तित्व, को और विशेषताओं को पहचानेगा और उसकी लेखनी से निकला शब्द ऐसा होगा जिसे केवल वही लिख सकेगा जिसमें कवि की आत्मा निहित होगी।

सार

शीर्षक :– कवि की प्रतिभाशक्ति

प्रतिभाशाली कवि शब्दों की शक्ति को जानता है। वह अपनी लोकोत्तर प्रतिभा से प्रत्येक शब्द को नया अर्थ प्रदान करता है और उनका संयोजन इस प्रकार करता है कि उसके भाव बिम्ब सामने आकर प्रकट होते हैं। उसकी काव्य शक्ति से शब्द जीवित हो उठते हैं और वह कलात्मक गुण धारण कर लेते हैं। उसके हर शब्द में उसके व्यक्तित्व की झलक मिलती है और उसी से कवि को पहचाना जाता है।

4 जब समाचार–पत्रों में सर्वसाधारण के लिए कोई सूचना प्रकाशित की जाती है तो उसको विज्ञापन कहते हैं। यह सूचना नौकरियों से संबंधित हो सकती है, खाली मकान को किराये पर देने के संबंध में हो सकती है,किसी मकान को बेचने के संबंध में हो सकती है या किसी वस्तु के प्रचार से संबंधित हो सकती है। कुछ लोग विज्ञापन के आलोचक हैं। वे इसे निरर्थक मानते हैं। उनका मानना है कि यदि कोई वस्तु यथार्थ रूप में अच्छी है तो वह बिना किसी विज्ञापन के ही लोगों के बीच लोकप्रिय हो जाएगी जबकि खराब वस्तुएँ विज्ञापन की सहायता पाकर भी भंडाफोड़ होने पर बहुत दिनों तक टिक नहीं पाएँगी, परंतु लोगों कि यह सोच गलत है। आज के युग में मानव का प्रचार–प्रसार का दायरा व्यापक हो चुका है। अतः विज्ञापनों का होना अनिवार्य हो जाता है। किसी अच्छी वस्तु की वास्तविकता से परिचय पाना आज के विशाल संसार में विज्ञापन के बिना नितांत असंभव है। विज्ञापन ही वह शक्तिशाली माध्यम है जो हमारी जरूरत की वस्तुएँ प्रस्तुत करता है, उनकी माँग बढ़ाता है और अंततः हम उन्हें जुटाने चल पड़ते हैं। यदि कोई व्यक्ति या कंपनी किसी वस्तु का निर्माण करती है, उसे उत्पादक कहा जाता है। उन वस्तुओं और सेवाओं को खरीदने वाला उपभोक्ता कहलाता है। इन दोनों को जोड़ने का कार्य विज्ञापन करता है।वह

उत्पादक को उपभोक्ता के संपर्क में लाता है तथा माँग और पूर्ति में संतुलन स्थापित करने का प्रयत्न करता है। पुराने जमाने में किसी वस्तु की अच्छाई का विज्ञापन मौखिक तरीके से होता था। काबुल का मेवा, कश्मीर की जरी का काम, दक्षिण भारत के मसाले आदि वस्तुओं की प्रसिद्धि मौखिक रूप से होती थी । इसका एक कारण यह था कि उस समय आवश्यकता भी कम होती थी । आज समय तेजी का है। मनुष्य की आवश्यकताएँ भी बढ़ती जा रही हैं। इसलिए विज्ञापन मानव–जीवन की अनिवार्यता बन गया है।

सार :–

शीर्षक :– विज्ञापन

सर्वसाधारण के लिए नौकरी, मकान बेचने, किराए पर देने,वस्तु के प्रचार की सूचनाएँ विज्ञापन कहलाती हैं। विज्ञापन के आलोचक मानते हैं कि किसी अच्छी वस्तु को प्रचार के आवश्यकता नहीं और खराब वस्तुएँ विज्ञापन दने के बाद भी नहीं चल पाती। परंतु अच्छी वस्तुओं का पता विज्ञापन से ही चलता है । किसी वस्तु का निर्माण करने वाली कंपनी या व्यक्ति उत्पादक, खरीदने वाला उपभोक्ता और दोनो को जोड़ने का कार्य विज्ञापन है। पुराने समय में कम आवश्यकता के कारण वस्तुओं का प्रचार मौखिक रूप से होता था । मनुष्य की बढ़ती आवश्यकताओं के कारण विज्ञापन मानव जीवन की अनिवार्यता बन गया है ।

प्रश्न–अभ्यास

प्रश्न 1 सार लेखन किसे कहते हैं?

प्रश्न 2 सार लेखन का अर्थ बताते हुए इसकी प्रक्रिया लिखिए।

प्रश्न :3 एक अच्छे सार लेखन में कौन कौन से गुण होने चाहिए?

प्रश्न 4 सार लेखक की विशेषताओं का वर्णन कीजिए ।

प्रश्न 5 सार लिखिए :–

भारतीय संस्कृति में गुरु और शिष्य के संबंध को अंत्यंत पावन और गौरवपूर्ण माना जाता है।गुरु की महिमा का वर्णन करते हुए प्राचीन शास्त्रों में कहा गया है कि गुरु साक्षात परब्रह्म का स्वरूप है। इसलिए हमें ईश्वर से पूर्व गुरु की वंदना करनी चाहिए।जीवन में हमारे प्रथम गुरु माता पिता होते हैं।गुरु वही है जिसे मन प्रणाम करे जिनके समीप बैठने से दुर्गुण दूर हो जाते हैं।गुरु वह ज्ञान का पुंज है जो हमारे भीतर आध्यात्मिक चेतना को जाग्रत करके सत्य से हमारा साक्षात्कार करवाता है। गुरु के सानिध्य से हमारी दशा और दिशा दोनो बदल जाती है। उदाहरणस्वरूप अपनी विलक्षण प्रतिभा और ओजस्वी वाणी के द्वारा भारत की संस्कृति का परचम सम्पूर्ण विश्व में लहराने वाले स्वामी विवेकानंद को जब गुरु रामकृष्ण परमहंस का वरदहस्त प्राप्त हुआ तब वे नरेंद्रनाथ से स्वामी विवेकानंद के रूप में प्रसिद्ध हुए। इसी प्रकार गुरु द्रोणाचार्य की शिक्षा,प्रेरणा और आशीर्वाद ने अर्जुन को सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर के रूप में प्रतिष्ठित किया।

संदर्भ ग्रंथ

1 प्रयोजनमूलक हिंदी की नयी भूमिका, कैलाश नाथ पांडेय

2 कार्यालय कार्यबोध, हरि बाबू कंसल

3 हिंदी व्याकरण एवं रचना विकास , महेन्द्र कुमार मिश्रा

4 आलेख आधुनिक हिंदी :विविध आयाम , कृष्ण कुमार गोस्वामी

संप्रेषण कौशल

इकाई – 2

1. सार्वजनिक सूचना,
2. वर्गीकृत विज्ञापन लेखन

बी.ए. सत्र – प्रथम

डा. सुभाष चन्द्र ठाकुर
राजकीय महाविद्यालय, किश्तवाड़

इकाई – 2

1. सार्वजनिक सूचना

'सार्वजनिक' का अर्थ है – "सब लोगों से संबंध रखने वाला तथा 'सूचना' का अर्थ है किसी विषय का ज्ञान या परिचय कराने वाली बात।"

सूचनाओं के प्रकाशन का उद्देश्य यह होता है कि उस विषय में रूचि रखने वाले सभी व्यक्तियों को आवश्यक जानकारी मिल जाए। आँकड़ों के साथ भविष्य में होने वाले कार्यक्रम, समारोह, बाद के विषय में बताना 'सूचना' कहलाता है।

राजकीय तथा गैर सरकारी सूचनाएं जो हज़ारों लोगों के लिए समाचार पत्रों में प्रकाशन के लिए भेजी जाती हैं, उन्हें सार्वजनिक सूचनाएं कहते हैं। उर्दू भाषा में सार्वजनिक सूचना को 'इश्तिहार' भी कहा जाता है।

इस प्रकार की सूचना से देश का एक आम नागरिक किसी भी विषय की महत्त्वपूर्ण जानकारी प्राप्त कर सकता है। किसी भी प्रकार की सूचना को जन–जन तक पँहुचाने के लिए प्रत्येक संस्थान में सूचना पट (Notice Board) होते हैं।

'सूचना लेखन' कम से कम शब्दों में औपचारिक शैली में लिखी संक्षिप्त जानकारी होती है। इसका प्रयोग जन्म तथा मृत्यु की घोषणा करने, घटनाओं जैसे उदघाटन व सेल, सरकारी आदेशों की जानकारी देने, किसी कर्मचारी को नौकरी से निलम्बित करने या कर्मचारी द्वारा नौकरी छोड़ने की सूचना देने के लिए किया जाता है। सूचना लिखने का हुनर भी होना चाहिए। कम से कम और सरल शब्दों में किसी भी विशय को दूसरों तक प्रेषित करना सार्वजनिक सूचना का उद्देश्य होना चाहिए। इस प्रकार की सूचना से समाज में जन–जन की ज्ञान वृद्धि होती है।

सूचना–लेखन का तात्पर्य है – किसी विशेष सूचना को सार्वजनिक करना।

एक प्रभावशाली सूचना–लेखन की कला को अभ्यास द्वारा ही सीखा जा सकता है। सूचना पूर्ण जानकारी देने वाली और सरल भाषा में लिखी होनी चाहिए। एक अच्छी सूचना के लिए निम्नलिखित बिन्दुओं का समावेश किया जाना आवश्यक हैं –

1. उस संस्थान, संस्था, विद्यालय या कार्यालय का नाम
2. दिनांक
3. उपयुक्त शीर्षक
4. एक आकर्षित करने वाला नारा
5. सूचना लिखने का उद्देश्य
6. समय का सही और पूरा विवरण – दिनांक, समय, स्थान और कार्यक्रम

उदाहरण –

औपचारिक अथवा अनौपचारिक बैठक के लिए इस प्रकार की जानकारियां देना ज़रूरी हैं –

- दिनांक
- स्थान
- किस–किस को आना है
- संपर्क किए जाने वाले व्यक्ति का नाम/पता
- समय
- उद्देश्य
- विशिष्ट निर्देश

वार्षिकोत्सव से संबंधित तैयारी के लिए विद्यार्थी परिषद की बैठक के लिए सूचना पत्र

सूचना

विद्यार्थी परिषद

दीवान बद्री नाथ स्कूल, जम्मू

9 मार्च 2020

प्रियो मित्रो

आगामी 12 मार्च, 2020 को वार्षिकोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। इसी से सम्बंधित व्यवस्था को लेकर कुछ आवश्यक मुद्दों पर चर्चा करने के लिए छात्र परिशद की बैठक दिनांक 05 मार्च 2020 को सभागार में मध्यावकाश के समय होनी निश्चित हुई है। छात्र परिषद के सभी सदस्यों की उपस्थिति अनिवार्य है।

अमित सिंह

सचिव

विद्यार्थी परिशद

प्रश्न–अभ्यास

1. भवन निर्माण के लिए लोगों को आमंत्रण करने के लिए एक सूचना तैयार कीजिए।
2. महा विद्यालय पत्रिका के लिए रचनाएं आमंत्रित करते हुए एक सूचना–पत्र लिखिए?
3. राश्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय द्वारा आयोजित चित्रमल कार्यशाला से सम्बन्धित सूचना–पत्र।

1. वर्गीकृत विज्ञापन लेखन

'विज्ञापन' को अंग्रेज़ी में 'Advertisement' कहा जाता है जिसका अर्थ है बताना, सार्वजनिक घोषणा या ध्यानाकर्षण है लेकिन प्रतियोगिता के इस दौर में विज्ञापन का अर्थ – धुआँधार प्रचार या लोगों को अपनी ओर किसी भी प्रकार से आकर्षित करना है।

विज्ञापन शब्द दो शब्दों के योग से बना है – वि+ज्ञापन, 'वि' का अर्थ होता है – 'विशेष' । 'ज्ञापन' शब्द का अर्थ है – 'सूचना का ज्ञान'।

विज्ञापन प्रचार–प्रसार का ऐसा साधन है जो बिना किसी राजनीतिक धार्मिक या सांप्रदायिक दबावों के जनता या उपभोक्ता में अपने लिए रूझान उत्पन्न करता है। विज्ञापन का सामान्य अर्थ है जानकारी कराना या प्रचार। इसके अतिरिक्त इसका अर्थ सूचना भी माना जाता है।

विज्ञापन का इतिहास मानव सभ्यता के आरम्भ से ही माना जा सकता है। धीरे–धीरे व्यापारिक गतिविधियां प्रारम्भ होने से बचाने के लिए व्यक्तिगत ज्ञान का परस्पर आदान–प्रदान हुआ। प्रारम्भिक व्यापार लघुस्तरीय था इसलिए प्रचार करने का तरीका भी लघुतम रहा जैसे कि ढोल बजाकर भीड़ एकत्र कर नाटकीय आवाज़ में जन सम्पर्क की परम्परा हुई। इन वस्तुओं का विक्रय, सेवाओं का विक्रय और मनोरंजन भी किया जाने लगा। उसके बाद लाउडस्पीकर आया तो किसी भी वाहन पर बैठकर लाउडस्पीकर पर चिल्लाते हुए विज्ञापन दिये जाने लगे। गली–गली, मोहल्ले–मोहल्ले, सड़क–सड़क विज्ञापन देते हुए जब गाड़ियां गुज़रा करती थी। दूर संचार की व्यवस्था में तकनीकी प्रगति के साथ विज्ञापन को विविध आयाम मिल गये।

होर्डिंग, भीतचित्र लेखन, मुद्रण तथा उसके बाद रेडियो, दूरदर्शन और अब इन्टरनेट पर विज्ञान की सुविधा उपलब्ध है। औद्योगिक क्रान्ति से लेकर वर्तमान सूचना तक विज्ञापन की भूमिका निर्णायक रही है।

यह कदाचित अतिशयोक्तिपूर्ण बात न होगी कि सभी सामाजिक परिवर्तनों में विज्ञापन, अस्त्र की तरह प्रयोग होता रहा है।

सबसे अधिक चिंता की बात यह है कि विज्ञापनों में सुन्दर युवतियों का प्रयोग अत्यन्त भौडें ढंग से हो रहा है। विज्ञापन का प्रयोग साक्षरता अभियान के लिए, अल्प आयु में विवाह के विरुद्ध, दहेज प्रथा के विरुद्ध, बीमारियों में टीकाकरण, नेत्रदान के लिए, राष्ट्रीय एकता के लिए, नागरिक मतदान के लिए, पारस्परिक एकता और देश हित के लिए होने चाहिए। उदाहरण के लिए पालि के टीकाकरण के अभियान के प्रति जागरुकता लाने के लिए अभिनेता अमिताभ बच्चन तथा ऐश्वर्या राय की अपील अत्यंत प्रभावकारी होती है।

विज्ञापन कई प्रकार के होते हैं –

1. अनुनेय विज्ञापन

ये विज्ञापन उपभोक्ताओं के मन में आकर्षण पैदा करते हैं। जैसे – किसी चीज़ की अधिक बिक्री के लिए साबुन, पाऊडर आदि।

2. सूचनाप्रद विज्ञापन

ये विज्ञापन शिक्षाप्रद, सूचनाप्रद, उपभोक्ता समाज के जीवन स्तर को ऊँचा उठाने से सम्बन्धित होते हैं।

3. संस्थानिक विज्ञापन

ये विज्ञापन व्यावसायिक गति–प्रगति और साख बढ़ाने के उद्देश्य से प्रसारित किए जाते हैं।

4. औद्योगिक विज्ञापन

जो कच्चे माल, उपकरण आदि की क्रय में वृद्धि के उद्देश्य से किए जाते हैं।

5. वित्तीय विज्ञापन

जिनका सम्बन्ध मुख्य रूप से आर्थिक गतिविधियों से होता है। जैसे – शेयर खरीदने आदि का विज्ञापन।

विज्ञापन लिखते समय निम्नलिखित बिन्दुओं पर ध्यान केन्द्रित करना ज़रूरी है –

शीर्षक

शीर्षक विज्ञापन का महत्त्वपूर्ण अंग है। यह सरल एवं प्रभावपूर्ण तरीके से कम से कम शब्दों में संदेश की ओर संकेत करने वाला होना चाहिए।

उपशीर्षक

उपशीर्षक वास्तव में शीर्षक और काया कथ्य के बीच सेतु या पुल का कार्य करता है।

काया–कथ्य (Body copy)

काया कथ्य इतना छोटा न हो कि ग्राहक की जिज्ञासा को अधूरा छोड़ दे या इतनी बड़ी भी न हो कि पाठक पढ़ते पढ़ते ऊब जाएँ। इसके अंत में पाठक को कुछ करने की सलाह दी गई हो।

विज्ञापन का उदाहरण

ईंधन बचाएँ   ईंधन बचाएँ

ईंधन की बचत

पैसे की बचत   पर्यावरण संरक्षण

ईंधन बचाए, जिम्मेदारी निभाहें

प्रश्न–अभ्यास

निम्नलिखित के लिए विज्ञापन तैयार कीजिए –

1. बच्चों की साईकिल पर एक विज्ञापन लिखिए?
2. एक कोचिंग संस्थान पर विज्ञापन लिखिए?
3. बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ पर विज्ञापन लिखिए?
4. मोबाईल का नया शोरूम खुला है, ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए विज्ञापन बनाइए?

संप्रेषण कौशल

इकाई – 2

समास (Compound)

बी.ए. सत्र – प्रथम

डा. विजय कुमार
राजकीय महाविद्यालय, पाडर
किश्तवाड़

इकाई – 4

समास (Compound)

समास का शाब्दिक अर्थ – जोडना या मिलाना। यह भाषा की विशेषता है कि वह विभिन्न रूपों को जोड़कर नए–नए शब्दों की रचना करती रहती है। जिस प्रकार किसी शब्द में प्रत्यय या उपसर्ग लगाकर नए शब्द बनते हैं, उसी प्रकार दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से भी नए शब्द बनते हैं। शब्द निर्माण की इस विधि को समास कहा जाता है।

1. समास की परिभाषा

'समास' वह शब्द रचना है जिसमें अर्थ की दृष्टि से परस्पर स्वतंत्र संबंध रखने वाले दो या दो से अधिक शब्द मिलकर किसी अन्य स्वतंत्र शब्द की रचना करते हैं।[1]

- समास तभी बनता है जब दोनों या सभी पद सार्थक हों।
- सामासिक शब्द में आये दो पदों में पहले पद को '**पूर्वपद**' तथा दूसरे पद को '**उतरपद**' कहते हैं।
- समास प्रक्रिया से बने पद को '**समस्तपद**' कहते हैं।
- '**समस्तपद**' के दोनों पदों को अलग–अलग करने की प्रक्रिया को '**समास–विग्रह**' कहते हैं,

  जैसे – गंगा + जल – गंगाजल – गंगा का जल

  ↓ ↓ ↓ ↓

  (पूर्वपद) + (उतरपद) (समस्तपद) (समास विग्रह)

1. डॉ. रामप्रकाश द्विवेदी, मानक व्यावहारिक हिंदी व्याकरण एवं लेखन, हितैशी पब्लिशर्स, नई दिल्ली, पृ. 103

2. समास के भेद

समास छह प्रकार के होते हैं –

1. अव्ययी भाव समास
2. तत्पुरुष समास
3. कर्मधारय समास
4. द्विगु समास
5. द्वंद्व समास
6. बहुब्रीहि समास[1]

1. अव्ययी भाव समास – जिस समास का पहला पद (पूर्वपद) अव्यय तथा प्रधान हो, उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं, जैसे –

पहचान – पहला पद ⟶ अनु; आ, प्रति, भर, यथा, आदि होता है।

पूर्वपद – अव्यय+ उतरपद = समस्तपद – विग्रह

प्रति + दिन = प्रतिदिन – प्रत्येक दिन

आ + जन्म = आजन्म – जन्म से लेकर

यथा + संभव = यथासंभव – जैसा संभव हो

अनु + रूप = अनुरूप – रूप के योग्य

भर + पेट = भरपेट – पेट भर के

प्रति + कूल = प्रतिकूल – इच्छा के विरुद्ध

---

1. संजीव कुमार, सामान्य हिन्दी, लूसेंट पब्लिकेशन, प्रथम संस्करण, 2015, पटना, पृ. 54

2. **तत्पुरुश समास** – जिस समास में बाद का अथवा उतरपद प्रधान होता है तथा दोनों पदों के बीच का कारक–चिह्न लुप्त हो जाता है, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं।

उदाहरण के लिए –

पूर्वपद + उतरपद = समस्तपद – विग्रह

राज + कुमार = राजकुमार – राजा का कुमार

धर्म का ग्रंथ = धर्मग्रंथ

(विग्रह) (समस्तपद)

नेत्र से हीन = नेत्रहीन

सभा के लिए भवन = सभाभवन

तत्पुरुष समास के भेद – विभक्तियों के नामों के अनुसार छह भेद हैं :–

(i) कर्म तत्पुरुष समास (द्वितीय तत्पुरुष) – इसमें कर्म कारक की विभक्ति **'को'** का लोप हो जाता है; जैसे –

विग्रह	–	**समस्तपद**
यश को प्राप्त	–	यश प्राप्त
सुख को प्राप्त करने वाला	–	सुख प्राप्त
माखन को चुराने वाला	–	माखनचोर

(ii) करण तत्पुरुष (तृतीय तत्पुरुष) – इसमें करण कारक की विभक्ति **'से'**, **'के द्वारा'** का लोप हो जाता है; जैसे –

विग्रह	–	**समस्तपद**
नेत्र से हीन	–	नेत्रहीन
भय से आकुल	–	भयाकुल

शोक से ग्रस्त	–	शोकग्रस्त
सूर द्वारा रचित	–	सूररचित

(iii) संप्रदान तत्पुरुष (चतुर्थी तत्पुरुष) – इसमें संप्रदान कारक की विभक्ति **'के लिए'** का लोप हो जाता है; जैसे –

विग्रह	–	**समस्तपद**
प्रयोग के लिए शाला	–	प्रयोगशाला
स्नान के लिए घर	–	स्नानघर

(iv) अपादान तत्पुरुष (पंचमी तत्पुरुष) – इसमें अपादान की विभक्ति **'से'** (अलग होने का भाव) लुप्त हो जाती है; जैसे –

विग्रह	–	**समस्तपद**
पथ से भ्रष्ट	–	पथभ्रष्ट
देश से निकाला	–	देश निकाला
धन से हीन	–	धनहीन
पाप से मुक्त	–	पापमुक्त

(v) संबंध तत्पुरुष (षष्ठी तत्पुरुष) – इसमें सम्बन्ध कारक की विभक्ति **'का', 'के', 'की'** लुप्त हो जाती है; जैसे –

विग्रह	–	**समस्तपद**
राजा का पुत्र	–	राजपुत्र
पर के अधीन	–	पराधीन
देश की रक्षा	–	देश रक्षा

(vi) अधिकरण तत्पुरुष (सप्तमी तत्पुरुष) – इसमें अधिकरण कारक की विभक्ति **'में', 'पर'** लुप्त हो जाती है; जैसे –

विग्रह	–	**समस्तपद**
शोक में मगन	–	शोक मग्न
आप पर बीती	–	आप बीती
गृह में प्रवेश	–	गृह प्रवेश
लोक में प्रिय	–	लोकप्रिय
धर्म में वीर	–	धर्मवीर
कला में श्रेष्ठ	–	कलाश्रेष्ठ[1]

3. कर्मधारय समास – कर्मधारय समास में पहला पद विशेशण और दूसरा विशेशण अथवा संज्ञा होता है।

विशेषण + संज्ञा = कर्मधारण समास। जैसे –

महा + कवि = महाकवि – महान है जो कवि

(पहला पद + दूसरा पद = समस्त पद – विग्रह)

नर + अधम = नराधम – अधम है नर जो

पीत + सागर = पीतसागर – पीत है जो सागर

(इस समास में एक शब्द उपमान और दूसरा उपमेय होता है)

4. द्विगु समास – जिस समास का पहला पद संख्यावाचक और दूसरा पद संज्ञा हो, उसे द्विगु समास कहते हैं। जैसे –

---

1. संजीव कुमार, सामान्य हिन्दी, लूसेंट पब्लिकेशन, प्रथम संस्करण, 2015, पटना, पृ. 55

पहला पद + दूसरा पद = समस्त पद – विग्रह)

त्रि + योगी = त्रियोगी – तीन योगों का समाहार

दो + पहर = दो पहर – दो पहरों का समाहार

त्रि + फला = त्रिफला – तीन फलों का समाहार

5. **द्वंद्व समास** – जिसके दोनों पद प्रधान हों, दोनों संज्ञाएँ अथवा विशेषण हों, वहन द्वंद्व समास कहलायेगा। इसका विग्रह करने क लिए दो पदों के बीच **'और'** अथवा **'या'** जैसा योजक अव्यय लिखा जाता है।[1]

पहचान :– दोनों पदों के बीच प्रायः योजक चिह्न (–) का प्रयोग होता है। उदाहरण के लिए –

समस्त पद	–	**विग्रह**
रात–दिन	–	रात और दिन
माता–पिता	–	माता और पिता
सीता–राम	–	सीता और राम
दुःख–सुख	–	दुःख और सुख

6. बहुब्रीहि समास – इस समास में कोई भी शब्द प्रधान नहीं होता बल्कि दोनों शब्द मिलकर एक नया अर्थ प्रकट करते हैं। जैसे पीताम्बर – इसके दो पद हैं – पीत + अम्बर। पहला **'विशेशण'** और दूसरा पद **'संज्ञा'** अतः इसे कर्मधाय समास होना चाहिए था परन्तु बहुब्रीहि में **पीताम्बर** का विशेष अर्थ पीत वस्त्र धारण करने वाला श्रीकृष्ण से लिया जाता है।

---

1. पृथ्वीनाथ पाण्डेय, आधुनिक हिन्दी व्याकरण, भारतीय पुस्तक परिशद, नई दिल्ली, संस्करण – 2013, पृ. 145–146

सन्धि और समास में अन्तर

	सन्धि		समास
1.	सन्धि में दो वर्णों का योग होता है।	1.	समास में दो पदों का योग होता है।
2.	सन्धि के लिए वर्णों के मेल और विकार की गुंजाइश रहती है।	2.	समास में पदों के प्रत्यय समाप्त कर दिये जाते हैं।
3.	सन्धि के तोड़ने को 'विच्छेद' कहते हैं।	3.	समास का 'विग्रह' होता है।
4.	हिन्दी में सन्धि तत्सम पदों में ही होती है।	4.	समास संस्कृत, तत्सम, हिन्दी, उर्दू हर प्रकार के पदों में होता है

प्रश्न – अभ्यास

1. समास किसे कहते हैं? इसकी उपयोगिता क्या है?
2. 'द्वद्व' और 'अव्ययीभाव' समास की परिभाशा उदाहरण सहित लिखिए।
3. 'तत्पुरुष' और 'द्वन्द्व' समास में क्या भेद है, सोदाहरण समझाइए?
4. बहुब्रीहि और द्विगु समास में क्या–क्या अन्तर है, सोदाहरण बताइए?
5. निम्नलिखित शब्दों का विग्रह करते हुए, समास बताइए?

   राजपुरुष, प्रतिदिन, माखनचोर, चरणकमल, दोपहर, हस्तलिखित, लोकनाथ, चतुर्भुज

संप्रेषण कौशल

इकाई – 2

समास (Compound)

बी.ए. सत्र – प्रथम

डा. विजय कुमार
राजकीय महाविद्यालय, पाडर
किश्तवाड़

इकाई – 4

समास (Compound)

समास का शाब्दिक अर्थ – जोडना या मिलाना। यह भाषा की विशेषता है कि वह विभिन्न रूपों को जोड़कर नए–नए शब्दों की रचना करती रहती है। जिस प्रकार किसी शब्द में प्रत्यय या उपसर्ग लगाकर नए शब्द बनते हैं, उसी प्रकार दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से भी नए शब्द बनते हैं। शब्द निर्माण की इस विधि को समास कहा जाता है।

1. समास की परिभाषा

'समास' वह शब्द रचना है जिसमें अर्थ की दृष्टि से परस्पर स्वतंत्र संबंध रखने वाले दो या दो से अधिक शब्द मिलकर किसी अन्य स्वतंत्र शब्द की रचना करते हैं।[1]

- समास तभी बनता है जब दोनों या सभी पद सार्थक हों।
- सामासिक शब्द में आये दो पदों में पहले पद को '**पूर्वपद**' तथा दूसरे पद को '**उतरपद**' कहते हैं।
- समास प्रक्रिया से बने पद को '**समस्तपद**' कहते हैं।
- '**समस्तपद**' के दोनों पदों को अलग–अलग करने की प्रक्रिया को '**समास–विग्रह**' कहते हैं,

जैसे – गंगा + जल – गंगाजल – गंगा का जल

(पूर्वपद) + (उतरपद) (समस्तपद) (समास विग्रह)

1. डॉ. रामप्रकाश द्विवेदी, मानक व्यावहारिक हिंदी व्याकरण एवं लेखन, हितैशी पब्लिशर्स, नई दिल्ली, पृ. 103

2. समास के भेद

समास छह प्रकार के होते हैं –

1. अव्ययी भाव समास
2. तत्पुरुष समास
3. कर्मधारय समास
4. द्विगु समास
5. द्वंद्व समास
6. बहुब्रीहि समास[1]

1. अव्ययी भाव समास – जिस समास का पहला पद (पूर्वपद) अव्यय तथा प्रधान हो, उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं, जैसे –

पहचान – पहला पद ⟶ अनु; आ, प्रति, भर, यथा, आदि होता है।

पूर्वपद – अव्यय+ उतरपद = समस्तपद – विग्रह

प्रति + दिन = प्रतिदिन – प्रत्येक दिन

आ + जन्म = आजन्म – जन्म से लेकर

यथा + संभव = यथासंभव – जैसा संभव हो

अनु + रूप = अनुरूप – रूप के योग्य

भर + पेट = भरपेट – पेट भर के

प्रति + कूल = प्रतिकूल – इच्छा के विरुद्ध

---

1. संजीव कुमार, सामान्य हिन्दी, लूसेंट पब्लिकेशन, प्रथम संस्करण, 2015, पटना, पृ. 54

2. **तत्पुरुश समास** – जिस समास में बाद का अथवा उतरपद प्रधान होता है तथा दोनों पदों के बीच का कारक–चिह्न लुप्त हो जाता है, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं।

उदाहरण के लिए –

पूर्वपद + उतरपद = समस्तपद – विग्रह

राज + कुमार = राजकुमार – राजा का कुमार

धर्म का ग्रंथ = धर्मग्रंथ

(विग्रह) (समस्तपद)

नेत्र से हीन = नेत्रहीन

सभा के लिए भवन = सभाभवन

तत्पुरुष समास के भेद – विभक्तियों के नामों के अनुसार छह भेद हैं :–

(i) कर्म तत्पुरुष समास (द्वितीय तत्पुरुष) – इसमें कर्म कारक की विभक्ति **'को'** का लोप हो जाता है; जैसे –

विग्रह	–	**समस्तपद**
यश को प्राप्त	–	यश प्राप्त
सुख को प्राप्त करने वाला	–	सुख प्राप्त
माखन को चुराने वाला	–	माखनचोर

(ii) करण तत्पुरुष (तृतीय तत्पुरुष) – इसमें करण कारक की विभक्ति **'से'**, **'के द्वारा'** का लोप हो जाता है; जैसे –

विग्रह	–	**समस्तपद**
नेत्र से हीन	–	नेत्रहीन
भय से आकुल	–	भयाकुल

शोक से ग्रस्त	–	शोकग्रस्त
सूर द्वारा रचित	–	सूररचित

(iii) संप्रदान तत्पुरुष (चतुर्थी तत्पुरुष) – इसमें संप्रदान कारक की विभक्ति **'के लिए'** का लोप हो जाता है; जैसे –

विग्रह	–	**समस्तपद**
प्रयोग के लिए शाला	–	प्रयोगशाला
स्नान के लिए घर	–	स्नानघर

(iv) अपादान तत्पुरुष (पंचमी तत्पुरुष) – इसमें अपादान की विभक्ति **'से'** (अलग होने का भाव) लुप्त हो जाती है; जैसे –

विग्रह	–	**समस्तपद**
पथ से भ्रष्ट	–	पथभ्रष्ट
देश से निकाला	–	देश निकाला
धन से हीन	–	धनहीन
पाप से मुक्त	–	पापमुक्त

(v) संबंध तत्पुरुष (षष्ठी तत्पुरुष) – इसमें सम्बन्ध कारक की विभक्ति **'का', 'के', 'की'** लुप्त हो जाती है; जैसे –

विग्रह	–	**समस्तपद**
राजा का पुत्र	–	राजपुत्र
पर के अधीन	–	पराधीन
देश की रक्षा	–	देश रक्षा

(vi) अधिकरण तत्पुरुष (सप्तमी तत्पुरुष) – इसमें अधिकरण कारक की विभक्ति **'में', 'पर'** लुप्त हो जाती है; जैसे –

विग्रह	–	**समस्तपद**
शोक में मगन	–	शोक मग्न
आप पर बीती	–	आप बीती
गृह में प्रवेश	–	गृह प्रवेश
लोक में प्रिय	–	लोकप्रिय
धर्म में वीर	–	धर्मवीर
कला में श्रेष्ठ	–	कलाश्रेष्ठ[1]

3. कर्मधारय समास – कर्मधारय समास में पहला पद विशेशण और दूसरा विशेशण अथवा संज्ञा होता है।

विशेषण + संज्ञा = कर्मधारण समास। जैसे –

महा + कवि = महाकवि – महान है जो कवि

(पहला पद + दूसरा पद = समस्त पद – विग्रह)

नर + अधम = नराधम – अधम है नर जो

पीत + सागर = पीतसागर – पीत है जो सागर

(इस समास में एक शब्द उपमान और दूसरा उपमेय होता है)

4. द्विगु समास – जिस समास का पहला पद संख्यावाचक और दूसरा पद संज्ञा हो, उसे द्विगु समास कहते हैं। जैसे –

---

1. संजीव कुमार, सामान्य हिन्दी, लूसेंट पब्लिकेशन, प्रथम संस्करण, 2015, पटना, पृ. 55

पहला पद + दूसरा पद = समस्त पद – विग्रह)

त्रि + योगी = त्रियोगी – तीन योगों का समाहार

दो + पहर = दो पहर – दो पहरों का समाहार

त्रि + फला = त्रिफला – तीन फलों का समाहार

5. **द्वंद्व समास** – जिसके दोनों पद प्रधान हों, दोनों संज्ञाएँ अथवा विशेषण हों, वहन द्वंद्व समास कहलायेगा। इसका विग्रह करने क लिए दो पदों के बीच **'और'** अथवा **'या'** जैसा योजक अव्यय लिखा जाता है।[1]

पहचान :– दोनों पदों के बीच प्रायः योजक चिह्न (–) का प्रयोग होता है। उदाहरण के लिए –

समस्त पद	–	**विग्रह**
रात–दिन	–	रात और दिन
माता–पिता	–	माता और पिता
सीता–राम	–	सीता और राम
दुःख–सुख	–	दुःख और सुख

6. बहुब्रीहि समास – इस समास में कोई भी शब्द प्रधान नहीं होता बल्कि दोनों शब्द मिलकर एक नया अर्थ प्रकट करते हैं। जैसे पीताम्बर – इसके दो पद हैं – पीत + अम्बर। पहला **'विशेशण'** और दूसरा पद **'संज्ञा'** अतः इसे कर्मधाय समास होना चाहिए था परन्तु बहुब्रीहि में **पीताम्बर** का विशेष अर्थ पीत वस्त्र धारण करने वाला श्रीकृष्ण से लिया जाता है।

---

1. पृथ्वीनाथ पाण्डेय, आधुनिक हिन्दी व्याकरण, भारतीय पुस्तक परिशद, नई दिल्ली, संस्करण – 2013, पृ. 145–146

सन्धि और समास में अन्तर

	सन्धि		समास
1.	सन्धि में दो वर्णों का योग होता है।	1.	समास में दो पदों का योग होता है।
2.	सन्धि के लिए वर्णों के मेल और विकार की गुंजाइश रहती है।	2.	समास में पदों के प्रत्यय समाप्त कर दिये जाते हैं।
3.	सन्धि के तोड़ने को 'विच्छेद' कहते हैं।	3.	समास का 'विग्रह' होता है।
4.	हिन्दी में सन्धि तत्सम पदों में ही होती है।	4.	समास संस्कृत, तत्सम, हिन्दी, उर्दू हर प्रकार के पदों में होता है

प्रश्न – अभ्यास

1. समास किसे कहते हैं? इसकी उपयोगिता क्या है?
2. 'द्वद्व' और 'अव्ययीभाव' समास की परिभाशा उदाहरण सहित लिखिए।
3. 'तत्पुरुष' और 'द्वन्द्व' समास में क्या भेद है, सोदाहरण समझाइए?
4. बहुब्रीहि और द्विगु समास में क्या–क्या अन्तर है, सोदाहरण बताइए?
5. निम्नलिखित शब्दों का विग्रह करते हुए, समास बताइए?

   राजपुरुष, प्रतिदिन, माखनचोर, चरणकमल, दोपहर, हस्तलिखित, लोकनाथ, चतुर्भुज

इकाई – दो

बी.ए. सत्र – प्रथम

संधि परिभाषा एवं भेद

उपमा कुमारी
राजकीय महाविद्यालय डोडा

इकाई की रूपरेखा

संधि का अर्थ व परिभाषा

संधि के भेद

स्वर संधि

व्यंजन संधि

विसर्ग संधि

संधि का अर्थ व परिभाषा

अर्थ : संधि शब्द का अर्थ है – मेल, संयोग या समझौता। व्याकरण में संधि शब्द का प्रयोग एक तरह से वर्ण विकार के अर्थ में किया जाता है। यह विकार वर्णो के मेल से ही होता है। जब दो शब्द पास पास आते हैं, तब हम उच्चारण की सुविधा के लिए दोनो को पृथक पृथक न करके उन्हें मिला देते हैं।इस प्रकार एक नया शब्द बन जाता है। शब्द के इस नए रूप के निर्माण में पहले शब्द के अंतिम अक्षर और दूसरे शब्द के पहले अक्षर का मेल होता है।सामन्यता अक्षरों की इसी मिलावट को संधि कहा जाता है

परिभाषा :– दो वर्णों के मेल से उत्पन्न विकार को व्याकरण में संधि कहा जाता है। दो निकटवर्ती वर्णों के परस्पर समीप आने पर उनमें जो विकार सहित मेल होता है, उसे संधि कहते हैं।

संधि के उदाहरण :– विद्या + अर्थी = विद्यार्थी, रवि + इंद्र = रवीन्द्र, पुस्तक + आलय = पुस्तकालय , देव + आलय = देवालय, सत् + जन = सज्जन

संधि विच्छेद :–जो शब्द संधि से बने हैं ,उनके खंडों को अपने पूर्व रूप में रखना अथवा संधि को तोड़ना संधि विच्छेद कहलाता है।

उदाहरण :– कवींद्र = कवि + इंद्र, इत्यादि = इति + आदि, रमेश = रमा + ईश

संधि के भेद :

संधि तीन प्रकार की है :–

(I) स्वर संधि

(II) व्यंजन संधि

(III) विसर्ग संधि

(I) स्वर संधि :–स्वरों के परस्पर निकट आने पर अथवा मिलने पर उनमें जो विकार सहित मेल होता है, उसे स्वर संधि कहते हैं। स्वर संधि में पहले शब्द का अंतिम वर्ण और दूसरे शब्द का प्रथम वर्ण स्वर होता है।

उदाहरण :–

परम् + अर्थ = परमार्थ

स्व + अर्थ = स्वार्थ

स्वर संधि के प्रकार

1 दीर्घ संधि

2 गुण संधि

3 वृद्धि संधि

4 यण संधि

5 अयादि संधि

1 **दीर्घ संधि** :– ह्रस्व या दीर्घ अ,इ, उ के बाद यदि ह्रस्व या दीर्घ अ,इ,उ आ जाए तो दोनों मिलकर दीर्घ आ, ई ,ऊ हो जाते हैं अथवा जब दो सजातीय स्वर पास आते हैं तो दोनो मिलकर उसी वर्ण का दीर्घ स्वर बनाते हैं।

जैसेः पुस्तक + आलय = पुस्तकालय । यहाँ पर पहले शब्द का अंतिम वर्ण अ तथा दूसरे शब्द का पहला वर्ण आ है। दोनो मिलकर दीर्घ आ बनाते हैं।

उदाहरण :–

अनेक् + अनेक = अनेकानेक

धर्म् + अर्थ = धर्मार्थ

परम + अणु = परमाणु

सूर्य् + अस्त = सूर्यासत

भाव + अर्थ = भावार्थ

शब्द् + अर्थ = शब्दार्थ

एक + एक = एकाएक

मत़् + अधिकार = मताधिकार

रस + अयन = रसायन

देव + आलय = देवालय

देव + आसन = देवासन

वृक्ष + आरोपण = वृक्षारोपण

महा़ + आत्मा = महात्मा

रवि + इंद्र = रवींद्र

अति + इव = अतीव

प्रति + ईक्षा = प्रतीक्षा

रजनी़ + ईश = रजनीश

सु + उक्ति = सूक्ति

वधू + उत्सव = वधूत्सव

देह़ + अंत = देहांत

स्व़ + अर्थी = स्वार्थी

नील़ + अंबर = नीलम्बर

दिऩ + अंक = दिनांक

चरण़ + अमृत = चरणामृत

हिम + आलय = हिमालय

ध्वज़ + आरोहण = ध्वजारोहण

सदा़ + आचार = सदाचार

विद्या़ + अर्थी = विद्यार्थी

मुनि़ + इंद्र = मुनींद्र

कवि + इंद्र = कवींद्र

परि + ईक्षा = परीक्षा

नारी़ + ईश्वर = नारीश्वर

अनु + उदित = अनूदित

भू + उ न्नति = भून्नति

2 गुण संधि :– गुण संधि में अ,आ के बाद इ,ई हो तो ए बन जाता है या उ, ऊ हो तो ओ तथा ऋ हो तो अर् बन जाता है।

अ/आ + इ/ई = ए

अ/आ़ + उ/ऊ = ओ

अ/आ़ +ऋ = अर्

उदाहरण : ज्ञान + इंद्र = ज्ञानेंद्र । यहाँ पर अ इ के मेल होने से ए बन गया ।

लोक़उक्ति = लोकोक्ति । यहाँ पर अ और उ मिलकर ओ बन गया है।

सुर + इंद्र = सुरेंद्र

गण + ईश = गणेश

नर + ईश = नरेश

यथा + इष्ट = यथेष्ट

पर + उपकार = परोपकार

नव + उदय = नवोदय

हित + उपदेश = हितोपदेश

महा + उत्सव = महोत्सव

सप्त + ऋषि = सप्तर्षि

मह + ऋषि = महर्षि

गज + इंद्र = गजेंद्र

राजा + इंद्र = राजेंद्र

महा + ईश = महेश

राजा + ईश = राजेश

सूर्य + उदय = सूर्योदय

प्रश्न + उत्तर = प्रश्नोतर

पश्चिम + उत्तर = पश्चिमोत्तर

महा + उदय = महोदय

देव + ऋषि = देवर्षि

3 वृद्धि : वृद्धि संधि में अ आ के परे ए, ऐ हो तो मिलकर ऐ बन जाता है और अ,आ के आगे ओ,औ हो तो औ बन जाता है।

अ/आ + ए/ऐ = ऐ

अ/आ + ओ/औ = औ

उदाहरण :– हित + एशी = हितैशी यहाँ पर अ और ए मिलकर ऐ बन गया है।

एक + एक = एकैक।

सदा + एव = सदैव

तथा + एव=तथैव

जल + ओध =जलौध

यथा + एव = यथैव।

महा +ऐश्वर्य = महैश्वर्य

वन + औषध = वनौषध

4 यण संधि :– इ/ई के बाद इ वर्ण के अतिरिक्त कोई अन्य स्वर आए तो इ/ई का परिवर्तन य् में हो जाता है या उ/ए ऊ के बाद उ को छोड़कर कोईं अन्य स्वर आए तो उ का परिवर्तन व् में तथा ऋ के बाद कोई अन्य स्वर आए तो ऋ का परिवर्तन र् में हो जाता है।

उदाहरण:–

अति + अंत = अत्यंत

अति + अधिक = अत्यधिक

यदि + अपि = यद्यपि

अति + आचार = अत्याचार

परि + आवरण = पर्यावरण

प्रति + आगमन = प्रत्यागमन

देवी + आगमन = देव्यागमन

प्रति + उत्तर = प्रत्युत्तर

अति + उत्तम = अत्युत्तम

नि + ऊन = न्यून

अनु + अय = अन्वय

सु + अल्प = स्वल्प

अनु + एषण = अन्वेषण

इति + आदि = इत्यादि

गति + अवरोध = गत्यावरोध

अति + आवश्यक = अत्यावश्यक

वि + आयाम = व्यायाम

देवी + अर्पण = देव्यर्पण

देवी + आलय = देव्यालय

प्रति + उपकार = प्रत्युपकर

वि + ऊह = व्यूह

प्रति + एक = प्रत्येक

सु + अच्छ = स्वच्छ

अनु + ऐषक = अन्वेषक

सु + आ गत = स्वागत

5 अयादि संधि:–ए या ऐ स्वर के बाद ए वर्ण के अतिरिक्त कोई अन्य स्वर आए तो ए का अय् और ऐ का आय् य ओ या औ के बाद ओऔ के अतिरिक्त कोई अन्य स्वर आए तो ओ का अव् तथा औ का आव् हो जाता है।

उदाहरण :–

ने़ + अन = नयन	नै़ + अक = नायक
पो़ + अन = पवन	पौ़ + अक = पावक
गै़ + अक = गायक	गै. + अन = गायन
गै़ + इका = गायिका	नै. + इका = नायक
भो़ + अन = भवन	हो + अन = हवन
भो़ + इश्य = भविष्य	नौ़ + इक = नाविक

(II) **व्यंजन संधिः**– व्यंजन का व्यंजन से अथवा किसी स्वर से मेल होने पर जो परिवर्तन होता है उसे व्यंजन संधि कहते हैं। व्यंजन संधि में पहले शब्द का अंतिम वर्ण व्यंजन होना चाहिए,दूसरे शब्द का पहला अक्षर स्वर या व्यंजन में से कुछ भी हो सकता है।

इसके कुछ महत्त्वपूर्ण नियम इस प्रकार हैं :–

1 जब किसी वर्ग के पहले वर्ण (क, च, ट्, त, प) का मिलन किसी वर्ग के तीसरे या चौथे वर्ण से या (य , ल, व, ह) से या किसी स्वर से हो जाये तो क् को ग् , च् को ज् , ट् को ड् , त् को द् , और प् को ब् में बदल दिया जाता है। जैसे :–

वाक् +.ईश : वागीश

दिक् + अम्बर : दिगम्बर

दिक् + गज : दिग्गज

2. अगर किसी वर्ग के पहले वर्ण से परे कोई अनुनासिक वर्ण हो तो प्रथम वर्ण के बदले उसी वर्ग का अनुनासिक वर्ण हो जाता है।

दिक् + मण्डल : दिङ्मण्डल

वाक् + मय : वाङ्मय

3. जब त् का मिलन ग, घ, द, ध, ब, भ, य, र, व से या किसी स्वर से हो तो द् बन जाता है। जैसे :–

भगवत् + गीता = भगवद्गीता

4 त्त् या द् का मिलन च या छ हो तो त्त् या द् के स्थान पर च् हो जाता है। जैसे :–

उत् + चारण = उच्चारण

5 जब त् का मिलन ह् से हो तो त् को द् और ह् को ध् में बदल दिया जाता है। त् या द् के साथ ज या झ का मिलन होता है तब त् या द् की जगह पर ज् बन जाता है।

उदाहरण :

उत् + हरण : उद्धरण

सत् + जन : सज्जन

6. त् या द् के साथ जब ल का मिलन होता है तब त् या द् की जगह पर 'ल' बन जाता है।

तत् + लीन = तल्लीन

उत् + लास = उल्लास

7. म के बाद य, र, ल, व, श, ष, स, ह में से कोई एक व्यंजन हो तो म् अनुस्वार में बदल जाता है।

उदाहरण

सम् + योग : संयोग

सम् + वाद : संवाद

कुछ अन्य उदाहरण :–

सत् + जन = सज्जन

दिक् + गज = दिग्गज

अप् + ज = अब्ज

दिक् + अम्बर = दिगम्बर

वाक् + ईश = वागीश

सत् + चरित्र = सच्चरित्र

उत् +लास = उल्लास

उत् + हार = उद्धार

सम् +योग = संयोग

सम् + ताप = संताप

सम् + सार = संसार

सम् +पूर्ण = सम्पूर्ण

सम् +भव = संभव

सम् + हार : संहार

(III) **विसर्ग संधिः**–विसर्ग संधि में पहले शब्द के अंत में विसर्ग होना चाहिए । दूसरे शब्दों में विसर्ग का किसी स्वर या व्यंजन से मेल होने पर जो विकार होता है ,उसे विसर्ग संधि कहते हैं ।

विसर्ग संधि के कुछ महत्त्वपूर्ण नियम इस प्रकार हैं :–

1 विसर्ग के पहले यदि अ हो और बाद में कोई घोष व्यंजन, विसर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवा वर्ण , य, र, ल, व, ह हो तो विसर्ग का ओ हो जाता है। जैसे –

मनः + बल = मनोबल, मनः + रंजन = मनोरंजन, मनः + हर = मनोहर

2 विसर्ग के बाद यदि च, छ हो तो विसर्ग का श् हो जता है । जैसे :– दुः + चरित्र = दुश्चरित्र

3 विसर्ग के बाद यदि ट ,ठ हो तो विसर्ग का ष् हो जाता है । जैसे :– निः + ठुर = निष्ठुर

4 विसर्ग के बाद यदि त,ठ हो तो विसर्ग का स् हो जाता है । जैसे :– नमः + ते = नमस्ते

5 यदि विसर्ग के पहले अ,आ को छोड़कर कोई दूसरा स्वर आए और विसर्ग के बाद कोई स्वर हो, या किसी वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवा वर्ण हो या य र ल व ह हो तो विसर्ग के स्थान पर ʿहो जाता है य निः + आशा = निराशा, दुः + जन = दुर्जन

6 यदि विसर्ग से पहले अ ,आ को छोड़कर कोई अन्य स्वर हो और बाद में र हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है और उसके पूर्व का ह्रस्व स्वर दीर्घ हो जाता हैय जैसे निः + रज = नीरज

अन्य उदाहरण :–

निः + चल = निश्चल

निः +. छल = निश्छल

निः + ठुर = निष्ठुर

निः + कपट = निष्कपट

निः +. पाप = निष्पाप

नमः +. ते .= नमस्ते

दुः +. कर्म = दुष्कर्म

मनः +गति = मनोगति

मनः +. योग = मनोयोग

मनः + रथ = मनोरथ

निः + आशा = निराशा

दुः + उपयोग = दुरुपयोग

निः + गुण = निर्गुण

मनः + अनुकूल = मनोनुकूल

प्रश्न अभ्यास

प्रश्नः–1 संधि का अर्थ बताते हुए उसके भेद लिखिए।

प्रश्नः– 2 स्वर संधि किसे कहते हैं ? उदाहरण दीजिए।

प्रश्नः– 3 व्यंजन संधि किसे कहते हैं ? उदाहरण दीजिए ?

प्रश्नः– 4 विसर्ग संधि के कोई चार उदाहरण लिखिए ?

प्रश्नः– 5 स्वर संधि और व्यंजन संधि में अंतर स्पश्ट कीजिए ?

प्रश्नः– 6 संधि कीजिए :–

देव + आलय, हिम + आलय, नमः + ते, निः + गुण मनः + अनुकूल, सत् + जन, दिक् + गज, अप् + ज, सुर + इंद्र, गज़ + इंद्र, गण + ईश, ने + अन, नै + अक

प्रश्नः– 7 संधि विच्छेद कीजिएः–

निश्छल , निष्ठुर, निष्कपट सच्चरित्र , गायक , नायक

संदर्भ ग्रंथ :–

1 हिंदी भाषा का सरल व्याकरण, भोलानाथ तिवारी

2 आलेख आधुनिक हिंदीः विविध आयाम, कृष्ण कुमार गोस्वामी

संप्रेषण कौशल

इकाई – 3

1. तत्सम, तद्भव, देसी एवं विदेशी शब्द
2. अनेकार्थी शब्द
3. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

बी.ए. सत्र – प्रथम

रबीन्द्र कुमार
राजकीय महाविद्यालय, भद्रवाह

इकाई – 3

1. तत्सम, तद्भव, देसी एवं विदेशी शब्द

शब्द परिभाषा – वर्णों के मेल से बना सार्थक ध्वनि–समूह शब्द कहलाता है। शब्द भाषा की एक स्वतंत्र इकाई होती है और प्रत्येक स्वतंत्र सार्थक वर्णों का समूह–शब्द की संज्ञा कहलाता है।

शब्द की मुख्यतः चार विशेषताएँ निर्धारित की जा सकती हैं :–

1. शब्द किसी भी भाषा की स्वतंत्र इकाई है, जो अर्थ हेतु शब्दकोश में देखे जा सकते हैं।
2. शब्द वर्णों के समूह से बनते हैं।
3. शब्द से एक सार्थक अर्थ की अभिव्यक्ति होती है।
4. केवल अर्थवान् और सार्थक इकाईयाँ ही शब्द कहलाती हैं।

शब्द के भेद

1. उत्पति की दृष्टि से शब्द–भेद – i – तत्सम शब्द ii – तद्भव शब्द iii – देशज शब्द

iv- विदेशी शब्द

i. तत्सम शब्द : इसका शाब्दिक अर्थ है 'उसके समान'। यह तत् + सम दो शब्दों से मिलकर बना है। तत् का अर्थ है 'उसके' और सम का अर्थ है 'समान'। इस प्रकार तत्सम का अर्थ हुआ 'उसके समान'। संस्कृत के जो शब्द अपना रूप परिवर्तित किए बिना हिन्दी में आ गए हैं, वे तत्सम शब्द कहलाते हैं।

दूसरें शब्दों में – तत्सम यानी वे शब्द जो संस्कृत भाषा से हिन्दी भाशा में बिना किसी बदलाव (मूल रूप) के ले लिए गए हैं, तत्सम शब्द कहलाते हैं।

सरल शब्दों में – हिन्दी में संस्कृत के मूल शब्दों को 'तत्सम' शब्द कहते हैं जैसे – कवि, पुस्तक, पुष्प, क्षेत्र, कर्म, चर्म, कर्ण, हस्त, सर्प, मृत्यु आदि।

ii. तद्भव शब्द : वे शब्द जिनका मूल तो संस्कृत में है; किन्तु मध्ययुगीन भाषाओं में परिवर्तित स्वरूप में प्रयुक्त होते हुए आज की हिन्दी में भी प्रयुक्त होने लगे हैं, वे 'तद्भव' शब्द कहलाते है।

दूसरे शब्दों में – तद्भव यानि वे शब्द जो संस्कृत भाषा से थोड़े बदलाव के साथ हिन्दी में आए हैं : वे तद्भव शब्द कहलाते हैं। ये शब्द संस्कृत से सीधे न आकर पालि, प्राकृत और अपभ्रंश से होते हुए हिन्दी में आये हैं। इसके लिए इन्हें एक लम्बी यात्रा तय करनी पड़ी है। सभी तद्भव शब्द संस्कृत से आये हैं, परन्तु कुछ देश काल के प्रभाव से ऐसे विकृत हो गये हैं कि उनके मूल रूप का पता नहीं चलता।

सरल शब्दों में : हिन्दी में संस्कृत के बिगड़े हुए रूप को तद्भव शब्द कहते हैं जैसे काम, कान, साँप, हाथ, माथा, अँगुठा, धीरज आदि।

iii. देशज शब्द : देशज अर्थात देश में जन्मा। जो शब्द परिस्थितिवश क्षेत्रीय प्रभाव से आवश्यकतानुसार बन कर हिन्दी भाषा में प्रचलित हो गए हैं 'देशज शब्द' कहलाते हैं।

दूसरे शब्दों में : जो शब्द देश की विभिन्न भाषाओं से हिन्दी में अपना लिये गये हैं, उन्हें देशज शब्द कहते हैं।

सरल शब्दों में : देश की बोलचाल में पाये जाने वाले शब्द 'देशज शब्द' कहलाते हैं। जैसे – कपास, कटोरा, खिड़की, चूड़ी, दाल, डिबिया, पगड़ी, रोटी, लकड़ी, तेंदुआ, खिचड़ी, ठुमरी, ठेठ, लोटा, चिड़िया आदि।

देशज वे शब्द हैं, जिनकी व्युत्पत्ति का पता नहीं चलता। ये अपने ही देश में बोलचाल से बने हैं, इसलिए इन्हें देशज शब्द कहते हैं।

iv. विदेशी शब्द : विदेशी जातियों के सम्पर्क में आने से उनके अनेक शब्द हिन्दी भाषा में प्रयुक्त होने लगे हैं, उन्हें 'विदेशी शब्द' कहते हैं।

सरल शब्दों में : जो शब्द विदेशी भाषाओं से हिन्दी में आ गये हैं, उन्हें विदेशी शब्द कहते हैं।

आजकल हिन्दी भाषा में अनेक विदेशी शब्दों का प्रयोग किया जाता है। जैसे –

(i) अंग्रेजी भाषा से – अंकल, एजेंसी, डॉक्टर, पेन, कार, ट्रेन, स्कूल, सूट, लाटरी, रेडियो, राशन, नम्बर, कम्पनी, बम, डायरी, बैंच, स्टेशन आदि।

(ii) फारसी भाषा से – अफ़सोस, अनार, आदमी, आतिशी, कफ़, कसीदा, काश, कारतूस, कारवां, कारिंदा, कारोबार, कारीगर, खान, गरदन, चमन, चरबी, चादर, चापलूस, जबान, जिंदा, जिगरा, दीवानी, दीवार, नालायकी, शेर, शादी आदि।

(iii) अरबी भाषा से – अमीर, आदालत, ऐब, कदम, कलई, कत्ल, कसाई, कलम, कसूर, काजी, कानून, किताब, किस्सा, कुरान, खजाना, खत, गरीब, जवाहर, तहसील, तहसीलदार, नजर, फकीर, मीनार, वकील, वसीयत आदि।

(iv) पुर्तगाली भाषा में – अलमारी, अचार, आलपीन, आलू, कमीज, कॉपी, गमला, गोभी, गोदाम, चाबी, तौलिया, तम्बाकू, नीलाम, पलटन, पीपा, पादरी, फीता, फालतू, बाल्टी, साबुन, मिस्त्री, तिजौरी आदि।

(v) तुर्की भाषा से – आका, उर्दू, उजबक, कलगी, कैंची, कुली, खाना, गलीचा, चकमक, तोप, तमगा, बीवी, बेगम, बहादुर, लाश, मशालची आदि।

(vi) फ्रांसीसी भाषा से – कर्फ्यू, कार्टून, इंजीनियर, इंजन, बिगुल, पुलिस आदि।

(vii) युनानी भाषा से – टेलीफोन, टेलीग्राम, डेल्टा, ऐटम आदि।

(viii) चीनी भाषा से – चाय, लीची, पटाखा, तुफान आदि।

(ix) जापानी भाषा से – रिक्शा आदि।

अभ्यास – प्रश्न

1. शब्द की परिभाषा बताते हुए उसकी विशेशताएं लिखिए?

2. उत्पति की दृष्टि से शब्द के कितने भेद हैं उदाहरण सहित लिखिए ?

3. तत्सम और तद्भव शब्द में अंतर स्पष्ट कीजिए।

4. देशी शब्द किसे कहते हैं, कोई पांच उदाहरण दीजिए।

5. विदेशी शब्द किसे कहते हैं?

6. अलमारी, अचार, आलू, कापी, गोभी, गोदाम, चाबी, साबुन किस भाषा के शब्द हैं?

7. फारसी भाषा के कोई दस शब्द लिखिए।

2. अनेकार्थी शब्द (Word with various meanings)

परिभाषा :– जिन शब्दों के प्रसंगानुसार अनेक अर्थ होते हैं, वे अनेकार्थी शब्द कहलाते हैं।

दूसरे शब्दों में – जिन शब्दों के एक से अधिक अर्थ होते हैं, उन्हें अनेकार्थी शब्द कहते हैं।

भाषा में कुछ ऐसे शब्दों का प्रयोग होता है, जो अनेकार्थी होते हैं। खासकर यमक और श्लेश अलंकारों में इनके अधिकाधिक प्रयोग देखे जाते हैं। नीचे लिखे उदाहरणों को देखें :–

"रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून
पानी गए न ऊबरे, मोती मानुश, चुन।" (रहीम)

"करका मनका डारि दै मन का मनका फेर" (कबीर दास)

उपर्युक्त उदाहरणों में प्रयुक्त शब्दों के अर्थ देखें :–

पानी – यमक (मोती के लिए)

पानी – इज्जत (मानव के लिए)

पानी – जल (चूना, आटे के लिए

मनका – मालाा के दाने

मन – चित्त का

अब हम यहां कुछ अनेकार्थी शब्द देंगे, जो निम्नलिखित इस प्रकार से हैं :–

1. अक्ष – आँख, आत्मा, सर्प, धुरी, रथ, सूर्य, ज्ञान
2. अर्थ – प्रयोजन, धन, हेतु, ऐश्वर्य।
3. अग्र – आगे, पहले, मुख्य, सिरा, श्रेष्ठ
4. अंक – नाटक के अंक, गिणती के अंक, भाग्य, चिह्न

5. आराम – रोग दूर होना, विश्राम, बाग

6. आत्मा – अग्नि, सूर्य, परमात्मा, ब्रह्मस्वरूप

7. अम्बर – आकाश, नभ, वस्त्र, आसमान, गगन

8. अर्क – काढ़ा, अकौआ, इन्द्र, सूर्य

9. अक्षर – वर्ण, शिव, मोक्ष, धर्म, अविनाशी, जल, सत्य

10. अमृत – पारा, दूध, स्वर्ण, जल, अन्न

11. ईश्वर – परमात्मा, स्वामी, भगवान

12. इन्द्र – श्रेष्ठ, बड़ा, देवताओं का राजा

13. कल – अस्फुट, मधुर, ध्वनि, सुन्दर, आराम, मशीन

14. कर – हाथ, टैक्स, किरण, हाथी की सूंड

15. काल – मृत्यु, आकाल, यमराज, समय

16. कक्ष – कमरा, कांख, बंगला, भूमि, श्रेणी

17. कर्ण – कान, त्रिभुज में समकोण के सामने की भुजा, कुंतीपुत्र

18. गति – मोक्ष, हाल, चाल, दशा

19. गण – समूह, श्रेणी, सेना का एक भाग, दूत, अनुचर

20. गुरू – भारी, वृहस्पति, शिक्षक, दो मात्राओं वाला वर्ण

21. गुण – स्वभाव, धनुश की डोरी, रस्सी, कौशल, शील, सत्

22. गौ – किरण, पृथ्वी, स्वर्ग, दिशा, भूमि, कण, वज्र

23. घन – भारी, घना, बादल, हथौड़ा

24. घट – मन, देह, घड़ा, हृदय, कम

25. घड़ी – समय बताने वाला यंत्र, 24 मिनट का समय, क्षण

26. चरण – पैर, छन्द का एक पाद

27. चपला – लक्ष्मी, बिजली, चंचल, स्त्री

28. चन्द्र – चन्द्रमा, सोना, कपूर, मोर पंख की चन्द्रिका

29. चर – चलने वाला, खंजन पक्षी, दूत, जासूस

30. झाड़ – पौधों का झुरमुट, गुच्छा, डाँट फटकार

31. झँझरी – झरोखा, जाली, छाननी

32. तनु – शरीर, कृश, छोटा।

33. तत्व – ब्रह्म, यर्थाथ, मूल, पंचभूत, सार

34. तात – भाई, पिता, बड़ा, पूज्य, प्यारा, मित्र, ग्राम

35. तारा – बाली की पत्नी, नक्षत्र, देवी विशष, आँख की पुतली

36. तीर – नदी का किनारा, बाण

37. ताल – ताड़ का वृक्ष, स्वरताल, जलाशय

38. दल – समूह, सेना, पत्ता, हिस्सा, चिड़ी, पक्ष

39. दक्ष – चतुर, ब्रह्मा, वैश्य, क्षत्रिय, चन्द, दान्त, पक्षी,

40. दण्ड – डंडा, सजा

41. दिनेश – आधार, समीप, आदेश, पात्र, अनुमति, कथा

42. धन – जोड़ा, सम्पत्ति

43. धात्री – माता, पृथ्वी, उपमाता, आवँला

44. नग – पर्वत, वृक्ष, अदद, नगीना

45. नाग – हाथी, सर्प, नाग–केशर

46. नाक – इज्जत, नासिका, स्वर्ग

47. निशचर – राक्षस, उल्लू

48. पय – अमृत, जल, दूध

49. पयोधर – गन्ना, पर्वत, बादल, स्तन

50. पद – चिह्न, ओहदा, छन्द चरण, गीत, शब्द, स्थान

51. पतंग – पैर, पक्षी, सूर्य, गुड्डी

52. प्रत्यय – शब्दांश जो शब्दों के बाद लगता है, ज्ञान, विश्वास

53. पटरी – काठ का छोटा पटरा, लिखने की तख़्ती, पैदल पथ

54. पक्ष – पंख, ओर, पन्द्रह दिन का समय, बल

55. पत्र – पंख, चिट्ठी, पत्ता

56. पृश्ठ – पीठ, पीछे का भाग, पन्ना

57. पानी – कान्ति, जल, इज्जत

58. पूर्व – पहले, पूर्व दिशा

59. पोत – नौका, वस्त्र, स्वभाव, बच्चा, गुड़िया

60. फल – भाले की नोक,चार पदार्थ (अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष)

61. फूटना – छेद होना, प्रकट होना, अलग हो जाना, बिगाड़ना

62. बल – सेना, बलराम, शक्ति

63. बलि – बलिदान, राजा बलि, उपहार

64. बाल – केश, बालक, बाला

65. बारी – कन्या, नवयुवती, घर, छोटी उम्र की, एक जाति

66. भव – कुशल, महादेव, जन्म

67. भुवन – लोक, जल

68. भारत – अर्जुन, भारतवर्ष, तुमुल, युद्ध

69. भास्कर – सूर्य, अग्नि, सोना, शिव

70. भूत – प्रेत, प्राणी, अतीतकाल, पंचभूत, मृतदेह

71. मधु – शहद, मदीरा, बसन्तऋतु, चैत का मास, एक दैत्य

72. मित्र – दोस्त, सूर्य, सहयोगी, प्रिय

73. मान – अभिमान, सम्मान, इज्ज़त, नाप–तोल, रूठना

74. माँग – स्त्रियों की माँग, किसी वस्तु की माँग

75. रस – नवरस, षट्रस, सार, आनन्द, स्वाद, अर्क, प्रेम

76. राग – संगीत का ध्वनि, प्रेम, लाल रंग

77. राशि – समूह, मेघ, वृषभ, कर्क, कुंभ आदि राशियाँ

78. रास – विशेष, नृत्य, लगाम

79. रक्त – खून, लाल

80. लक्ष – सौ हजार की संख्या, उद्देश्य, निशान

81. लाल – एक छोटी चिड़िया, प्यार का सम्बोधन

82. वर – वरदान, दूल्हा, श्रेष्ठ

83. वर्ण – रंग, अक्षर, वैश्य आदि जातियाँ

84. विग्रह – देह, लड़ाई

85. सर – तालाब, बाण, चिता

86. सुधा – अमृत, दूध, जल, गंगा, अर्क, पुष्परस

87. सुर – देव, स्वर, ताल

88. शिव – वेद, मंगल, भाग्यशाली, महादेव

89. हार – माला, पराजय

90. क्षेत्र – खेत, तीर्थ, सदाव्रत बाँटने का स्थान, शरीर

प्रश्न–अभ्यास

1. अनेकार्थी शब्दों की परिभाषा बताएँ?

2. कौन–कौन से अलंकारों में अनेकार्थी शब्दों का अधिकतर प्रयोग होता है?

3. निम्नलिखित अनेकार्थी शब्दों के दो–दो अर्थ बताएँ :–

उग्र, आराम, आत्मा, ईश्वर, काल, गुरू

4. चन्द्र, तीर, धन, नाग, पत्र, पद, मधु, राग, रस, लाल, हार, अनेकार्थी शब्दों के दो–दो अर्थ बताएँ?

3. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द (One word substitution)

भूमिका – भाषा की सुदृढ़ता, भावों की गम्भीरता और चुस्त शैली के लिए यह आवश्यक है कि लेखक शब्दों के प्रयोग में संयम से काम ले, ताकि वह विस्तृत विचारों या भावों को थोड़े–से–थोड़े शब्दों में व्यक्त कर सके। समास, तद्धित और कृदन्त वाक्यांश या वाक्य एक शब्द या पद के रूप में संक्षिप्त किये जा सकते हैं। ऐसी हालत में मूल वाक्यांश या वाक्य के शब्दों के अनुसार ही एक शब्द या पद का निर्माण होना चाहिए। भाषा में कई शब्दों के स्थान पर एक शब्द बोल कर हम भाषा को प्रभावशाली एवं आकर्षक बनाते हैं। जैसे – राम कविता लिखता है, अनेक शब्दों के स्थान पर हम एक ही शब्द 'कवि' का प्रयोग करते हैं।

दूसरा उदाहरण – "जिस स्त्री का पति मर चुका हो' शब्द–समूह के स्थान पर 'विधवा' शब्द अच्छा लगेगा।

इस प्रकार अनेक शब्दों के स्थान पर एक शब्द का प्रयोग कर सकते हैं। नीचे अनेक शब्दों के लिए एक शब्द के कुछ उदाहरण दिए जा रहे हैं :–

1. जो सबके अन्तःकरण की बात जानने वाला हो। – अन्तर्यामी
2. जो पहले कभी न हुआ हो। – अभूतपूर्व
3. जो शोक करने योग्य न हो। – अशोक

4.	जो ईश्वर को मानता हो।	–	आस्तिक
5.	जो आदर करने योग्य हो।	–	आदरणीय
6.	जिसकी धर्म में निष्ठा हो।	–	धर्मनिष्ठ
7.	जिसकी भगवान के प्रति आस्था न हो।	–	नास्तिक
8.	जिसकी पत्नी मर चुकी हो।	–	विधुर
9.	जिसका पति जीवित हो।	–	सधवा
10.	जिसका पति मर चुका हो।	–	विधवा
11.	जिसका हृदय विशाल हो।	–	विशाल हृदय
12.	जिसका भाग्य अच्छा न हो।	–	भाग्यहीन
13.	जिसका कोई आधार न हो।	–	निराधार
14.	जिसका कोई उद्देश्य न हो।	–	निरुद्देश्य
15.	जिसका आदि न हो।	–	अपसउि
16.	जिसका अन्त न हो।	–	अनादि
17.	जिसका पार न पाया जाए।	–	अपार
18.	जिसने ऋण चुका दिया हो।	–	उऋण
19.	जिसके नाम का पता न हो	–	अज्ञातनामा
20.	जो ऊपर कहा गया है।	–	उपर्युक्त
21.	आशा से अधिक।	–	आशातीत
22.	जिसके आने की तिथि निश्चित न हो।	–	अतिथि
23.	जिसका कोई शत्रु न हो।	–	अजातशत्रु
24.	जिसका कोई आधार न हो।	–	निराधार
25.	जिसके हाथ मे चक्र हो	–	चक्रपाणि

26.	जिसमें जानने की इच्छा हो।	–	जिज्ञासु
27.	जिसको भेदना मुश्किल हो।	–	दुर्भेद्य
28.	जिसे प्रतिष्ठा प्राप्त हो।	–	लब्ध–प्रतिष्ठ
29.	जिसमें धैर्य न हो।	–	अधीर
30.	जिसमें दया न हो।	–	निर्दय
31.	जो सदा रहे।	–	अमर
32.	जो छोटा भाई हो।	–	अनुज
33.	जो बड़ा भाई हो।	–	अग्रज
34.	जो कम व्यय करता हो।	–	अल्पव्ययी
35.	जो पहले न पढ़ा हो।	–	अपठित
36.	जो सहन न किया जा सके।	–	अगोचर
37.	जो बिना देह का हो।	–	अनंग
38.	जो नियम के अनुसार न हो।	–	अनियमित
39.	जो कुछ न करता हो।	–	अकर्मण्य
40.	जो इतिहास लिखता हो।	–	इतिहासकार
41.	जो दूसरों से ईर्ष्या रखता हो।	–	ईष्यालु
42.	जो कड़वा बोलता हो।	–	कटुभाषी
43.	जो जन्म से अन्धा हो।	–	जन्मांध
44.	जो देखने योग्य हो।	–	दर्शनीय
45.	जो किसी से न डरे।	–	निर्भय
46.	जो दूसरे के सहारे जीता हो।	–	परोपजीवी
47.	जो किसी विषय का पूर्ण विद्वान हो।	–	पारंगत

48.	जो बहुत बोलता हो।	–	वाचाल
49.	जो संकट से घिरा हो।	–	संकटग्रस्त
50.	जो साथ पढ़ता हो।	–	सहपाठी
51.	जो स्वयं पैदा हुआ हो।	–	स्वयंभू
52.	जहाँ रेत ही रेत हो।	–	मरुभूमि
53.	हिंसा करने वाला।	–	हिंसक
54.	सब कुछ जानने वाला।	–	सर्वज्ञ
55.	जहाँ तक हो सके।	–	यथाशक्ति
56.	जो हर स्थान पर विद्यमान हो।	–	सर्वव्यापी
57.	परिवार के साथ।	–	सपत्नीक
58.	सगा भाई।	–	सहोदर
59.	एक ही समय में होने वाला।	–	समकालीन
60.	एक ही जाति के लोग।	–	सजातीय
61.	स्मरण कराने वाला।	–	स्मारक
62.	स्मरण रखने वाला।	–	स्मरणीय
63.	सदा रहने वाला।	–	स्थायी
64.	घोड़े पर सवार।	–	अश्वारोही
65.	किसी चीज की खोज करने वाला।	–	अन्वेशक
66.	मन में होने वाला ज्ञान।	–	अन्तर्ज्ञान
67.	कम जानने वाला।	–	अल्पज्ञ
68.	बिना वेतन के काम करने वाला।	–	अवैतनिक
69.	किसी वस्तु को बढ़ा–चढ़ा कर बताना।	–	अतिश्योक्ति

70.	ईश्वर में विश्वास रखने वाला।	–	आस्तिक
71.	आकाश में घूमने वाला।	–	आकाशचारी
72.	ऊपर लिखा गया।	–	उपरलिखित
73.	तेज़ बुद्धिवाला।	–	कुशाग्र
74.	बुरी राह पर चलने वाला।	–	कुमार्गी
75.	पलभर रहने वाला।	–	क्षणिक
76.	गाँव में रहने वाला।	–	ग्रामीण
77.	देश में घूमना।	–	देशाटन
78.	आगे की सोचने वाला।	–	दूरदर्शी
79.	प्रतिदिन होने वाला।	–	दैनिक
80.	नष्ट होने वाला।	–	नश्वर
81.	बिना शुल्क के।	–	निशुल्क
82.	निरीक्षण करने वाला।	–	निरीक्षक
83.	प्रिय बोलने वाली स्त्री	–	प्रियम्वदा
84.	आँख के सामने।	–	प्रत्यक्ष
85.	कम खाने वाला व्यक्ति।	–	मिताहारी
86.	मास में एक बार होने वाला।	–	मासिक
87.	माँस खाने वाला।	–	माँसाहारी
88.	अत्यन्त सुन्दर स्त्री।	–	रूपसी
89.	विष्णु को मानने वाला।	–	वैष्णव
90.	किसी उक्ति को पुनः कहना।	–	पुनरुक्ति
91.	युग का निर्माण करने वाला।	–	युगनिर्माता

92. पत्तों की बनी हुई कुटिया। – पर्णकुटीर

93. वह बात जो अपने ऊपर बीती हो। – आपबीती

94. जो आसानी से प्राप्त हो। – सुलभ

95. जो पुत्र गोद लिया हो। – दत्तक

प्रश्न–अभ्यास

1. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द का अर्थ स्पष्ट करें।

2. जो ईश्वर को मानता हो और जिसकी धर्म में निष्ठा हो उसे क्या कहते हैं?

3. निम्नलिखित अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखिए :–

   i) जिसका कोई शत्रु न हो।

   ii) जिसके हाथ में चक्र हो।

   iii) प्रतिदिन होने वाला।

   iv) माँस खाने वाला।

   v) जिसका पति मर चुका हो।